क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव

(देव परिचय, क्षेत्रीय जीवन शैली एवं परंपराएं)

अपने विषय पर पहली बार

श्री बीजेश्वर महादेव मन्दिर, देवथल

प्रस्तुति : आ० डा० लेखराम शर्मा

क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव

(देव परिचय, क्षेत्रीय जीवन शैली एवं परंपराएं)

आ० डा० लेखराम शर्मा

शिरीष प्रकाशन
गांव-धाला, डा. देवठी (सपरून)
तह० व जिला सोलन (हि०प्र०)
पिन-173211

मूल्य : मात्र साठ रुपए

'सुख-संपत्तिप्रद दिनचर्या'

1. पानी से भरा ढका लोटा समीप में रखकर रात को नौ बजे सो जाएं।

2. नींद खुलते ही तुरंत बिस्तर छोड़कर पानी पीएं।

3. शौचादि सफाई के बाद शांत-चित्त से प्रणवोच्चारण-ध्यानपूर्वक सरलता से साध्य प्रणायाम और आसन करके अपने जीवन को लचीला बनाएं।

4. कवोष्ण जल से स्नान के बाद गायत्री संध्या (परमात्म ध्यान) करें।

5. अग्निपूजा के बाद गाय को राटी देकर स्वयं भोजन करें।

6. थोड़ी मात्रा में सत्व (भगवदर्थ कर्म भावना) को बढ़ाने वाला सादा भोजन करें।

7. केवल स्वाभाविक और रूचिकर कार्य करें, इससे न थकान होती है न स्वास्थ्य बिगड़ता है।

8. सभा या समाज में केवल उसी मुद्दे का साथ दें जो सर्वजनहिताय या बहुजनहिताय हो।

9. जहां हमारे परिश्रम, सच्चाई, ईमानदारी और परोपकार का अपमान हो वहां से विनम्रतापूर्वक दूर हो जाने में ही हित है।

10. सायं पैर धोकर भगवान् के समक्ष दीप और आरती करें।

"विनम्र समर्पण"

माँ गायत्री, क्षेत्रपति बीजेश्वर

तथा

चेतनाचेतन उन समस्त जीवों को,
जिनकी अंशमात्र भी प्रेरणा और सहयोग
इस रचना में समाविष्ट है।
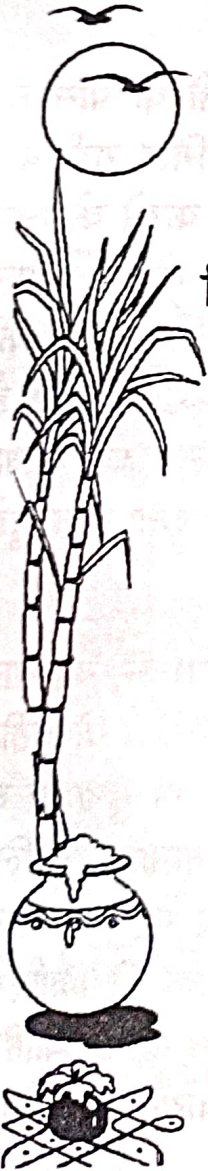
लेखराम शर्मा

अक्षय तृतीया, संवत् 2067

(16 – 05 – 2010)

कृपालु ईश्वर जीवों की सेवा स्वयं करते हैं, परन्तु निमित्त हमें बनाते हैं।

सम्मान्य पुस्तक प्रेमी सज्जनों से

देवेच्छा ही कही जा सकती है कि देवता बीजेश्वर का प्रथ प्रकाशन मेरे हाथों ही सामने आना था, इसके बावजूद कि मैं बीजेश्वर के बारे आवश्यक जानकारी से प्रायः अत्यल्पज्ञ हूं। काफी वर्षों पहले एक स्थानीय बुजु ने इस पीड़ा को महसूस किया था, मैं भी इससे मुक्त न रह सका। सन् 200 में अपनी सेवानिवृत्ति के बाद मैंने अनेक लोगों से इस बारे में जानकारी हे निवेदन किया तो पुजारी श्री मनीराम जी, समिति के सचिव गणेश दत्त जी औ मास्टर टेकचंद जी आदि विज्ञजनों से पर्याप्त जानकारी मिली।

विशेष तौर पर देवमहिमाविद श्री गणेश दत्त जी के पास तो श्री शिवसिंह चौहान द्वारा टाईप करवाई गई सामग्री एकत्र ही मिल गई थी। उपरोक्त सज्जनों का मेरे लिए प्रकाशनार्थ एक व्यापक मंच प्रदान करने के लिए मैं उनका हृदय से अतीव कृतज्ञ हूं। कुल मिलाकर पुस्तक में मेरा योगदान दाल में नमक के बराबर है। पुस्तक को समुचित आकार देने के लिए मैंने देवक्षेत्र की उपयोगी जीवनशैली, परंपराएं और अपने निजी अनुभव भी साथ जोड़ दिए हैं ताकि पुस्तक प्रेमियों को कुछ नया प्रकाश में लाने की प्रेरणा मिल सके। आशा है पाठक इसे पसंद करेंगे तथा पुस्तक में रह गई कमियों को उदारतापूर्वक मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे।

मैं लेखन का व्यसनी अवश्य हूं परन्तु लेखक नहीं। हाँ, नई बात को नोट करने और कुछ न कुछ छपवाने का क्रम कभी टूटा भी नहीं। दो महीने पहले जब मेरी पूज्या माता जी ने कहा कि कुछ अपना लिखा मुझे भी सुना दो तो इस पुस्तक के लिए एक प्रेरणा ही मिल गई। प्रस्तुत विषय सर्वजनसामान्य के लिए चुना गया है। वास्तव में पुस्तक रूप ऋषिका को अपने ही पांव पर खड़े होना चाहिए। इसके पांव कितने मजबूत बन पाए हैं यह सम्मान्य पाठक ही दर्शाएंगे। मेरी दृष्टि में प्रकाशनार्थ पुस्तकों की संख्या खपत पर आधारित होनी चाहिए, अधिकता पर्यावरण पर वृथा भार स्वरूप ही होगी। अतः प्रथम संस्करण अल्प मात्रा में ही छपवा रहा हूँ।

किसी भी कृति का स्रोत प्रेरणा होती है

मैं इस पुस्तक में प्रस्तुत विचारों में सहयोग और शुभकामनाओं के लिए अपनी धर्मपत्नी श्रीमती उषा देवी, अपने सम्मान्य गुरुजनों, विद्वज्जनों, लेखकों, प्रेमियों और भाई-बन्धुओं का गहनता से कृतज्ञ हूं। प्रस्तुत अनुभवों के सार में से तनिक भी कुछ किसी के काम आ सका तो कृतार्थ हो सकूंगा।

— लेखक
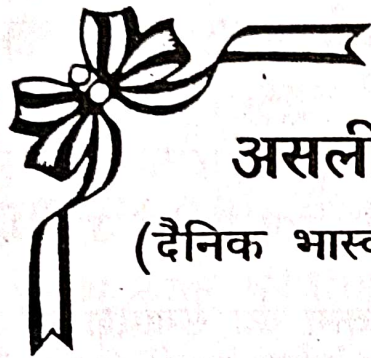
असली खुशी
(दैनिक भास्कर से साभार)
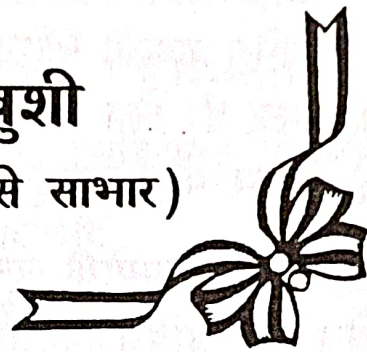
अगर आपको यह लगता है कि कोई सिर्फ इसलिए दुनिया का सबसे खुशहाल व्यक्ति है क्योंकि उसके पास अथाह धन है तो आप गलत सोचते हैं। ब्रिटेन में एक लाख तीस हजार लोगों पर किए गए एक नए शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि धन से मनुष्य दुनियावी और भौतिक सुख-सुविधाएं तो खरीद सकता है, लेकिन इसका उसकी आत्मिक खुशी से कोई लेना-देना नहीं है।

आशीर्वचन

डॉ. लेखराम शर्मा द्वारा लिखित 'क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव' पुस्तक देखकर हर्ष हुआ। इसमें श्री बीजेश्वर देव का सुन्दर परिचय तो दिया ही गया है, साथ ही क्षेत्र की लोक संस्कृति के भी अनेक अंगों, उपांगों का भी हृदयस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया गया है। 'शिरीष-सौन्दर्यकाव्यम्' अनुवाद सहित लिखकर तो इन्होंने न केवल अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है, अपितु गायत्री महिमा जैसे बहुमूल्य विषयों पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। क्षेत्र में प्रचलित पूजन परम्परा श्रद्धालु समाज और इस विषय के जिज्ञासुजनों के लिए विशेष उपयोगी है।

सर्वजन उपयोगी सन्ध्या कर्म का समावेश भी पुस्तक को समृद्ध करता है। क्षेत्र की प्रथित कतिपय लोक परम्पराएं भी यथाप्रचलित रूप में उल्लिखित हैं। जीवनोपयोगी औषधियों तथा दिनचर्या के तत्त्वों का भी सुन्दर विवरण है।

लेखक की लोकोपकारक एवं लोकमंगल की दृष्टि विशेष प्रशंसनीय है। जनसाधारण के जिज्ञासित विषयों पर श्रमपूर्वक अभीष्ट जानकारी एकत्र कर, गहरी लगन से लिखने वाले विरले ही होते हैं। डॉ. लेखराम ऐसे ही लेखक हैं।

लोक संस्कृति के लिए लेखक की यह देन निःसन्देह महत्त्वपूर्ण होगी तथा विशेषकर इस दिशा में लेखन चिन्तन के लिए अन्य साहित्यकर्मी वर्ग को प्रेरित करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं इस कृति के प्रचार-प्रसार की कामना करता हूँ।

प्रो. केशव शर्मा
दर्शनाचार्य, एस. ए., एम फिल,
(प्राप्तस्वर्णपदकद्वय, तीनों नए रिकार्ड सहित)
''दिव्यदीप'' टैंक रोड, सोलन-173212

आदरणीय विद्वानों का आशीर्वाद ही रचना का प्राणतत्त्व होता है।

प्राक्कथन

साहित्य शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य मम्मट ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ काव्य प्रकाश के मंगलाचरण में विभिन्न प्रमाणों से सिद्ध किया है कि लेखक, कवि का रचना-संसार प्रजापति ब्रह्मा की रचना से भी सर्वोपरि होता है। इसीलिए रचनाकार को प्रजापति, मनीषी, स्वयंभू तथा परिभू संज्ञाओं से भी शास्त्रों में अभिहित किया गया है। आचार्य मम्मट का कथन उद्धरणीय है :

नियतिकृत नियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।

नव रसरूचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।।

अग्निपुराणकार कवि-लेखक की मानसिकता से सुपरिचित है-

अपारे काव्य संसारे कविरेक: प्रजापति:

यथास्मै रोचते विश्वं तथैवं परिवर्तते।।

शृङ्गारी चेत्कवि: काव्ये जातं रसमयं जगत्।

स एव वीतरागश्चेन्नीरसं सर्वमेव तत्।।

कवि-लेखक अपने परिवेश में घटित घटनाओं, अपेक्षाओं-उपेक्षाओं, वर्जनाओं का जो भी यथार्थ देखता है, अनुभव करता है उसके भीतर आसीन सहृदय उसे लिखने के लिए विवश कर देता है और फिर समाज सापेक्ष रचना का अवतरण होता है जो कि चिरजीवी होता है। लेखक-कवि डॉ. लेखराम शर्मा से मेरा परिचय विगत तीन दशक से है। दर्शन शास्त्र के आचार्य डॉ. शर्मा बहुआयामी प्रतिभा के स्वामी हैं। संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त, चिकित्सा, बागवानी, होम्योपैथी, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा विभिन्न विषयों पर इनका विशेष अध्ययन है। डॉ. शर्मा का कार्यकाल प्राध्यापक एवं प्राचार्य का रहा है। मैंने इन्हें सतत् पढ़ते और लिखते देखा है। इनकी सतत् अध्ययनशीलता तथा लेखकीय कौशल का ही परिणाम है कि इनकी पंचम कृति 'क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव' पाठकों के समक्ष है। कुछ न कुछ लिखना इनकी नियति है उसका

******

मूल्यांकन साहित्य मर्मज्ञों, समीक्षकों, पाठकों पर छोड़ देते हैं। 'शिरीष सौंदर्यकाव्यम्' सानुवाद 127 पद्यों का अनुष्टुप् वृत्त में लिखित अनुपम प्रयास है। लेखकीय धर्म भी होता है कि अपने समीपवर्ती स्थानीय आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय विभिन्न पक्षों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। मैंने इनकी पूर्व प्रकाशित रचनाओं की तरह प्रस्तुत रचना को भी आद्योपान्त पढ़ा है। समग्र अध्ययन के पश्चात मैं यह निःसंकोच कह सकता हूँ कि डॉ. लेखराम शर्मा सच्चरित्, स्पष्टवादी, मृदुभाषी, सहृदय व्यक्तित्व के धनी तो हैं ही, इनके अतिरिक्त प्रतिपाद्य बिन्दुओं का भावपक्षीय चित्रण अवलोकनीय है। लगभग चार दशकों तक संस्कृत की सेवा के पश्चात् सेवानिवृत्ति काल के साहित्य साधना, तत्पश्चात् रचनाओं का प्रकाशन जैसा कष्टसाध्य कार्य सहज भाव में सम्पादन करना इनकी सारस्वत सेवा का ही सुपरिणाम है।

मैं अपने वरिष्ठ आदरणीय बन्धु की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ तथा मां वीणा वादिनी से प्रार्थना करता हूँ कि डॉ. लेखराम शर्मा सतत् अपनी साहित्य साधना में स्वस्थचित्त संरत रहते अपनी श्रेष्ठ रचनाएं समाज को इसी भान्ति समर्पित करते रहें। मैं हृदय की गहराइयों से लेखक को वर्धापन देता हूँ तथा आशा रखता हूँ कि पाठक इस कृति से लाभान्वित होंगे।

डॉ. प्रेमलाल गौतम
प्राचार्य,
राजकीय संस्कृत महाविद्यालय सोलन

******

विषय सूची

विषय सूची पुस्तकरूप सजीव ऋषि के अंग – प्रत्यंगों का विवरण है।

श्री बीजेश्वर महादेव की स्तुति

तरीतुम् संसृतिसिंधुं त्रिजगतां
नौर्नाम यस्य प्रभोः,
येनेदं सकलं विभाति सततं
जातं स्थितं देवस्थलम्।
यः चैतन्य धन प्रमाणविधुरः
वेदान्तवेद्यो बिजू,
वंदे तं सहजप्रकाशममलं
बीजेश्वरं तं भजे।।

जिसका नाम तीनों लोकों में संसार सागर को पार करने के लिए नावस्वरूप है, देवस्थल में स्थित जिसके प्रकाश से यह सारा संसार प्रकाशित है, जो वेदान्त शास्त्र के द्वारा जानने योग्य बिजू नाम से प्रमाणों से परे चैतन्यस्वरूप है, उस सहज व निर्मल प्रकाशयुक्त भगवान् बीजेश्वर को मैं प्रणाम करता हूँ।

(यह श्लोक सरजाई पं. सुरेश जी से प्राप्त हुआ है।)
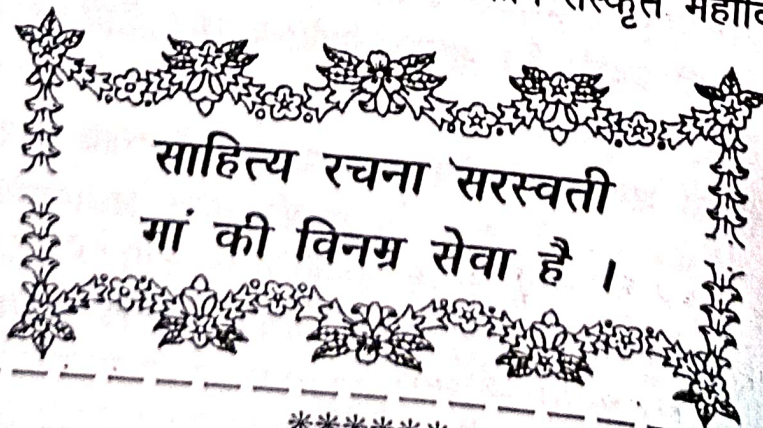
देव बीजेश्वर मन्दिर निर्माण एवं प्रबंधन समिति

-: एक परिचय :-

क्र.	पद	नाम	गांव
1.	अध्यक्ष	ठाकुर श्री किरपा राम	कोठों
2.	उपाध्यक्ष	श्री बहादुर सिंह वर्मा	कायलर
3.	महामंत्री (सचिव)	श्री गणेश दत्त शर्मा	कत्यारा
4.	मुख्य सलाहकार	श्री शिव सिंह चौहान	डमोड़ी (धर्मपुर)
5.	कोषाध्यक्ष	श्री गणेश दत्त शर्मा	तलौना
6.	संयोजक (निर्माण)	कपूर सिंह ठाकुर	नेरी
7.	संयोजक (मन्दिर)	श्री दिवाकर दत्त शर्मा	तलौना
8.	संयोजक (मन्दिर)	श्री दयानंद शर्मा	देवथल
9.	संयोजक (मन्दिर)	श्री मनीराम शर्मा	देवथल
10.	सदस्य (निर्माण)	ठाकुर सिरीराम	देलगी
11.	सदस्य (निर्माण)	श्री बेलीराम	छौसा
12.	सदस्य (निर्माण)	श्री केशव राम	धरोट
13.	सदस्य (निर्माण)	श्री शिवसिंह मेहता	क्यार
14.	सदस्य (निर्माण)	श्री ईश्वरनंद शर्मा	बरयाड़ी
15.	सदस्य (निर्माण)	श्री परशुराम भारद्वाज	शांगड़ी
16.	सदस्य (निर्माण)	श्री मेहरचंद	बजड़ोल
17.	सदस्य (निर्माण)	श्री जिंदोराम	गदों
18.	सदस्य (निर्माण)	श्री रामरत्न ठाकुर	कून
19.	सदस्य (निर्माण)	श्री रामरत्न मेहता	राहों
20.	सदस्य (निर्माण)	श्री मोहन सिंह	शावग
21.	सदस्य (निर्माण)	श्री रविदत्त	बेरटी

प्रबंधन का मतलब है सबको साथ लेकर चलना।

22.	सदस्य (निर्माण)	श्री मदन लाल मेहता	सपरून
23.	सदस्य (निर्माण)	श्री धनीराम वर्मा	बशाड
24.	सदस्य (निर्माण)	श्री जयराम ठाकुर	भैरा
25.	सदस्य (निर्माण)	श्री जगजीत सिंह गुप्ता	सपरून
26.	सदस्य (निर्माण)	श्री प्रेम सिंह वर्मा	सपरून
27.	सदस्य (निर्माण)	श्री हरिराम मेहता	कायलर
28.	सदस्य (निर्माण)	श्री रोशन लाल मेहता	ड्यारगड़ी
29.	सदस्य (निर्माण)	ठाकुर सिरीराम	हाथों
30.	(पूर्व) सदस्य (निर्माण)	श्री केवल राम मुसाफिर	कांगुटी

रूपलाल ठाकुर कमेटी के प्रधान बने

सोलन। ब्रिजेश्वर महादेव मंदिर प्रबंधक कमेटी देवथल की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें रूपलाल ठाकुर को प्रधान, श्रीराम वर्मा को उपप्रधान, भजन सिंह ठाकुर को सचिव ओमप्रकाश ठाकुर को कोषाध्यक्ष, शिव सिंह चौहान व गणेश दत्त शर्मा को मुख्य सलाहकार बनाया गया। इसके अलावा कार्यकारिणी में 30 लोगों को स्थान दिया गया है।

(नई कार्यकारिणी समिति को लेखक की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं, इस अपेक्षा के साथ कि प्रबंधन की सेवाओं के लाभ को हर देवशासित कल्याणे तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा।)

आज के संदर्भ में प्रत्येक श्रद्धालु देवता का कल्याणा है।

दर्शनीय मूर्तियां

स्थान	:	मन्दिर की ऊपर की मंजिल
बाईं ओर क्रमश	:	दो रानियां, दो बांदियां, महिषासुर मर्दिनी, चतुर्भुजी शेरांवाली, अष्टभुजी शेरांवाली
बीच में	:	बीजेश्वर महादेव
दाईं ओर क्रमश	:	टिक्का साहब, टिक्का की दो रानियां गरुड़ जी कपिल मुनि शिवपरिवार

प्रतिष्ठित मूर्ति का प्रत्येक अंग पवित्र वेदमंत्रों द्वारा चेतनाशक्ति से सम्पन्न होता है।

राजा बीजेश्वर का आगमन

महाराज बीजेश्वर द्वारा प्रशासित विशाल राज्य की सीमाओं से सहज ही कल्पना की जा सकती है कि उनका वर्चस्व कितना था एवं है। बीजेश्वर को यहां लाने के पीछे की भूमिका साफ बताती है कि यहां के लोग अत्याचाररहित प्रशासन के प्रति कितने जागरूक थे। प्राचीन हिमाचल के प्रशासनिक इतिहास एवं संस्कृति के अध्येताओं के लिए जाग्रे में गाई जाने वाली वाहिनी (देवावाहन) अतीव महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र के सांस्कृतिक अध्ययन के लिए सरल और सीधी बोली बघाटी और मधुरतापूर्ण विनम्र बोली क्योंथली को समझना आवश्यक है।

देवता के पुजारी पं. श्री मनीराम जी के अनुसार उनके पिता स्व. श्री वैकुंठराम ने उन्हें देवता के आगमन की कथा को लिपिबद्ध करने के लिए प्रेरित किया था, परन्तु वे स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण ऐसा न कर सके। उनका विश्वास है कि कोई भी शुभ कार्य तभी सम्पन्न होता है जब तदर्थ समय बलवान होता है। इस सम्बन्ध में जो भी जानकारी उन्हें अपने पूर्वजों से मिली है, यहां यथावत् प्रस्तुत की जा रही है।

राजा बीजेश्वर का पैतृक स्थान विजयवाड़ा (कश्मीर) था। इनके पूज्य पिता श्री मालदेव और माता श्रीमती वेणुका के नाम से जाने जाते थे। वंश की परंपरानुसार ये महादेव भगवान् शिव के उपासक थे। इस वंश ने अपनी वीरता के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त किए थे। कहा जाता है कि महाभारत में भी कहीं ऐसा प्रसंग आया है जिसमें गंभर नदी के साथ लगती एक पहाड़ी में एक तीर मौजूद होने की बात कही गई है। स्थानीय लोगों के अनुसार 'खण्डधार' नामक उस पहाड़ी में वह तीर आज भी देखा जा सकता है।

महाराज बीजेश्वर के इस क्षेत्र में आने से पूर्व यहां शिरगुल का शासन माना जाता रहा है, जिसने यहां की प्रजा पर भारी अत्याचार किए थे। उस संकटकाल में कोठाल वंश का कोई एक व्यक्ति (महापुरुष) विजयवाड़ा में

मालदेव के दरबार में जाकर राजा की सेवा करने लगा। कई मास इसी तरह बीत गए। एक दिन राजा ने उस व्यक्ति को उसका पारिश्रमिक देना चाहा तो उसने लेने से इनकार कर दिया। राजा ने उस व्यक्ति को प्रायः व्यथित सा महसूस किया। उसकी व्यथा का कारण पूछने पर उसने बताया कि उसका क्षेत्र (सोलन आदि) शिरगुल के भीषण अत्याचारों से त्रस्त है। राजा कारण जानकर द्रवित हो गया। उस व्यक्ति ने राजा से विनम्र प्रार्थना की कि अगर वे उसके क्षेत्र की जनता की रक्षा के लिए अपने बेटे वीर बीजेश्वर को उसके साथ भेजें तो बड़ी कृपा होगी। राजा स्वभाव से दयालु और परोपकारी स्वभाव के थे। उन्होंने टीका बीजेश्वर को बुलाकर आदेश दिया कि वह अमुक व्यक्ति के साथ जाकर अपने वीरता व पराक्रम से वहां की प्रजा में सुख और शान्ति की स्थापना करे। बीजेश्वर ने पिता की आज्ञा सहर्ष शिरोधार्य की।

कश्मीर से प्रस्थान करने पर रास्ते में आते हुए टिक्का बीजेश्वर ने पंजरवाल और कटवाल नामक दो रानियां भी अपने साथ ले ली। उन चारों ने गंभर नदी की 'पौली की तर' नामक डाभर (तालाब) में प्रवेश किया। देवथल गांव के एक ब्राह्मण पुजारी को एक अशरफी दैनिक वेतन पर देवपूजा हेतु नियुक्त किया गया। उस विचित्र डाभर में केवल पुजारी और तुरी के लिए पूजा हेतु रास्ता खुलता था। नदी के दूसरे किनारे पर लस्सी का चश्मा बहता था, साथ में सत्तू की टोकरी और चांदी का टोकरा रखा हुआ मिलता था। वहां पर कोई भी राही निःशुल्क अपनी भूख मिटा सकता था। इस व्यवस्था का नाम सदाव्रत था।

काफी समय बीतने के बाद दोनों रानियों के मालिक उन्हें ढूंढते हुए गंभर नदी में आ पहुंचे। वहां सदाव्रत को देखकर उन्हें संदेह हुआ कि रानियां यहीं कहीं आस-पास न हों। वे तालाब के अंदर जाने का रास्ता बंद देखकर अंदर जाने का तरीका खोजने लगे। तभी उन्होंने पुजारी और तुरी को अंदर जाते देखा। उन्होंने तय किया कि वे दोनों अगली सुबह पुजारी को प्रलोभन देकर अंदर प्रवेश करेंगे। अगली सुबह वे अंदर जाने में सफल हो गए। वहां जाकर देखा कि एक भव्य महल में दोनों रानियां हार-पाशा खेल रही हैं। आगंतुकों को देखकर बीजेश्वर ने भगवान् महादेव का ध्यान किया, तत्काल सारे महल में सांप ही सांप

लोटने लगे। आगंतुक इससे भयभीत होकर रानियों को मिले बगैर ही बाहर निकल आए। उसी सांय दैववश देवथल में जोर की शंखध्वनि के साथ आकाशवाणी हुई कि यहां मेरे लिए एक भव्य मन्दिर का निर्माण किया जाए।

कहा जाता है कि देवथल मन्दिर से 'पौली की तर' तक कोई गुप्त मार्ग होता था। उसी दिन से लोभी पुजारी के लिए वह रास्ता भी बंद हो गया और दैनिक अशरफी भी। वास्तव में उस पुजारी के घर में अशरफियों का भंडार जमा हो गया था और समाज में भी यह समाचार फैल गया था। कुठाड़ (कृष्णगढ़) रियासत के राजसेवक जब धननिरीक्षण हेतु वहां पहुंचे तो उन्होंने आठ खच्चरों पर वे अशरफियां लादी। खच्चरें अभी छमरोग ही पहुंची थी कि वे आगे बढ़ने में असमर्थ हो गईं। वोरियों को जब खोलकर देखा गया तो अशरफियों की जगह पत्थर निकले। इसी घटना के कारण बीजेश्वर का दूसरा स्थान छमरोग माना जाता है। इस स्थान का संवंध दोनों रियासतों कुठाड़ और पट्टा-महलोग के साथ था।

वताया जाता है कि इसके बाद बीजेश्वर ने स्थानीय राजाओं के साथ मिलकर अत्याचारी शिरगुल पर आक्रमण किया। शिरगुल ने लोहे के शस्त्रों और ओलों का प्रहार किया। वदले में बीजेश्वर ने आकाशीय बिजली गिराकर उसका मुकावला किया। माना जाता है कि आकाशीय बिजली गिराने के कारण राजा को वीजू या बीजेश्वर नाम से पुकारा गया। आपस में लड़ते-लड़ते दोनों चूड़धार तक जा पहुंचे। वहां जाकर शिरगुल ने क्षमा मांगते हुए बीजेश्वर से कहा कि यहां से आगे का क्षेत्र मेरे लिए छोड़ दो। बीजेश्वर ने शर्त स्वीकार कर ली और दोनों में संधि हो गई। संधि के बाद देवथल में आकाशवाणी के अनुसार मन्दिर निर्माण का कार्य आरंभ हुआ। कोठाल वंश से एक अवैतनिक मंत्री की नियुक्ति करके उस पर जभेरी का कर लगाया गया। यह परंपरा आज भी यथावत् चल रही है। श्री केवलराम से पूर्व इस पद पर बालकराम, लहसनू और बदिया आदि मंत्री रह चुके हैं।

सबको साथ लेकर चलने से ही अत्याचार का सामना करना संभव होता है।

कोठाल वंश और उसकी मंत्री परंपरा

कोठाल वंश की दो मुख्य खेलें या विभाग हैं - एक कोठाल दूसरा हथवाल। कोठी गांव के निवासी कठवाल और हाथों के वासी हथवाल कहलाते हैं। आगे चलकर इसके चार उपविभाग हो गए। जबराइक, ठणायक, तथैट और बढीलडू। ये सब नाम उनके निवास ग्रामों से संबन्धित हैं। मूल मन्दिर के निर्माण के समय कोठाल, हथवाल, गारू, चाकर, छिब्बर, भउंठी, भलीर ओर परिहाड़ आदि लगभग सभी उपविभागों ने मन्दिर के निर्माण में बढ़-चढ़कर भाग लिया था। उस जमाने में यातायात की कोई व्यवस्था तो थी नहीं, लोगों ने सारे पत्थर अपनी पीठ पर खडली से ढोए थे। पौली की तर के सदाव्रत में भोजन की कभी कमी नहीं आती थी। लोग सत्यपरायण और सात्विक जीवन जीते थे।

मूल मन्दिर का जीर्णोद्धार संभवतः सन् 1903 में हुआ था। उस समय जिन्होंने जीर्णोद्धार में भाग नहीं लिया था उन्हें 'गैर कल्याणा' घोषित किया गया था। वर्तमान मन्दिर प्रबंधन समिति ने जो भव्य मन्दिर और भवन बनाया है, उसमें किसी को 'गैर कल्याणा' नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसमें सभी लोगों ने तन-मन-धन से भाग लिया है। कोई नास्तिक या दरिद्रनारायण ही अपवाद हो सकता है।

मंत्री सदैव जबराइक या ठणायक में से लिया जाता है। ये एक ही पुरुष की दो संताने हैं। लगभग छठी शताब्दी में कोठाल वंश का कोई पूर्वज कोठी गांव में आकर बसा था। उसकी एक संतान कोठी के समीप ठाणा में बसने के कारण ठणायक कहलाई। दूसरी संतान जंबरी के पास बसने के कारण

जबराइक कहलाई। केवल इन्हीं दो के वंशजों में से मंत्री की नियुक्ति की परंपरा आज तक चली आ रही है। उन्हीं के आदि पूर्वज ने प्रतिज्ञा की थी कि मंत्री पद का कार्यभार संभालने की परंपरा इसी परिवार से चलती रहेगी। वह आज तक ज्यों की त्यों चल भी रही है और देवकृपा से आज तक यह परिवार फल-फूल रहा है।

लोक विश्वास है कि कोठालों के पूर्वज सिरमौर रियासत के ठार नौल गांव से आकर यहां बसे थे। उनकी एक शाखा बढील गांव में बसने के कारण बढीलड़ू कही जाती है। एक अन्य वर्ग 'तवा' नामक खेत में बसने के कारण तवेरू कहलाता है। यह भी कहा जाता है कि कोठालों को राजा बीजेश्वर ने यह प्रतिज्ञा करवाई थी कि वे आपस में सदैव एक होकर रहेंगे तथा आजीवन लोक कल्याणकारी कार्य करते रहेंगे। यह वचन निभाना इन लोगों के ऊपर देवता की एक कर मानी जाती है। उस वचन का याद रखना-निभाना इनका परम कर्त्तव्य है। आज तो पग-पग पर जनकल्याणकारी कार्यों की जरूरत है। आशा है ये समाज और देश के लिए कुछ न कुछ उत्तम कर दिखाएंगे। कठवाल निस्संदेह जेठे कल्याणे हैं और मन्दिर प्रबंधन में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

देवता हमारी समस्याओं का समाधान तभी करते है। जब हम उनके प्रति की गई करों (प्रतिज्ञाओं) को निभाते हैं।

मंदिर का प्रबंधन

मन्दिर में देवता की पूजा-अर्चना के लिए पुजारियों के दो टोले हैं। एक टोला देवथल में तथा दूसरा तलौना गांव में रहता है। देवता के मंगलामुखियों के भी दो टोले हैं। एक टोला देवथल में तो दूसरा कोठी धार में रहता है।

माना जाता है कि शिरगुल के आतंक के समय कोठाल वंश के पास कोई ब्राह्मण पुरोहित नहीं था। इस कमी को पूरा करने के लिए गांव बघाश (कंडाघाट) से दो ब्राह्मण परिवारों को गांव रूग (देलगी) में बसाया गया। पुरोहित की नियुक्ति परंपरानुसार बोली-बानी के जरिए की गई। इनके मुख्य कर्त्तव्य मन्दिर में दैनिक पूजा, दोनों नवरात्रों में चंडी पाठ और जाग्रा में देवपूजन अब तक चले आ रहे हैं। पुरोहितों या सरजाइयों की भी दो टोलियां हैं। एक टोली गांव रूग में तथा दूसरी टोली गांव मांगना में रहती है। कोठाल वंश की कुलजा देवी मंगलामाता का मन्दिर देलगी में विराजमान है। इस मन्दिर में पूजा-अर्चना का काम भी ऊपरोक्त सरजाई ही करते हैं। जहां ज्येष्ठ मास के मंगलवार को मेला लगता है।

- सरजाई कुठालवंश के भी पुरोहित हैं।
- संभवतः यह मंदिर राजा बीजेश्वर के इष्ट देवता भगवान शिव का है परन्तु आज अपने सत्कार्यों से वे वहां स्वयं भी पूजित होते हैं।

देवत्व प्राप्ति का साधन लोकोपकार है।

एक कल्याणे से बातचीत

गांव शावग के श्री मोहन सिंह ठाकुर के अनुसार जाग्रा में बिना किसी औपचारिक निमंत्रण के भी देवदर्शन की परंपरा है। देवता महाराजा हैं। पूर्वजों के अनुसार हथवालों और कठवालों के पूर्व पुरुषों के प्रयत्नों से यहां शिरगुल के दुःशासन का अंत हुआ था और सुशासन की स्थापना हुई थी। उनके अनुसार शिरगुल को लोहे के गोलों (तोपों) से भगाया गया था। महाराज बीजेश्वर ने अपने सुशासन में क्षेत्रीय लोगों को अपने यहां काम-धंधा दिया था, जिससे वे अपना जीवन निर्वाह कर सकें। लुहारों को लोहे का, कुम्हार को बर्तनों का और ब्राह्मणों का पूजा-अर्चना का काम दिया गया था। समस्त कामगीरों को उचित पारिश्रमिक दिया जाता था। प्रजा बहुत प्रसन्न थी। यहां की देवपूजा विधि में समस्त देवताओं और परंपराओं का समावेश है। कल्याणों का विश्वास है कि बीजेश्वर देवता में तैतीस करोड़ देवताओं के साथ त्रिलोकीनाथ स्वयं विराजमान हैं और उनकी पूजा करने से वे सभी प्रसन्न हो जाते हैं।

बीजेश्वर देवता दुग्धाहारी और मांसाहारी दोनों हैं। देवशक्ति समस्तकामनापूरक है। मांसबलि की प्रथा ज्ञानोदय के साथ-साथ समाप्त हो रही है। जिनके ऊपर बीजेश्वर की कृपा है उन्हें कल्याणा कहा जाता है। देवता ने अपने क्षेत्र के ऊपर बहुत कृपा बरसाई है। सभी लोग देवता के प्रति एहसानमंद हैं। इस एहसानमन्दी को बनाए रखना कल्याणों पर बहुत बड़ी कर है। इस कर को पूरा किए बना देवता का खोट (शाप) लगता है, ऐसा देखा-सुना जाता है।

प्रजा को प्रसन्न रखने से ही प्रशासक को मुक्ति मिलती है।

जाग्रा या जागरण

'जाग्रा' का व्यावहाकिर अर्थ है देवता की अपने घर में पूजा - अर्चना करना। प्रायः इसमें रात भर जागना पड़ता था, परन्तु अब उतना नहीं होता। जाग्रा करवाने के लिए मुहूर्त संक्रान्ति के दिन देवथल में तय किया जाता है। यह कार्य कल्याणा पुजारी और सरजाई से करवाता है। सरजाई कल्याणे की ओर से निमन्त्रण देता है। निमंत्रण और जाग्रा की तिथि निश्चित होने पर कल्याणा शक्कर, मौली और ग्यारह रुपए भेंट करता है। पुजारी की स्वीकृति मिलने पर भेंट की गई शक्कर को उपस्थित लोगों में बांटने को कहा जाता है। यह कल्याणे की निमंत्रण स्वीकृति की प्रसन्नता का प्रतीक है। पहले जाग्रे हेतु कल्याणे की चंद्रशुद्धि देखी जाती है अनंतर अगले जाग्रों के लिए मुहूर्त नहीं देखा जाता। जाग्रा करवाने वालों को उन्हें क्रमशः तिथियां बता दी जाती हैं।

कल्याणें को अपने जाग्रे से एक दिन पूर्व सायं चार बजे देवता को ले जाने के लिए देवता के पास उपस्थित होना पड़ता है। जाग्रा उत्सव में समस्त निमन्त्रित बन्धु देवता सहित देवता के कारिंदों का हृदय से स्वागत करते हैं। यज्ञ में सभी को भोग (भोजन) देने की व्यवस्था की जाती है। देवतार्थ प्रसाद बहुत शुद्धि से अलग बनाया जाता है। देवपूजन शास्त्रीय एवं परंपरागत दोनों विधियों से किया जाता है। पूजन को 'धेल' कहते हैं। कुठालों तथा शांगड़ी वालों में जेठे बेटे के जन्म पर जाग्रा देने की परंपरा है शांगड़ी वालों को तो इसके लिए मुहूर्त भी नहीं देखा जाता। नौ वर्ष से कम आयु की कन्याओं को जिमाया जाता है। धेल नगाड़ा, ढोलक और शहनाइ वादन के साथ संपन्न होती है।

बीजेश्वर सहित समस्त देवी-देवताओं की स्तुति बहुत कर्णप्रिय और इतिहासपूर्ण है। दिन में देवतार्थ प्रसाद पुजारी आदि कारिंदे स्वयं बनाते हैं। इस पुजावल में खीर बनती है। सायं चार बजे अनेक श्रद्धालुओं के साथ अगले जाग्रे हेतु यात्रा आरंभ होती है। कल्याणा वादकों के पीछे मार्ग को पंचगव्य से शुद्ध करता हुआ चलता है। अपने सिर पर देवता को उठाने वाला 'घोड़ा' कहा

श्रद्धाशक्ति श्रद्धालु के लिए हितकर रूप धारण करती है।

जाता है। गंतव्य पर पहुंचने के बाद सबसे पहले घोड़े के पैर धोए जाते हैं। फिर देवतार्थ सजाए गए कमरे में जाकर देवस्नानादि करवाकर सोपचार पूजन किया जाता है। धेल में पुजारी, परहाड़िया और सरजाई उपस्थित रहते हैं। यह एक प्रकार से देवता का मन्त्रिमंडल है। घी-गूगल आदि से धड़छ में धूप देकर-आरती उतारकर देवता (पुजारी) से प्रार्थना की जाती है कि वे कल्याणे द्वारा इच्छित जाग्रा स्वीकार करें। यह एक दर्शनीय विनम्र प्रार्थना होती है। पूजा कक्ष में सुगंध और मंगलध्वनि के साथ एक अलौकिक सा वातावरण बन जाता है। उपस्थित जनसमुदाय सिर को ढक कर हाथ जोड़े रहता है। कल्याणे के परिवार की सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना की जाती है। इस समय देवता में खेल (छाया) आ जाती है। इसमें वाणी कंपित होती है। इसी वाणी में देवता का निवास माना जाता है। जाग्रा की स्वीकृति के बाद लोग अपनी-अपनी ओपरी समस्याएं पेश करते हैं। इस कार्य में सरजाई मदद करता है। यथा समस्या समाधान प्राप्त किए जाते हैं। समाधान व्यावहारिक व धार्मिक होते हैं। परहाड़िया पुजारी की मदद करता है। परहाड़िया मंत्री कहलाता है। इस प्रक्रिया को 'नमाला' या निर्मलीकरण कहते हैं। दूध का दूध और पानी का पानी। स्पष्ट आदेश किया जाता है। लगता है कि यह प्रक्रिया विकृत जीवन शैली को सुधारने में काफी मददगार है। सुख और शान्ति हेतु देवताओं से चावल लिए जाते हैं।

देवयात्रा में सबसे आगे वादक उसके पीछे चांदी का दंडधारक, फिर पंचगव्य छिड़कने वाला और देवधारक पुजारी (घोड़ा) क्रमशः चलते हैं। सबसे पीछे श्रद्धालु लोग होते हैं। परहाड़िया कल्याणे और देवता के मध्य संवाद स्थापित करता है। देवता की प्रसन्नता के लिए करयाला, ठडैर (धनुषयुद्ध) और बरलाज करवाने की भी परंपरा है। आजकल साजी के दिन मंदिर में भंडारा यज्ञ भी किए जाते हैं। इसी दिन देवता को नवान्न भेंट किया जाता है। साजी को नमाला भी किया जाता है। बीजेश्वर चार चौकड़ी का राजा है, अर्थात् एक व्यापक क्षेत्र का। जबराइकों पर बेटे की बधाई की कर तथा शांगड़ी वालों पर विवाह की बधाई की कर है। जाग्रा मंदिर में भी करवाया जा सकता है। महिलाएं देवदर्शन केवल दूर से कर सकती हैं।

चावल निर्मलता और समृद्धि के प्रतीक हैं।

देवता के विशेष कृपापात्र :
शांगड़ी के ब्राह्मण

शांगड़ी गांव के ब्राह्मण मूलतः क्यारीबंगला के पास किसी गांव के निवासी हैं। दुर्भाग्यवश वहां उनका किसी क्षत्रिय परिवार से वैमनस्य हो गया था। बढ़ती शत्रुतावश क्षत्रियों ने इनके पूरे परिवार का नाश कर दिया था। संयोगवश केवल एक महिला जो कि गर्भिणी थी, जीवित बच गयी थी। वह गर्भस्थ शिशु के लिए जीवनदान मांगते हुए देवथल मंदिर में जाकर देवमूर्ति से जाकर चिपक गई। उसने देवता से प्रार्थना की कि यदि वे उसके गर्भस्थ शिशु को बचा दें तो उसके वंशज जेठे बेटे के विवाह पर सर्वप्रथम मंडप में देवता को पूजार्थ स्थान देते रहेंगे। बीजेश्वर की कृपा से उस का वह शिशु बच गया और वंश की रक्षा हो गई। उसके बाद आज तक वे लोग अपनी पूर्वज महिला द्वारा की गई प्रतिज्ञा को निभाते हैं।

देवकृपा वश उनके वंशज विदेशों में भी फल–फूल रहे हैं। कहते हैं कि उनमें से विदेश में किसी के घर एक वानर जैसी संतान पैदा हुई थी। विख्यात चिकित्सकों को दिखाने पर भी कारण का पता न चल सका। अंततः किसी प्राच्यविद् ने उन्हें बताया कि वे अपने कुलेष्ट देवता के प्रति किए गए वचन से विमुख हो गए हैं, अतः पहले उसे पूरा करके देखें। अपने परिवारवृद्धों से पता करने पर उन्हें पता चला कि उक्त दंपत्ति के विवाह के समय देवता बीजेश्वर को मंडप में पूजित नहीं किया गया है। यथोक्त विधान के पूरा करने पर उनकी संतानें अब सामान्य व स्वस्थ पैदा होती हैं, ऐसा सुना जाता है।

एक आंखों देखा जागा

एक स्थानीय किसान की बेटी दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी, उसने चिकित्सा करवाने के साथ-साथ मानता (कामना) की कि अगर उसकी बेटी बिल्कुल स्वस्थ हो जाए तो वह अपने घर में देवता का जागा करवाएगा। देवकृपा से वह स्वस्थ हो गई। किसान ने विधिवत् देवता को निमंत्रण दिया। शक्कर बांटी गई तथा तत्काल फोन द्वारा लोगों को निमंत्रित किया। अगले दिन किसान अपने साथियों सहित देवता की शरण में पहुंच गया। सबने यज्ञ का प्रसाद ग्रहण किया। पुजारी ने अपने सिर पर देवता को पगड़ी में रखा। यात्रा आरंभ हुई, पर्याप्त जनसमूह के साथ। देवता के आगे एक कल्याणा पंचगव्य से मार्ग शुद्ध कर रहा था। सबसे आगे बाजे वाले और उसके पीछे चांदी के दंड वाला चल रहा था। शेष जनता नंगे पैर और सिरों को ढके चल रही थी। सड़क पर आकर वाहन को पंचगव्य व साफ पानी से धोया गया। चांदी का दंड धार्मिक शासन का प्रतीक माना जाता है। कल्याणे सहर्ष धार्मिक शासन को स्वीकार करते हैं। माना जाता है कि भगवान बीजेश्वर की प्रसन्नता से खुशहाली और अप्रसन्नता से बदहाली पैदा होती है। लुभावने पहाड़ी दृश्यों के बीच यात्रा मन को लुभा रही थी।

सांय छह बजे गंतव्य पर पहुंचे तो उपस्थित जनसमुदाय ने देवयात्रा का भाव भीना स्वागत किया। देवता के प्रधान कारिंदों के पैर धोए गए। पश्चात् सजे मंडप में देवता को ले जाया गया। देवता के पीठ की ओर पवित्र लाल वस्त्र चिपकाए गए थे। बाईं ओर अन्न राशि पर गण देवता, बीच में बीजेश्वर तथा दाएं कुल देव ड्यारश स्थापित किए गए। यह सब कुछ देवमूर्तियों और पात्रों के स्नान के बाद हुआ। बाएं कोने में चांदी का दंड खड़ा किया गया। चांदी का दंड दैवी

सच्चा धर्म समस्त जीवों को एक समान सुख-सुविधाएं प्रदान करता है।

न्याय का प्रतीक है, रक्षा का भी। इस अवसर पर कल्याणा अपने कुलपुरोहित को भी निमंत्रण देता है। वैदिक पूजा विधान के साथ-साथ हमारी पवित्र परंपराएं भी उसके साथ जुड़ी हैं। वैदिक, कुलेष्ट और स्थानीय देवताओं का पूजनार्चन किया जाता है। देवता को विजयेश्वर भी कहा जाता है, क्योंकि विजय (बीजू) देवता ने अत्याचारी राजा शिरगुल पर विजय पाई थी। पहली धेल या पूजा में पूर्वांगपूजन के बाद बीजेश्वरादि समस्त देवताओं की मधुर स्तुति गाई गई। धूप-दीप-हवनादि के साथ वाद्य वातावरण को दिव्य बना रहे थे। देवस्तुतिगान के अंदर हिमाचल के प्राचीन राजा-रानियों का रोचक इतिहास छिपा पड़ा है। कल्याणा धड़छ (बड़ी कड़छी) में आग के ऊपर रालधूप जलाकर देवता की आरती उतारते हुए प्रार्थना कर रहा था कि वह कल्याणे के परिवार की ओर से मानी गई पूजा को कबूत करते हुए उन्हें सर्वविध सुख व स्मृद्धि प्रदान करें। हिंगरते हुए देवता (दिवां) के 'कबूल है' कहने पर अगला कल्याणा देवनिमंत्रणार्थ उपस्थित हो गया।

रात को ग्यारह बजे कल्याणे के हाथों बनाई गई कड़ाही (हलवा) सरजाई द्वारा देवता को प्रसाद रूप में चढ़ाया गया।

देवता हेतु प्रसाद पकाते समय रसोई में स्त्री का प्रवेश वर्जित था। दूसरी धेल सबेरे नौ बजे और तीसरी धेल दोपहर एक बजे संपन्न हुई। देवता (दिवां) में खेल आने पर अनेक व्यक्तियों ने अपनी ओपरी या अदृश्य समस्याएं पेश की। ओपरी समस्याएं वे कहलाती हैं, जिन पर प्रत्यक्ष रूप से कोई वश न चले। तीसरी धेल हेतु प्रसाद (खीर) देवसेवक स्वयं बनाते हैं। निमंत्रित लोगों को यज्ञ शेष का प्रसाद (भोज) बांटा जाता है। सायं चार बजे देवता ससमारोह अगले जाग्रे के लिए रवाना हुए।

दिवां (देवता) से प्राप्त सहज समाधान परमात्मकृत समाधान माना जाता है।

खेल (छाया) द्वारा समस्याओं के समाधान

देवता के खेलने को हिंगरना भी कहते हैं। इस विशेष प्रकार के कंपन में वह सरजाई द्वारा पूछे गए कल्याणों के प्रश्नों के उत्तर देता है। इस अवस्था में दिवां प्राय: अचेत सा होता है। दिवां में यह छाया पूजा-अर्चना के साथ तथा वाद्ययंत्रों और स्तुति के साथ आती है परन्तु छाया आ जाने पर मौन छा जाता है। समस्या का समाधान बता दिए जाने पर रक्षार्थ चावल दिए जाते हैं। यह कल्याणे का एक प्रकार का अस्थायी मानसिक उपचार है, वास्तव में स्थायी समाधान तो देवता द्वारा बताए गए उपाय को पूरा करने पर ही होता है। समस्याओं का समाधान किस प्रकार होता है, यह एक नितान्त अनुसंधेय विषय हैं समाधानों में अधिकतर देवता के प्रति कर्त्तव्य, पितरों के प्रति कर्त्तव्य या दुष्ट तंत्र के प्रतिकार स्वरूप होते हैं।

जीवनशैली (दैनिक भास्कर से साभार)

मनुष्य समाज अपने हजारों वर्षों के इतिहास में विचार और दर्शन की एक परंपरा विकसित करता है। अनुभवों का सार संग्रह करके उन्हें दर्शन, सिद्धांत और फिर धर्म का रूप देता है। संसार के तकरीबन सभी धर्मों का उदय इसी तरह हुआ है। धर्म एक तरह से उन्नत, उदात्त और मानवीय जीवन शैली है। हमारे पूर्वजों ने अपने ज्ञान और अनुभवों से उस जीवन शैली का विकास किया। उसे जीवन शैली न कहकर धर्म का नाम दिया गया ताकि लोग उन मूल्यों को अपने जीवन में उतारें और उसका अनुसरण करें।

जीवन में किसी भी समस्या का प्रवेश व निष्कासन मन के माध्यम से होता है।

जाग्रा के लिए निर्धारित पूजन सामग्री

हरा श्रीफल	:	एक नग
कन्द	:	आधा मीटर
मौली	:	100 ग्राम
गुलाली	:	100 ग्राम
धूप	:	एक पैकेट
अगरबत्ती	:	एक पैकेट
लौंग	:	एक तोला
छोटी इलायची	:	एक तोला
कपूर	:	बीस ग्राम
पीली सरसों	:	एक तोला
हवन सामग्री	:	एक छोटा पैकेट
सफेद मारकीन	:	चार मीटर
सर्वोषधि	:	दस ग्राम
गूगल धूप	:	25 ग्राम
रेशमी धागा	:	एक मीटर
पीला वस्त्र	:	सवा मीटर
लाल वस्त्र	:	सवा मीटर
		पाथा, ठाकरी, कुशा, दूर्वा, फूल, गंगाजल
पंचामृत	:	दूध, घी, दही, शहद, शक्कर
पंच पल्लव	:	आम, पीपल, गूलर, वट, प्लक्ष
पंचगव्य	:	दूध, घी, दही, गोमूत्र, गोबर

जाग्रे के बारे में कुछ अन्य बातें

वैशाख मास में देवता का जन्ममास होने से जाग्रा नहीं किया जाता। भाद्र और पौष मास भी वर्जित है। जाग्रा प्रधानतः चार प्रयोजनों से करवाया जाता है-काई, कमाई, बधाई और ओडे की ढलाई। ओडे की ढलाई का मतलब माना जाता है विवादित जमीन को निर्विवाद बनाना। ओडा उस पत्थर को कहते है। जो दो व्यक्तियों की जमीन की सीमाओं को निर्धारित करता है। कल्याणा जाग्रे के लगभग आठ दिन पहले मन्दिर में जाकर जाग्रे हेतु निमंत्रण देता है। देवयात्रा पैदल या वाहन में यथास्थिति की जाती है। पुजारी के एक परिवार में सूतक या पातक होने पर दूसरा पुजारी परिवार देवपूजा को संभालता है। दोनों की अनुपस्थिति में परहाड़िया यह कार्य करता है। जाग्रा करवाने का शुल्क लगभग एक हजार रुपए रखा गया है, जिसे एक गरीब भी वहन कर सकता है। उत्सव पर अधिक खर्चा श्रद्धा व शक्ति के अनुसार होता है। यात्रा पर बीजेश्वर देवता स्वयं नहीं, बल्कि उनके टिक्का (राजकुमार) जाते हैं।

देवता (परमात्मा) पर विश्वास करने वाले लोगों की समस्याएं देवमंदिर के माध्यम से शांतिपूर्वक निबट जाती हैं।

महाराज-एक वीर योद्धा के रूप में

परंपरानुसार क्योंथल, बघाट, कुठाड़, कुनिहार, बाघल और कोटी आदि रियासतों के लोगों में बीजेश्वर महाराज की मान्यता एक वीर योद्धा के रूप में चली आ रही है। सदियों पहले एक समन वाहक समन लेकर अपने गंतव्य की ओर जा रहा था। अपना रास्ता पार करते हुए जब वह वाकनाघाट से लगभग तीन किलोमीटर आगे राक्षसों के एक निवासस्थान से गुजर रहा था, उसको वहां से एक अजीब किस्म के लोगों की बारात गुजरती नजर आई। सूर्यास्त हो चुका था। उस स्थान पर जाने से लोग वैसे भी भय खाते थे। समन वाहक भी उस बारात में शामिल हो गया। फांसी की घाटीं (छौसा के पास) पहुंचने पर बाराती एक गुफा में प्रवेश कर गए। समन वाहक भी साथ में अंदर हो लिया। वास्तव में वह राक्षसों का निवास था। परात जैसी बड़ी-बड़ी थालियों (थालों) में खाना परोसा गया। समनवाहक ने भी औरों की तरह अपने थाल में जानवरों की टांगें, सिर और सींग आदि देखे। एक राक्षस रोशनी को उठाए खड़ा था। उसी समय उसने राक्षसों को आपस में बतियाते सुना कि कहीं से मच्छगंध (मानवगंध) आ रही है। वह सतर्क हो गया, उसने अपना छिपाया फरसा संभाला और पास में रोशनी उठाए खड़े राक्षस पर उसका वार कर दिया। रोशनी गुल हो गई। वह अंधेरे में बाहर भागा। अपनी बेहोशी जैसी हालत में अपना थाल उठाकर जुनगा की ओर चल दिया। वह शोघी के समीप पहुंचने पर अचेत होकर गिर पड़ा। सबेरे जब किसी ने उसका शरीर हिलाया तो उसमें खेल (देवछाया) आ गयी। हालत पूछने पर उसने बताया कि बीजेश्वर महाराज ने राक्षसों से उसकी जान बचाई है और महाराज ही उसके अन्दर खेल रहे हैं। उसके थाल को दो आदमी उठाकर जुनगा पहुंचा सके जो आज भी वहां सुरक्षित है। लोगों में विश्वास है कि राक्षसों की ऊपरोक्त गुफा में अब भी राक्षस रहते हैं तथा वहां पर छल (डर) हुआ करता है। सदियों पहले जब वहां राक्षसों का आतंक बढ़ा तो बीजेश्वर देवता ने उनका संहार किया था। उन पर बीज (बिजली) गिराने से भी देवता का नाम बीजू या बीजेश्वर पड़ा था। ऐसा भी अनेक लोग कहते हैं।

भौतिक उन्नति के साथ शोषण और अन्याय भी दूर करने पड़ते हैं।

कृपालु देवता - दानो

फांसी की घाटी (छौसा) के समीप एक नाला वाकना और मंझोल गांवों के बीच होता हुआ बहता है। उसमें लगभग दो सौ फुट ऊंचाई से एक झरना बहता है। यहां बीजेश्वर महाराज ने अपने एक पुत्र को बसा दिया। उसने भी अपने पिता की तरह लोगों को राक्षसों से बचाया। इसी कारण उनका नाम दानो (दानव) पड़ा। स्थानीय लोग नए अन्न से इस देवता की पूजा करते हैं। पूजा के बाद खुद अन्न बर्तते हैं। कहते हैं कि इस देवता की पूजा से जंगली जानवर खेतों को नुकसान नहीं पहुंचाते।

एक स्थानीय पूर्वज के अनुसार उनकी आंखो देखी एक घटना है। लगभग सन् 1954-1955 की बात है। लोग खेतों के काम में व्यस्त थे। एक बंदर ने पेड़ों के बीच नाले के वार से पार को छलांग लगाई। टहनी उसकी पकड़ में न आ सकी और वह दो सौ फुट नीचे पत्थर पर गिरकर चूर हो गया।

उसी दिन एक लाल सिंधी बैल पत्तियों की ओर लपकते हुए उसी स्थान पर नीचे गिर गया। वह उस गहरे नाले में गिर कर भी शाम को सुरक्षित घर को लौट आया। इस घटना से सभी चकित थे। सभी उसे देव दानो की कृपा मानकर उनका जयकारा करने लगे। उस घटना के बाद देव दानो गोरक्षक देवता माने जाने लगे।

धार (वाकना) में बीजेश्वर की विशेष पूजा

वैसे तो जिला सोलन के अनेक स्थानों पर बीजेश्वर देवता की पूजा होती है परन्तु जो बात परगना (वाकना) के उपग्राम 'धार' के मन्दिर की है वह कुछ और ही है। इस मन्दिर को देवथल मन्दिर के समान ही मान्यता मिली है। यदि किसी प्रकार के विघ्न के कारण देवथल मन्दिर की ओर से जाग्रा करवाना संभव न हो सके तो वह ऊपरोक्त मन्दिर से करवाना पूर्ण प्रशस्त माना गया है। 'धार' मन्दिर की व्यवस्था देवथल मन्दिर के समान ही की जाती है। यहां भी पुजारियों के चार-पांच परिवार हैं। पुजारी, सरजाई, बजंत्री, छड़ी और झंडे की व्यवस्था भी देवथल के समान है। कई लोग देवथल और धार दोनों की मूर्तियों को साथ आमन्त्रित करते हैं।

देव परम्परा का मतलब है किसी भी प्रकारसे जीवों की भलाई के लिए काम करना।

एक विशेष कल्याणे के विचार

गांव बरयाड़ी के आचार्य डा. सुरेश शर्मा से प्राप्त लिखित जानकारी के अनुसार देवस्थल एक बहुत ही सुन्दर स्थली है। गंभर नदी के पास बने उस देव मन्दिर के प्रति लगभग दस हजार लोगों की श्रद्धा जुड़ी है। मन्दिर की मूर्तियां देवपरिवार के रूप में स्थापित हैं। मुख्य देववाद्य नगाड़ा है। देवता की कृपा से कामना के पूरा होने पर लोग अपने घरों में जाग्रा करवाते हैं। देवक्षेत्र के लोग हर संक्रान्ति को देवद्वार पर आकर शीश नवाते हैं। अन्न व धन से पूजा करके दैवी प्रकोप से बचाव, खेती में लाभ और अपने कुल-वंश की वृद्धि हेतु प्रार्थना करते हैं। मूर्ति का स्पर्श पुजारी के अलावा सबके लिए वर्जित है। महिलाएं केवल दूर से दर्शन व प्रणाम कर सकती हैं। प्राचीन मन्दिर के साथ आधुनिक भव्य मन्दिर, धर्मशाला और पाकशाला आदि सुंदर और दर्शनीय बन गए हैं।

हर संक्रान्ति को मन्दिर में श्रद्धालुओं की ओर से क्रमशः भंडारे आयोजित किए जाते हैं। मन्दिर की सुरक्षा व विकासार्थ एक निर्वाचित कमेटी का गठन किया गया है। दो पवित्र छोटी नदियों के संगम पर बना यह स्थल बहुत आकर्षक है। चारों ओर की पर्वत श्रृंखलाएं देवालय की श्रृंगार हैं।

महान कृपालु देवता का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रायः हर गांव के निवासियों ने अपने-अपने यहां देवथल के पुजारियों से विधिवत बीजेश्वर की स्थापना करवायी है। यहां भी मुख्य मंदिर की तरह ही पूजा-अर्चना की जाती है। जेठ और कार्तिक के महीनों में नया अन्न आने पर स्थापित देवता की पूजा की जाती है। बीजेश्वर महाराज अपने विशाल भूमि क्षेत्र के सच्चे मालिक हैं। इस मिट्टी के हर दाने पर इन्हीं की मुहर लगी है। इसी कारण देवता को नवान्न

आधुनिक भंडारा पवित्र वैदिक यज्ञ का एक सरल रूप है।

अर्पित करके यज्ञशेष ग्रहण करके वैदिक परंपरा का निर्वाह करते
हैं। कल्याणे को अपने कठोर परिश्रम से तथा देवकृपा से जो फल-फूल या
समृद्धि मिलती है वह सब कुछ बीजेश्वर की कृपा का परिणाम माना जाता है।
किसी प्रकार की हानि हो जाए तो वह उनके कोप के कारण माना जाता है। कई
लोग न्यायप्राप्ति हेतु भी देवशरण में जाते हैं। यदि किसी ने सचमुच किसी से
अन्याय किया है और अन्यायग्रस्त व्यक्ति ने देवता से न्याय की गुहार की है तो
उसे देवता का कोप सहना पड़ा है। यह सब श्रद्धा व विश्वास का फल ही होता
है। ऐसे न्यायकारी महाराज की सदा ही जय हो।

अनुचित प्रार्थना से देवता नहीं पिघलते, वे तो हर हालत में सच्चाई के पक्ष में निर्णय लेते हैं।

देवता महाराज के बारे में कुछ अन्य जानकारियां

1. देवता की कर (वचन) पूरी न करने पर प्राय: देवदोष लगता है।
2. किसी भी प्रकार के कष्टनिवारण के लिए देवता का जाग्रा करवाने की परंपरा है।
3. भगवान् शिव के अनन्य उपासक बीजेश्वर महाराज स्वयं भी शिववत् उपास्य माने जाते हैं।
4. कठवालों, हथवालों और शांगड़ी के ब्राह्मणों पर देवता की विशेष करें लगी हैं।
5. बीजेश्वर का क्षेत्र शिमला और कालका के बीच तथा राजगढ़ और नालागढ़ के बीच माना जाता है।
6. गंभर के पास का पुल अंग्रेजों ने सुबाथु और हरिपुर के बीच खच्चर रोड को जोड़ने हेतु बनाया था।
7. वर्तमान एम.ई.एस. की जगह पहले देवता की भूमि होती थी।
8. हाल ही में बने मन्दिर के साथ के तिमंजिले भवन में पुराण यज्ञ और भंडारा यज्ञ जैसे विशाल कार्यक्रम पूर्ण सुविधा के साथ संपन्न होते हैं।
9. शिरगुल देवता के क्षेत्र में बीजेश्वर को उनका मित्र माना जाता है, संभवत: यह मैत्री दोनों की युद्धसंधि के बाद की है।
10. जाग्रे हेतु निमंत्रण बड़ी छानबीन के साथ स्वीकार किया जाता है।

हमारी पवित्र परंपराएं हमारे सत्यपरायण पूर्वजों की धरोहर है।

देवयात्रा में देवता दिवां के सिर पर, चौकी हाथों में सामने होती है तथा परहाड़ियां देवता पर चंवर झुलाता हुआ चलता है।

12. समस्त संदिग्ध कार्यों में देवपरंपरा निर्णायक मानी जाती है, उससे बाहर न तो देवता के कारिन्दे जा सकते हैं न कल्याणे। इन दोनों के बीच का संतुलन बनाने में प्रबंध समिति की भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

13. परंपरानुसार देवता (दिवां) का निर्णय अतर्क्य और पालनीय माना गया है। वर्तमान पुजारी श्री मनीराम जी के अनुसार देवता (परमात्मा) की इच्छा सर्वोपरि है और उसी की मर्जी से सब कुछ हो रहा है।

14. बीजेश्वर क्षेत्र के प्रसिद्ध त्योहार : बिशु, रखडुन्या, जन्माष्टमी, डगेली, श्राद्ध, मालपुन्या, दुर्गाष्टमी, दशहरा, दीवाली, भाई दूज, माघ का त्योहार और शिवरात्रि आदि।

15. यहां के प्रसिद्ध मेले : शूलिनी, तारा देवी, गगैड़ी, सायर, बोहच, जौणाजी, करोल, देलगी, चायल, चामत भढ़ेच, बसाल, धरोट, सलोगड़ा और ओच्छघाट आदि।

16. देवक्षेत्रीय लोगों की विशेषताएं : रिश्तेदार, गृहस्वामी, ब्राह्मण, देवता, ऋषि, बालक, स्त्री, वृद्ध, पशु पितर और अतिथि का सत्कार और पूजन। इसके अतिरिक्त पारिवारिक और सामाजिक एकता और प्रेम के साथ मेहनत की रोटी खाना इनके चरित्र की विशेषता है।

17. क्षेत्रीय लोगों का आजमाया हुआ अनुभव है कि धन अथवा संपत्ति की दौड़ में आत्मिक सुख को गंवाकर आज तक कभी किसी का भला नहीं हुआ, चाहे वह कितना ही धर्मपरायण क्यों न रहा हो। समस्त वेद-शास्त्र, विश्व भर के धर्मग्रन्थ, संत और दार्शनिक (विचारक) इस तथ्य के गवाह हैं।

करयाला की जननी रानी चन्द्रावली

कहते हैं कि कश्मीर से आते समय टीका बीजेश्वर के द्वारा दो रानियों को यहां साथ लाने पर उनके ऊपर छींटा-कशी की जाती थी। एक बार जुन्गा से एक टिक्का साहब अपनी रानी सहित कुठाड़ जा रहे थे। बीजेश्वर ने बीच में ही कहीं डोली में से रानी को निकालकर उसकी जगह पत्थर की एक शिला रख दी। कुठाड़ पहुंचने पर टिक्का और कुठाड़ नरेश को रानी को न पाने पर परेशानी हुई। नरेश अपने कर्मचारियों सहित खोज में निकल पड़े। देवथल महल में जाकर देखा तो बीजेश्वर अपनी रानियों के साथ हार-पाशा खेल रहे थे और रानी उनके सामने नृत्य कर रही थी। राजा ने उनका स्वागत करने तथा कुशल पूछने के बाद आने का कारण पूछा। नरेश ने सच्चाई बता दी। वास्तव में कुठाड़ नरेश ने उनकी रानियों के बारे में उन पर कभी व्यंग्य किया होगा। अब बीजेश्वर बिना कुछ कहे ही दर्शा रहे थे कि जिस बात के लिए उन पर व्यंग्य कसे जाते हैं उन बातों को वे सच में ही कर दिखाते हैं। कुठाड़ नरेश ने स्थिति को देखकर बीजेश्वर से निवेदन किया कि उन्हें उन पर व्यंग्य करने का खेद है अत: वे अब रानी चन्द्रावली को उन्हें वापिस कर दें।

राजा बीजेश्वर ने शर्त रखी कि यदि मार्गशीर्ष संक्रान्ति को देवथल में दीवट पूजकर, मशाल रखकर रानी चन्द्रावली के स्वांग के बाद अन्य स्वांग कराते रहोगे तो चन्द्रावली को छोड़ सकता हूं। नरेश ने शर्त सहर्ष स्वीकार कर ली। लगता है आगे चलकर रानी को छोड़ने की यही शर्त लोकनाट्य करयाला की नींव बन गई, जो अब तक चली आ रही है। उस काल में शर्त को 'कर' कहते थे और शायद इस नाट्य का नाम उसी से 'करयाला' पड़ गया होगा।

हमारी पवित्र परंपराओं की नींव हमारे इतिहास में छिपी है।

चन्द्रावली से मनोरंजनार्थ नृत्य करवाया गया था, उसका स्वांग व अन्य स्वांग भी मनोरंजन के साधन बन गए। राजा बीजेश्वर नृत्य और स्वांग के प्रेमी थे अतः करयाला भी उनकी प्रसन्नता का साधन बन गया। पहला नृत्य करने वाली रानी का नाम भले ही चन्द्रावली था परन्तु उसका स्वांग भी चन्द्रावली नृत्य के नाम से ही प्रसिद्ध है। नृत्य की अब यह एक शैली ही मानी जाती है जो संभवतः कुल्लू के दशहरे में भी आयोजित की जाती है। चन्द्रावली नृत्य करयाले का एक प्रधान अंग माना जाता है।

इस प्रकार 'करयाला' राजा बीजेश्वर के जीवन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण घटना पर आधारित है। हास्यपूर्ण अभिनय का तो यह खजाना ही है। रानी के वापिस कुठाड़ चले जाने पर करयाला की परंपरा कुठाड़ में भी आरंभ हो गई। यह जुन्गा और पट्टा बरांवरी में भी किया जाता था। करयाला करने वाले स्वांगियों की सबसे पहली पार्टी 'गढ़िया' मानी जाती है। गढ़ का मतलब है गढ़ या सुबाथू से संबन्धित। उस जमाने में सुबाथू का महत्व सोलन से अधिक था, अनेक कारणों से। वह पार्टी येन केन प्रकारेण आज भी जीवित है। धामी रियासत का चौहान राजा भी अपने यहां करयाला करवाता था। वहां इसकी मनौती भी की जाती थी। महाराजा जुन्गा का एक छोटा महल पट्टा बरावरी में भी था। स्वांगियों में कोठी धार के तुरी, रड़याने के कोली, गद्दों के रमदासी और मढ़ के नाल के लुहार प्रसिद्ध थे। कई कार्यों के लिए करयाले की जगह बरलाज करवाने की भी परंपरा है। बरलाज में हवन, अठनी पूजन, रामायण सम्बन्धी प्रवचन और प्रातः हवन प्रमुख हैं। कहते हैं कि गांव कोठी (देलगी) में अब भी विशेष दिन में कोठाल, सुरजाई और तुरी मिलकर रात को कष्ट खेल, ठडैर और अठनी पूजनादि करते हैं।

कोलथी, भाड़ती और पनूंह आदि गांवों में बरलाज का आयोजन किया जाता था। करयाला हो या बरलाज बीजेश्वर की प्रसन्नता हेतु ही किए जाते हैं।

बीजेश्वर का प्रिय नाट्य-करयाला

करयाला हिमाचल प्रदेश में मुख्यतः सोलन, शिमला और सिरमौर तीन जिलों में अधिक प्रचलित है। वैसे इसकी मनोरंजकता व विचित्रता ने इसे विदेशों तक में भी स्थान दे दिया है। यह या तो मनौती पर या फिर केवल मनोरंजन के लिए करवाया जाता है। आजकल मेलों में भी इसकी झलक दिखाई जाने लगी है।

यदि करयाला केवल मनोरंजन हेतु हो तो इसे बिना किसी विशेष औपचारिक पूजन के आरंभ किया जाता है। मनौती पर करवाए जाने वाले करयाले में सोरो या ब्लोजो वृक्ष की तिकोनी टहनी को गाड़कर उस पर मशाल जलाई जाती है। मशाल के पास बेठल अर्थात् आटे की ठाकरी, गुड़ और द्रव्य (पैसे) रखे जाते हैं। मशाल पर देवता के नाम पर चरू की आहुतियां दी जाती हैं। देवता के नाम रखे जाने वाले द्रव्य को 'टकेवल' कहते हैं। इसे बाद में देवथल मंदिर में जमा किया जाता है और रसीद प्राप्त की जाती है। ढोल पर विशेष झाड़ा (ध्वनि) देकर काली का आवाहन किया जाता है। इस विशेष ध्वनि में काली का वास माना जाता है। काली जिस विशेष व्यक्ति में खेलती है उसे काली का दिवां कहा जाता है। इस विशेष ध्वनि के बिना दिवां में काली प्रकट ही नहीं होती। काली का झाड़ा इस धुन का विशेषज्ञ ही दे सकता है।

कोठीधार के वृद्ध बजन्त्री मास्टर टेकचन्द जी के अनुसार काली माता राजाओं की आराध्या हैं जिनके बल पर वे शासन करते हैं। वे ढोल की पूजा करने के बाद ही काली की पूजा-अर्चना करते हैं। तुरियों का तो जीवनाराध्य ही ढोल होता है। पूर्वोक्त मास्टर जी के घर में आज भी अद्भुत ढोल विद्यमान सुना जाता है।

देवता मानता या वेदसम्मत पवित्र इच्छा को अवश्य पूरा करते हैं।

करयाला को मंचन करने की जगह को अखाड़ा कहते हैं। यह खुले आंगन आदि में भी हो सकता है। अखाड़े के सामने दो दीवट गाड़े जाते हैं। दाएं भाग के दीवट को बीजेश्वर के नाम से और बाएं भाग के दीवट को काली के नाम से पूजा जाता है। बीजेश्वर से विनम्र प्रार्थना की जाती है कि वे कृपया कल्याणों के द्वारा मनौती किए गए जाग्रे को कबूल करें और उन्हें सपरिवार सुख-समृद्धि प्रदान करें। घेना जलाकर उसकी भी पूजा करके उसे सेका जाता है। दो करयालों का बोल एक ही करयाले से भी पूरा किया जा सकता है। करयाले की समाप्ति पर सबेरे दिवां खेलता है। यह बोल को कबूल कर लिए जाने का संकेत होता है। प्राचीनकाल में बकरे की बलि का प्रचलन था, अब वह लोगों की ज्ञानवृद्धि के साथ-साथ दूर हो रहा है।

डेरा - एक ऐतिहासिक स्थल

धार (वाकना) गांव के समीप ही एक ऐतिहासिक स्थल 'श्री राम मन्दिर डेरा' है। सन् 1605 के बाद इसका इतिहास मिलता है। चार सौ साल पहले यहां एक तेजस्वी महात्मा श्री बलरामदास जी तपस्यालीन रहे थे। उनके तेज से प्रभावित होकर क्योंथल रियासत के राणा विक्रमसेन ने उनसे विधिवत् दीक्षा ग्रहण की थी। राजा साहब जुन्गा ने डेरे में एक भव्य मन्दिर का भी निर्माण करवाया था। राजगुरु के पदों पर क्रमशः सर्व श्री बलरामदास, रघुवरदास, दयालदास, हीरादास, प्रेमदास, अमरदास, राघवदास, रामदास और वर्तमान में श्री मोहनदास सम्मानित रहे हैं। श्री मोहनदास जी परंपरागत वैद्यक में सिद्धहस्त तथा समाजसेवा में अग्रणी माने जाते हैं।

मन्दिर निर्माण के समय राजा साहब जुन्गा ने मन्दिर की डेवढ़ी की नींव रखते हुए सलाम करते हुए कहा था कि यदि कोई फरार खूनी मुजरिम इस डेवढ़ी में प्रवेश करके मन्दिर एवं गुरु की शरण में आत्म समर्पण करेगा तो उसकी तमाम सजा व जुर्म माफ कर दिए जाएंगे। राजगुरु महन्त को राजा साहब ने 'आनरेरी दंडाधिकारी' की उपाधि देकर सामाजिक और धार्मिक नियमों का उल्लंघन करने वाले दोषियों को दंडित करने के अधिकार भी दिए थे। राणा सोलन, कुठाड़, कोटी और कुनिहार भी धार्मिक और सामाजिक विचार-विमर्श व आशीर्वाद लेने हेतु डेरे में आते थे। परगना भरोली आदि क्षेत्रों में अब भी महंत को गुरुधारण करने की परंपरा विद्यमान है।

आदर्श राजा या शासक अपने सहित जनता को ईश्वरीय परोपकारपूर्ण नियमों में ढालता है।

लेखकरचित – शिरीषसौंदर्यकाव्यम् (अनुवाद एवं टिप्पणी सहित)

बीजेश्वर द्वारा प्रशासित विशाल क्षेत्र में शिरीष भोज के सौंदर्य का अपना एक विशेष स्थान है। शायद इसी से प्रभावित होकर श्री हरिकृष्ण शर्मा द्वारा रचित एवं युवा शर्मा द्वारा गाया गया एक पहाड़ी गीत (बघाटी बोली में) अक्सर आकाशवाणी शिमला से प्रसारित होता रहता है। यहां के निवासी न केवल मानवीय प्रेम के अपितु कर्मठता के भी धनी हैं। ये लोग जीवन के एकांगी विकास की अपेक्षा सर्वांगीण विकास के पक्षधर हैं। यही कारण है कि ये अपनी उदरपूर्ति के लिए पसीना बहाने के साथ-साथ अध्यात्म सम्मत मार्ग पर चलते हैं। यह सब इस क्षेत्र के प्राचीन अनुभवी पूर्वजों के द्वारा दर्शाए गए मार्ग के अनुसरण का ही फल है।

1. गणेशं शोभनं वन्दे
माहेश सुमनोहरम्।
मातरं च शिवारूपां
पितरं शिवरूपिणम्।।

मैं भगवान् शिव के पुत्र सुन्दर-सुमनोहर गणेश, पार्वतीरूपा मां और शिवरूप पिता को प्रणाम करता हूँ।

2. पूर्वजान् शिवभक्तान् हि
वेदमार्गानुयायिनः।
इ्यारशं कुलपूज्यं च
प्रणमामि पुनः पुनः।।

परम चेतना की पवित्र धारा ऋषियों और पूर्वजों से होती हुई हमारे कार्यों में अभिव्यक्त होती है।

मैं वेदमार्गानुयायी शिवभक्त पूर्वजों और पूज्य कुल देवता इयारश को बार-बार प्रणाम करता हूँ।

3. वज्रेश्वरि नमस्तुभ्यं
नगरकोट-राजिते।
देहि सन्मतिं सर्वान्
सर्वः सर्वत्र नन्दतु।।

मैं नगरकोट (कांगड़ा) में विराजमान कुलमाता वज्रेश्वरी देवी को प्रणाम करता हूं। वे आप सभी लोगों को सद्विचार और प्रसन्नता प्रदान करें।

4. शूलिनीरक्षकं नौमि
विधर्मात् आततायिनः।
बीजेश्वरं महावीरं
देवस्थले सुपूजितम्।।

सोलन क्षेत्र (जिला) को शिरगुल के अत्याचारों से बचाने वाले तथा देवथल मन्दिर में सुपूजित महावीर बीजेश्वर देवता को मैं प्रणाम करता हूं।

5. गर्गाख्यं हि मुनिं वन्दे
यदुवंशपुरोहितम्।
*सकारात्मकदृष्टिं मां
कर्मण्यतां च देहि मे।।

मैं यदुवंशियों (भगवान् कृष्णादि) के पुरोहित गर्ग मुनि को प्रणाम करता हूं ताकि वे मुझे सकारात्मक दृष्टि और कर्मण्यता प्रदान करें।

सकारात्मक दृष्टि का अभिप्राय है प्रत्येक काम या बात में अपनी ओर से कुछ शुभ जोड़ना।

6. दीक्षकं हि गुरुं वन्दे
गायत्र्यास्तु प्रदायकम्।
यन्मंत्रप्रकाशादेव
रचनेयं विरच्यते।।

मैं अपने गायत्री की दीक्षा देने वाले गुरु को प्रणाम करता हूं जिनके दिए मंत्र के प्रकशरूप में यह रचना रची जा रही है।

7. असंख्या: गुरवस्तत्र
अचेतनाश्च चेतना:।
प्रणतो हृदयेनास्मि
तेषां तेषां सुपादयो:।।

मैं अपने चेतन और अचेतन अनगिनत गुरुओं के चरणों में प्रणाम करता हूँ।

8. यात्ययं बैंशटू देव:
उक्तं हासेन केनचित्।
वासापुंजाच्च तत्कालं
सहसा सर्प आगत:।

देखो, यह बैंशटू देवता जा रहा है – किसी स्थानीय दर्शक ने कहा। उसी समय बैंशटी (वासा) की झाड़ी में से एक सर्प प्रकट हो गया।

(यह उस समय की घटना है जब शिरीषी लोग बातल से अपने इष्ट देवता के साथ अपने लिए निवास की खोज में ड्यारशघाट में देवता के भारी हो जाने से रूक गए थे। सुना जाता है कि देवता सर्प रूप में प्रकट होकर वैंशटी की झाड़ी में घुस गया था। देवता के इस प्रकटन पर उसी स्थान पर देव मन्दिर बनाया गया, जो आज भी प्रत्यक्ष है। प्राचीन काल में ड्यारश को नानू भी कहते थे और पीड़ित व्यक्ति देवता से न्याय की गुहार कर सकता था। खरेड़ी निवासी भी ड्यारश के कारिंदे हैं तथा ये भी मूलत: गर्ग हैं।)

9. निर्मितमस्ति तत्स्थाने
विशालमद्य मन्दिरम्।
समारोहेण दिव्येन
बीजेश्वरोऽपि पूज्यते।।

22. गढ़प्रान्तात् समायाता:

इयारशघाट में उसी स्थान पर आज विशाल मन्दिर बनाया गया है, जिसमें दिव्य समारोह के साथ बीजेश्वर देवता की भी पूजा होती है।

(क्षेत्रपति बीजेश्वर सहित यहां सभी देवी-देवताओं की नया अन्न आने पर पूजा व यज्ञ किया जाता है। देवोत्थान एकादशी व द्वादशी को यहां पंचायत स्तरीय मेला लगता है। देवता के पुजारी श्री जयदत्त शर्मा तथा देवपुरोहित श्री परसराम भारद्वाज हैं। सर्व श्री गणेश दत्त, श्याम दत्त, परसराम एवं इन्द्रदत्त मन्दिर प्रबन्धन समिति के सक्रिय सदस्य हैं।)

10. भरताख्यं पुरं त्यक्त्वा
ग्रामं बातलमागताः।
सदाचार युता एते
बागलं समतोषयन्॥

कभी पहले शिरीषी (गर्ग) लोग राजस्थान के भरतपुर को त्यागकर बातल गांव में आकर बसे थे। उन्होंने बागल रियासत के लोगों को अपने श्रेष्ठ आचरण से प्रसन्न किया था।

11. जनसेवी पुरा कश्चित्
भार्यया संप्रताडितः।
इयार गुहास्थ-वासान्ते
मूर्तिरूपेण पूजितः॥

पूर्व समय में एक समाजसेवी शरीषी अपनी पत्नी की प्रताड़नाओं के कारण बागल क्षेत्र की किसी गुफा में निवास करने के बाद मरणोपरान्त मूर्ति रूप में पूजा जाने लगा था।

वही शिरीषी इयारश देवता के नाम से आज भी जाना जाता है। परंपरानुसार लोकोपकारी मनुष्य या वस्तु देवता कहलाते हैं। कहते हैं कि शिरीष वृक्षों के समीप रहने के कारण गर्गों का एक टोला शिरीषी कहलाया। ये लोग यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा और त्रिप्रवर से संबन्ध रखते हैं।

12. परिहासेन राज्ञस्तु
ते बहिर्वासितास्तदा।
घाटं ड्यारशमागत्य
विश्रामं समवाप्नुवन्।।

किसी बात में राजा से मजाक करने पर ये लोग रियासत से निकाल दिए गए थे। वहां से आने पर उन्होंने ड्यारशघाट में विश्राम किया था।

(ड्यारशघाट बघाट (सोलन) के बारह घाटों में से एक है। सुना जाता है कि निर्दोष शिरीषियों के निष्कासन का श्राप या अभिशाप उस राजा को भोगना पड़ा था और राज्य में पुनः सुख–शान्ति की स्थापना के लिए इस क्षेत्र के एक शिरीषी बालक को येन केन प्रकारेण अपने राज्य में बसाना पड़ गया था।)

13. घाटेऽस्मिन् राजवैद्येन
स्थापिते शिवमन्दिरे।
शर्मणा माधवाख्येन
क्रियते धर्मसंग्रहः।।

ड्यारशघाट में राजवैद्य माधव शर्मा द्वारा स्थापित शिव मन्दिर में अनेक धार्मिक कार्य संपन्न किए जाते हैं।

शिरीष क्षेत्र के सर्वप्रथम आयुर्वेदाचार्य और राजा दुर्गा सिंह की जीवनी के लेखक स्व. श्री माधव शर्मा ड्यारशघाट के निवासी थे। उन्होंने अमृतसर में क्रांतिकारियों की मदद की थी। उन्होंने ही यहां सपरिवार शिवमूर्ति की प्रतिष्ठा राजा दुर्गा सिंह के हाथों विशाल उत्सव के साथ संपन्न करवाई थी। उनके भाई स्व. श्री मौजीराम ने साथ की नदी के ऊपर पुल सहित अनेक धर्मार्थ कार्य संपादित किए थे।

14. देवाज्ञया ततः सर्वे
धारग्रामं तु ते गताः।
अद्यापि गृहशेषाः हि
दृश्यन्ते समीपतः।।

अपने देवता की आज्ञा लेकर वे समीप के धार गांव की ओर चल दिए। आज भी उनके घरों के अवशेष वहां देखे जा सकते हैं।

(शिरीष बघाट का एक भोज था। 'धार' पुराना शिर्श कहा जाता था। यह परगना बोहचाली के अन्दर आता था। यह परगना धार गांव के दक्षिण की ओर था। धार से कई जिलों की पहाड़ियां नजर आती हैं। गर्मियों में यहां की हवा आनंददायक होती है। इस गांव में नल्हीमू का निर्मल जल बहुत स्वाद व स्वास्थ्यवर्धक है। इयारशघाट से धार के लिए सड़क हेतु अनेक लोगों ने अपनी उदारता का परिचय दिया है। यहां के मास्टर श्री टेकचन्द व ज्ञानचन्द प्रसिद्ध वाद्य कलाकार हैं। सुना जाता है कि धार में क्षत्रियों ने पहले कभी शिरीषी परिवार की सपुरोहित हत्या की थी।)

15. शांगड़ी ग्राम वास्तव्यः
नातिदूरात् समीपतः।
पुरोहितः नियुक्तः स्म
धार्मिकजीवनप्रियैः।।

समीप के शांगड़ी ग्राम से उन धार्मिक जीवनप्रिय लोगों ने अपना पुरोहित नियुक्त किया था।

(शांगड़ी के स्व. वैद्य श्री देवीदत्त अपने कर्म में निष्णात और शक्ति के परम उपासक थे।)

16. अल्पजनास्तु ततोऽपि
खंडोलं नहराख्यं च।
ग्रामं आश्रितवंतस्तु
नवं त्रिलोकसुन्दरम्।।

कुछ समय के बाद धार से भी कुछ लोग त्रिलोक सुंदर नहरा-खंडोल गांव में आकर बस गए।

गांव के विकास के मामले में अपने घरेलू सभी मतभेदों को भूल जाने में ही हित है।

(नहर का मतलब है नहर वाला। उपग्राम धाला से नदी में रामपुर तक का क्षेत्र नौरा-खंडोल है और ग्राम पंचायत चामत-बढ़ेच का यह एक वार्ड है। नदी का नाम बजराड़ है और काटली इसका सहायक नाला है जो इ्यारशघाट से आरंभ होता है।)

17. वन्यदृश्यं मनोहारी
वापी चैव गुहे स्थिता।
नदीतीरे कृषिः नव्या
जीवनं प्रगतिप्रियम्।।

यहां के वन्यदृश्य सुन्दर हैं। एक बावड़ी (शिंबल के खेत में) गुफा की तरह है। नदी के किनारे वैज्ञानिक खेती की जाती है। यहां का जीवन प्रगतिप्रिय है।

(इस गांव में एक पिछड़ी जाति का निवास भी है जो अब छोटे-छोटे व्यवसायों से अपना गुजारा करने लग गए हैं। नौरा या शिंबल का क्षेत्र में स्व. श्री रती राम एक प्रखर बुद्धिजीवी व्यक्ति हुए हैं। उपग्राम रामपुर के इंजी. गिरिराज वैज्ञानिक खेती करते हैं। स्व. श्री नानकचंद उर्दू के अच्छे ज्ञाता थे। श्री ईश्वरदत्त कर्मकाण्ड और वैद्यक में निपुण हैं।)

18. अथ घराट चिह्नानि
आनंदोत्पादकानि तु।
नदीतीरेषु दृश्यन्ते
पूर्वजानाभियान्त्रिकी।।

बजराड़ नदी में घराटों के खंडहर पूर्वजों की इंजीनियरिंग के कौशल के रूप में दिखाई देते हैं।

(उपग्राम नौरा के लोग नदी में घराट चलाते थे तथा सब्जियां उगाते थे। मिस्त्री श्री हरिमोहन ने सामुदायिक भवन हेतु जमीन देकर उदारता का परिचय दिया है। इस गांव में स्थित सरकारी प्राथमिक पाठशाला खंड एवं जिला स्तर पर खेल और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के लिए प्रसिद्ध है। यहां का प्राकृतिक वातावरण मनमोहक है।)

हमारे महान पूर्वजों के कौशल हमारे लिए प्रेरक और लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं।

19. वनेषु खाद्यनाशात् हि
वन्यजीवास्तु हिंसका:।
उत्पाद्यं औषधं तस्मात्
तेभ्य: सदा सुरक्षितम्।।

वनों में भोजन न मिलने से वन्यजीव हिंसक हो गए हैं, अत: खेतों में वन्य जीवों से सुरक्षित वनौषधियों की खेती करनी चाहिए।

20. सप्ततिवर्ष पूर्वं हि
ग्रामेऽस्मिन् सर्वशंसिते।
सहकारेण पूर्वेषाम्
वेदपाठ: स्म कार्यते।।

लगभग सत्तर वर्ष पहले उपग्राम धार की बेड़ में पूर्वजों के आपसी मेल से वेद की पाठशाला चलती थी।

(यह पाठशाला बघाट रियासत द्वारा मान्यता प्राप्त थी और वेदपाठ का स्वर शशल गांव तक सुनाई देता था। यहां की बावड़ी का जल निर्मल और मधुर है।)

21. करोल: दृश्यते रम्य:
दक्षिणे चैव सोलनम्।
मनोहरैर्वनैश्चैव
स्थालवच्चैव शोभते।।

गांव के सामने सुन्दर करोल पर्वत और दक्षिण में सोलन नगर बसा है। यह गांव सुन्दर वनों के बीच एक थाल की तरह शोभायमान है।

(सुना जाता है कि करोल पर्वत उस पर्वत का हाथ से गिरा हुआ एक हिस्सा है जिसे हनुमान जी उठाकर लंका ले गए थे। इसमें अनेक प्रकार की औषधीय जड़ी-बूटियां पाई जाती हैं। सोलन शूलिनी शब्द से बना है जो शूलधारिणी दुर्गा का एक नाम है। शूलिनी राजा बघाट की कुलदेवी हैं तथा बघाटी लोग इसके कल्याणे हैं। जून के महीने में शूलिनी (सोलन) का मेला व्यापक स्तर पर मनाया जाता है।)

यज्ञ का मतलब यह नहीं है कि रासायनिक पत्तलों से पर्यावरण की हानि की जाए।

रविदत्तो हि शास्त्रिण:।
स्वल्पमपि धनं प्राप्य
वेदपाठमकारयत्।।

गढ़वाल (पोला गांव) से आए श्री रविदत्त शास्त्री जी अल्पवेतन पाकर भी बालकों को वेदों का सस्वर पाठ करवाते थे।

23. लक्ष्मीदत्तो हि येनासीत्
गीतारामश्च येन तु।
यज्ञे यज्ञोपवीताख्ये
चासन्ये च दीक्षिता:।।

स्व. श्री लक्ष्मीदत्त (क्यार निवासी) और स्व. श्री गीताराम (लेखक के पूज्य पिता जी) सहित अनेक बालकों को उन्होंने गायत्री मंत्र की दीक्षा प्रदान की थी।

(उक्त दोनों पंडितों ने अपने जीवन (आयु) के चौथे चरण में अपने गुरुजी के दर्शन पोला में जाकर किए थे।)

24. घट्टीवासी अभूच्चापि
दुर्गानन्द: सहायक:।
बरयाड़ी निवासी च
हरिनन्दोऽप्यपाठयत्।।

घट्टी गांव के वैद्य श्री दुर्गानंद और बरयाड़ी के श्री हरिनन्द (दोनों स्व.) श्री रविदत्त के साथ सहायक अध्यापक रहे थे।

25. तदेव ह्यद्य देवठ्यां
उच्चतरेण हि संस्थित:।
स्मारयति शिरीषीयं
गौरवं लोकविश्रुतम्।।

आज वही पाठशाला देवठी में सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में शिरीष भोज के गौरव की याद दिलाती है।

(बाद में इस पाठशाला को लोअर मिडल स्कूल बनाकर देवठी को स्थानान्तरित किया गया था।)

26. मुनिलाल हरी रामौ
गण्यन्ते यज्ञकर्मिषु।
अन्ये चैव विराजन्ते
नैककार्येषु दीक्षिताः।।

श्री मुनिलाल और हरीराम पौरोहित्य करते हैं। अन्य भी अनेक लोग अपने-अपने कार्यों में दीक्षित (निपुण) हैं।

(श्री मुनिलाल के पूर्वज स्व. श्री उमादत्त राजा बघाट के दरबारी पंडित हुए हैं। श्री हरीराम कृषि, शिल्पकला एवं हास्य तथा धार्मिक प्रवचन में निपुण हैं। नौरा खंडोल में महिला सहायता समूह की अध्यक्षा श्रीमती मीरा देवी हैं। पुरुष सहायता समूह की अध्यक्षता श्री हीरामणि करते हैं।)

27. ग्रामेऽस्मिन्नेव संजाताः
पुरा राजपुरोहिताः।
उपाकुर्वन् बघाटस्थं
राजवंशं मनोहरम्।।

नहरा खंडोल के पुरोहितों ने बघाट के मनोहर राजवंश को उपकृत किया था।

(इसी गांव के स्व. पं. श्री पीतांबर दत्त राजकीय संस्कृत महाविद्यालय सोलन में उपप्राचार्य पद पर विराजमान रहे थे।)

28. पूर्वस्मिन् नदिका अस्य
जलमुत्थापितं यतः।
अंत्यसंस्कारभूमिश्च
शिवधाम इव राजते।।

गांव के पूर्व में स्थित बजराड़ नदी से जल उठाया गया है, जहां पर श्मशान भूमि शिवधाम की तरह विराजमान है।

(यहां पर पर्यावरण की सुरक्षा के लिए शवदाह की आधुनिकतम् तकनीकी सुविधा की परम अपेक्षा है। गांव की शामलात जमीन के आधुनिकीकरण के अभियान का नेतृत्व श्री श्यामदत्त कर रहे हैं। आयुर्वेद के विकास में भी इनके परिवार के प्रयास सराहनीय हैं।)

29. धालास्थे उपग्रामे
गायत्री मन्दिरं स्थितम्।
यत्रागत्य जनाः सर्वे
शमाप्नुवन्ति पूजया।।

उपग्राम धाला में गायत्री मन्दिर विराजमान है जहां सभी लोग पूजा करके शान्ति प्राप्त करते हैं।

(गायत्री आदिमाता हैं। शक्तिस्वरूपा हैं। यह सारा ब्रह्माण्ड गायत्रीमय है। ये ब्रह्म अथवा परमात्मास्वरूपा हैं। इनकी उपासना से सारा ब्रह्माण्ड उपासित होता है। कण-कण उपासित होता है। इनकी उपासना से प्रत्येक जीव व परमाणु के साथ मैत्री भाव उत्पन्न होता है तथा परमात्मा की तरह सबके प्रति करुणा का भाव उत्पन्न होता है। सारे ब्रह्माण्ड में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की मधुर ध्वनि गूंजने लगती है। समस्त जीवों की शुभ इच्छाएं पूरी होने लगती हैं। परमात्मा, जीव और परमाणु परमानन्द के भाव में डूबने लगते हैं। संपूर्ण ब्रह्मामण्ड आनंदित होने लगता है। संपूर्ण ब्रह्माण्डीय देवी-देवताओं के अशीर्वाद की वर्षा होने लगती है और समस्त सांसारिक समस्याएं भाग खड़ी होती हैं।

गायत्री मंदिर के निर्माण में गांव के लोगों ने भरपूर सहयोग दिया है, आर्थिक भी और हार्दिक भी। मन्दिर के पास बावड़ी और पीपलादि अनेक वृक्ष प्रकृति के सौंदर्य को बढ़ाने वाले हैं। सार्वजनिक लाभदायक कार्यों में सहयोग देने में यहां के लोग एक से बढ़कर एक हैं। मन्दिर के पास ही हर वर्ष पशु रक्षक देवता 'परिहाड़' का यज्ञ किया जाता है, जिसके संचालक एवं कोषाध्यक्ष श्री हेमराम हैं।)

30. प्रतिष्ठायां विशेषज्ञैः
चंद्रदत्तादि शास्त्रिभिः।
मिलित्वा बहुभिर्विज्ञैः
प्रदत्ताः स्म शुभाशिषः।।

गायत्री की प्रतिष्ठा के समय श्री चंद्रदत्त शास्त्री आदि विद्वानों ने उपस्थित श्रद्धालुओं को अपने शुभाशीर्वाद देकर उपकृत किया था।

(अन्य विद्वानों में श्री परसराम भारद्वाज और श्री कृष्णानंद शास्त्री (गांव झाजर के) आदि के उपकार भी अविस्मरणीय रहेंगे।)

31. ब्राह्मणास्तु शिरीषीयाः
जगद्धरेस्तु सेवकाः।
संगच्छध्वमितीमं हि
मंत्रं ते संस्मरन्ति च।।

शिरीष ग्रामसमूह के ब्राह्मण विश्वरूप भगवान के सेवक हैं और अपने जीवन में 'मिलकर काम करो' इस वैदिक संदेश का पालन करते हैं।

(जन्म लेने वाले तो सारे संसार के मनुष्य एक समान हैं परन्तु अपने श्रेष्ठ आचरण से जो संसार को उपकृत करने का प्रयत्न करते हैं वे ब्राह्मण कहलाते हैं। श्रेष्ठकर्मी मनुष्य (ब्राह्मण) को ही आदर्श मानकर शेष मनुष्य अपने जीवन को सार्थक करते हैं। अपने हित के साथ सबके हित के लिए काम करना ही श्रेष्ठ आचरण अथवा ब्राह्मणत्व है। संसार का प्रत्येक उत्तम पुरुष (सत्कर्मी) ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी होता है। सत्कर्मशीलता में ही ब्रह्म (विश्वरूप भगवान) के दर्शनों का अनुभव होता है, यही वास्तव में ब्राह्मणत्व है। अतः मनसा, वाचा और कर्मणा ब्राह्मणत्व की प्राप्ति के लिए मनुष्य मात्र को प्रयत्न करना चाहिए। मन, वाणी और कर्म की निर्मलता और पवित्रता ब्राह्मणत्व का प्रधान अंग है।)

मिल जुलकर काम करना तो वैसे भी बघाटी बोली और जनजीवन का सारतत्व है। इस प्रसंग में बघाट की एक प्रतिनिधि लोककथा प्रस्तुत 33.

केवल श्रेष्ठ (परोपकारी) आचरण ही ब्राह्मण का लक्षण है।

है–'भला भाइ अरो बुरा भाइ'। दो भाइ थे, एक भला अरो एक बुरा। दोनों बाटा री जाओ थे। बुरे खे एक चणे रा दाणा मीला। भूखे तो थे, भले बि आधा दाणा मांगा। बुरे दे दिया। आवका चलदे मीला एक शेला री गुनी आला। बुरा तेसदे शेल छड़ोणि लगा। भले बोला जे ईशा न करे। बुरे बोला, काड मेरा आध ा दाणा चणेरा। भला चुप हो गोआ। तिणिए शेल पोरे छड़ोए। आवका मीला एक छाइ री मांगटी आला। तेसके बि तिशा ही किया। आवका मीला एक हला रे फाले आला। तेसके बि तिशा ही किया। आवका मीला एक ढोला आला। तेसके बि तिशा ही किया। सारा समान लय रो दोए चल पड़े। बाटा दे पड़ गोइ रात, से एकी गुफा मांए चले गोए। राति आया तींदा राक्ष। तिणिए पूछा जे भीतरे कुण। बुरे बोला जे आऊँ घोघड़। राक्षे बोला जे दरवाओ आपणी गूंजा। बुरे शेला रि गुनी पोरि शेटि। राक्ष तेते देख रो डर गोआ। तिणिए बोला जे थुक रो बताओ। बुरे छा पोरि गरड़ावि। तबे बोला जे आपणे दांद दरवाओ। बुरे हला रा फाला पोरा शेटा। तबे बोला जे आपणा पेट बजाय रो दरवाओ। बुरे ढोल पोरा डबडेवा। बस, तबे का था राक्ष शाद शुण रो आपणि गुफा छाड रो ही नठा। दोनों भाइ रे करतब शुण रो लोके तीना खे खूब इनाम दीते अरो सारे बघाटि खुशी साय आपणा जीवन बितावणि लगे। कथा रा सारांश इ असो जे मिलजुल रो बुद्धि रा इस्तेमाल करनि साय बड़े बड़े संकट टल जाओ अरो सभी लोका खे सुख पहुंचो।

32. सोलन–कून यात्रायां
मध्ये विराजते अयम्।
केनचित् पूर्वपुण्येन
द्रष्टुं हि शक्यते तदा।।

सोलन–कून बसयात्रा के समय शिरीष (ड्यारशघाट) बीच में दिखाई देता है। इस पुण्यक्षेत्र के दर्शन किन्हीं पूर्वपुण्यों से ही संभव हैं।

(ड्यारशाघट से जुड़ने वाली छोटी सड़कों हेतु दी गई अपनी जमीनों के द्वारा लोगों ने महान् उदारता का परिचय दिया है।)

व्यक्ति का स्वाभाविक कर्म ही श्रेष्ठ कर्म होता है।

संध्याकाले पथि भ्रान्त्या
श्रुत्वा शंखं पदे पदे।
तीर्थपुरीं विचारेषु
सहसा स्म कल्पते।।

सायंकाल कोई यात्री पद-पद पर शंखध्वनि सुनकर किसी तीर्थपुरी की कल्पना करने लगा था।

34. कत्यारा शशल ग्रामौ
पैड़ी च त्राशड़ी तथा।
नल्होग नावणी चैव
चामत बेरटी शुभौ।।

शिरीष के अन्दर कत्यारा, शशल, पैड़ी, त्राशड़ी, नल्होग, नावणी, चामत और बेरटी आदि गांव गिने जाते हैं।

(बढ़ेच दाड़वा और खरेड़ी भी इसी क्षेत्र में आते हैं। नावणी में मशरूम उद्योग दर्शनीय है। शशल क्षेत्र का सबसे बड़ा गांव हैं। शशल से रामपुर (नदी) की ओर निकली सड़क रियासत के समय की है।)

35. शिरीषीया: इमे ग्राम्या:
एकत्रैव विराजिता:।
वेदसंस्कृतिसंपन्ना:
मनस्विनश्च कर्मठा:।।

शिरीष के ग्रामीण लोग वैदिक संस्कृति से संपन्न, विचारक और कर्मठ हैं तथा सदा परस्पर एकता के भाव से रहते हैं।

(बघाट में एक कहावत प्रसिद्ध है- 'कानां पाएं जुगड़ा अरो धरा खे हाका'। अर्थात् जुआ कंधे पर और आवाजें घर को। नासमझ आदमी प्राय: यही करता है परन्तु शिरीषी लोग अपने पास पड़ी वस्तु को अधिक महत्व देते हैं। ये समझते हैं कि इनके काम की वस्तुएं सदैव उनके साथ हैं और वे इनसे दूर नहीं हैं। जो वस्तुएं उनके काम की नहीं वे उनके पास होती भी नहीं और स्वकर्मरत व्यक्ति परकर्म का आदर करता है।

उसके लिए दूसरों का मुंह भी नहीं ताकते, न ही आवाजें लगाते हैं। अतः अपनी प्रतिभा को तराशने का नित्य प्रयास करते हैं।)

36. कत्यारा शाकदुग्धाय
नल्होगस्य च पाचकाः।
पुष्पेभ्यः त्राशड़ी–पैड़ी
मन्यन्ते हि विशेषतः।।

कत्यारा सब्जी और दूध, नल्होग रसाई के कार्यों और त्राशड़ी–पैड़ी फूलों के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध हैं।

37. दाड़वास्थाः घटकाराः
लौहकाराः तथैव च।
अद्ययावद् हि लोकेषु
प्रसिद्धाः सन्ति कर्मतः।।

दाड़वा के कुंभकार और लौहकार आज तक अपने काम के लिए लोगों में प्रसिद्ध हैं।

38. पूर्वजाः त्राशड़ी ग्रामे
अभवन् अद्भुताः नराः।
यन्त्रीकृत्य स्म गृह्यन्ते
व्याघ्राः यैस्तु भयंकराः।।

त्राशड़ी गांव के अद्भुत पूर्वज हिंसक बाघों को यंत्र बनाकर पकड़ते थे।

(शिरीषी लोग जीवन की उच्चता के प्रति सदैव सावधान रहते हैं। स्वास्थ्य की प्राप्ति को ये अपना मौलिक अधिकार समझते हैं। घर व गांव में सफाई रखते हैं। पीने का पानी बावड़ियों से भरते हैं। बावड़ियां साफ रखते हैं। जूते बावड़ी से दूर उतारकर फिर कपड़े से छानकर पानी भरते हैं। जल को वरुण देवता मानकर पूजते हैं। कुल मिलाकर जलीय स्थानों को साफ रखते हैं। इंद्रियों

की दासता नहीं करते। केवल स्व शरीर या जीवन के अनुकूल वस्तु को ग्रहण करते हैं प्रतिकूल वस्तु से दूरी बनाए रखते हैं।

ग्रामीण लोग विशेष कामों और उत्सवों पर एक-दूसरे की सहायता करते हैं, उसे ब्वारा कहा जाता है। आम जीवन में भी जिस काम से किसी दूसरे की हानि न हो रही हो उस काम में दूसरों की अवश्य सहायता करते हैं। शुभ, श्रेष्ठ और परोपकारी कामों में कभी कहीं बाधा नहीं डालते।)

39. ग्रामेषु नेउआ मूर्तिः
यत्र तत्रैव च दृश्यते।
पूर्वेतिहासरूपा हि
पूज्यतेऽद्यापि शाश्वतम्।।

गांवों में नेउआ या प्रेतों की मूर्तियां कहीं-कहीं देखी और पूजी जाती हैं, ये गांवों के पूर्वजों के आपसी संबन्धों को दर्शाती हैं।

40. वस्त्रे कमीज-पाजामा
पूड़ादिकं च भोजनम्।
पटांडा अस्कुली चैव
लुश्का-शर्करादिकम्।।

कपड़ों में कमीज-पाजामा और विशेष भोजनों में पूड़ा, पटांडा, अस्कुली, लुश्का और शक्कर माने जाते है।।

41. न किंचिद् गृह्यते वस्तु
इष्टदेवार्पणं विना।
तदर्थं च विना दत्तं
आसुरमेव मन्यते।।

प्रत्येक वस्तु भगवान् को भोग लगाकर ही ग्रहण की जाती है। कोई भी वस्तु भगवान से प्रसाद रूप में न लेने से वह वस्तु आसुरी मानी जाती है।

(परंपरा से असुर अपने से ऊपर किसी और अदृश्य/अननुभूत शक्ति को नियंता नहीं मानते, अतः अपने और वस्तुओं के प्रति उनका अहंकार बढ़ता ही जाता है। एक दिन यह अहंकार या अहंता ही उनकी विनाशक बन जाती है। अतः शिरीषी लोग इस दुर्भाव से किसी भी वस्तु को ग्रहण नहीं करते, क्योंकि यही दुर्भाव आज का भौतिकवाद है।)

42. इ्यारशस्य समीपे च
रम्या नगरकोटिका।
शिरीषीणां कुलेष्टेयं
वज्रेश्वरीति मन्यते।।

इ्यारशघाट के समीप शिरीषियों की कुलमाता नगरकोटी अथवा वज्रेश्वरी का सुन्दर मन्दिर है।

(नगरकोटी देवी का मूल स्थान 'नगरकोट धाम' कांगड़ा में है। यहां सती माता का दायां स्तन गिरा था। यहां मूल मंदिर पांडवों ने बनाया था। उसका प्रबंध केन्द्रीय सरकार करती है। पुराणों के अनुसार 'कालीकट' राक्षस ने धरती पर अत्याचारों के साथ देवताओं को भी स्वर्ग से निकाल दिया था। ऋषियों और देवताओं ने चंडीयज्ञ किया। इंद्र ने उनसे रूष्ट होकर अपना वज्र यज्ञ में डाल दिया। यज्ञकर्ताओं की प्रार्थना पर देवी ने प्रकट होकर इंद्र को शांत किया और कालीकट का वध कर दिया। उसके बाद देवी का नाम वज्रेश्वरी पड़ा।)

43. अस्यैव निकटे उच्चे
दृश्यः प्रस्तरविस्तरः।
प्रतीकं तच्च लोकेषु
युद्धस्य गोरखा जनैः।।

नगरकोटी मन्दिर के सामने की पहाड़ी पर पत्थरों का ढेर लुटेरे गोरखों के साथ लड़ाई का प्रतीक है।

44. प्रत्यक्षं ब्रह्म गायत्री
ब्रह्मत्वाय उपास्यते।
तेजो हि वर्धते देहे
दृष्टिः विभ्वी च जायते।।

गायत्री माता प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं। ब्रह्मभाव की प्राप्ति के लिए उनकी उपासना करते हैं। शरीर में आत्मशक्ति बढ़ती है और सोच व्यापक हो जाती है।

(मनुष्य के अंदर ब्रह्मत्व अथवा सर्वोपकारित्व का भाव लाने के लिए यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता है। यह दिव्य भाव सर्वोपकारी गुरु, दिव्य औषधियों एवं मंत्रों के प्रभाव से शिष्य में संचारित होता है।)

45. स्व स्व कर्मरतैः सर्वैः
अल्पकालो न लभ्यते।
अतः त्रिकालसंध्या तु
प्रातरेव विधीयते।।

लोग व्यस्ततावश अपनी त्रिकालसंध्या प्रातःकाल में ही कर देते हैं।

46. स्नानाद्याचमनं कृत्वा
अर्घ्यादिकं तथैव च।
ब्रह्माण्डान्तर्गतं तेजः
जनैः उपास्यते सदा।।

स्नान, आचमन और अर्घ्यादि करके ब्रह्माण्ड के अंदर विद्यमान शक्ति गायत्री की उपासना करते हैं।

47. धार्यते उपवीतं तु
सर्वैः सुपात्र बालकैः।
तैश्चोपदिश्यतेऽन्येभ्यः
वेदोक्त सुफलाप्तये।।

अपने स्वाभाविक कर्म से ब्रह्मानुभूति संभव होती है।

सभी सुपात्र बालक यज्ञोपवीत धारण करते हैं। वेदोक्त फल प्राप्ति के लिए वे इसे अन्यों को उपदिष्ट करते हैं।

48. वेदाः यच्छन्ति नः दृष्टिं
ब्राह्मीं सर्वोपकारिणीम्।
यया सर्वोपकारेण
अर्थयामः स्वजीवनम्।।

वेद हमें ब्रह्ममयी, सर्वोपकारिणी ब्रह्ममयी दृष्टि प्रदान करते हैं, जिससे हम सर्वोपकार के द्वारा अपने जीवन को सार्थक करते हैं।

49. कीदृशमपि कर्म स्यात्
ब्रह्मर्थं भवतीह तत्।
येन न लक्ष्यते ब्रह्म
कर्म तदुच्यते वृथा।

कोई भी काम हो, वह केवल ब्रह्म (विश्व) के लिए किया जाता है। इसके विपरीत किया जाने वाला कर्म वृथा होता है।

(जिस काम को करने में जो व्यक्ति सक्षम होता है, वही कर्म उसका भगवत्प्रदत्त कर्म होता है। इसी कर्म को करने से वह परमसुख को पाने का अधिकारी बनता है। उसके विपरीत समस्त कर्म व्यक्ति को परमसुख से वंचित कर देते हैं।)

50. न्यूनः नैव श्रमः कश्चित्
न्यूना तु दृष्टियते।
कर्म तदेव उच्चस्थं
सर्वार्थं यद् विधीयते।।

संसार का कोई भी काम छोटा नहीं होता। छोटी तो केवल सोच होती है। काम तो वही बड़ा होता है जो सर्वहितार्थ किया जाता है।

परमात्मा के लिए किए जाने वाले कर्म में परमात्मा का वास होता है।

51. स्वकर्मण्येव विश्वासः
सर्वेषामिह दृश्यते।
परकर्म परेषां हि
इति मत्वा न सज्जते।।

दुनिया में सभी का अपने काम में विश्वास देखा जाता है। परकर्म को पर का समझ कर उसमें आसक्ति नहीं रखते।

52. जगदर्थं कृतं कर्म
सर्वमुच्चं हि वर्तते।
सर्वप्रियं जगद्ब्रह्म
ब्रह्मणे सकलं प्रियम्।।

विश्वहित में किया गया हर काम ऊंचा होता है। विश्वरूप भगवान सभी को प्यारे हैं और भगवान् भी उसी से प्यार करते हैं।

53. सूर्यशक्तेरयं मन्त्रः
येन हि धारितं जगत्।
जपनादस्य मंत्रस्य
जीवनं क्रियते महत्।।

गायत्री मंत्र सूर्य की शक्ति का मंत्र है जो संसार को धारण करता है। इस मंत्र को अर्थपूर्वक जपने से जीवन का स्तर बढ़ता है।

54. जीवोऽजीवो जगत्सर्वं
सूर्यरश्मिसमुद् भवम्।
गायत्रीवर्णसंबद्धं
ज्ञायते नित्यजापकैः।।

जीव और अजीव संसार, जो कि सूर्य किरणों से पैदा हुआ है – वह गायत्री के चौबीस अक्षरों से जुड़ा है तथा गायत्री जापकों के द्वारा अनुभव किया जाता है।

परोपकारी का ध्यान करने से हम भी परोपकारी बन सकते हैं।

55. कामं मंत्राः दशैव स्युः
कुर्वन्ति विधिना जपम्।
जायते तद्वशं तेजः
आगत्य सूर्यमंडलात्।।

भले ही विधिपूर्वक दस मंत्र ही क्यों न जपे जाएं, उससे सूर्यमंडल से आकर तेज जापक के वश में हो जाता है।

56. शोषयति यथा तापः
विषाणून् हि जलाशयात्।
धारितं हि तथा तेजः
शरीरस्य विषानपि।।

जिस प्रकार से सूर्य का ताप जलाशय में विषाणुओं को सुखा देता है उसी प्रकार धारण किया गया सूर्य का तेज शरीर के विषों को सुखा देता है।

57. सूर्यशक्तिः यथालोकं
उपकरोति सर्वदा।
प्रेरयति तथा बुद्धिं
उपकर्तुं हि मानवम्।।

सूर्य की शक्ति जिस प्रकार नित्य संसार को उपकृत कर रही है उसी प्रकार वह समस्त बुद्धियों को मानवोपकारार्थ प्रेरित कर रही है।

58. ध्यायति हि जनः यत् यत्
तत् तत् सः जायते स्वयम्।
सूर्यशक्तिगुणाः ध्यानात्
प्रविशन्ति स्वभावतः।।

मनुष्य जिस-जिस वस्तु का ध्यान करता है वह उस-उस वस्तु के गुणानुसार रूप ग्रहण करता है। सूर्यशक्ति के गुणों के ध्यान से वह शक्ति भी उसके अन्दर प्रवेश कर जाती है।

शिव का सच्चा भक्त अपने कष्टों (विषों) को पी (भूल) जाता है।

59. ब्रह्माण्डे यानि तत्त्वानि
अलगन् अस्य सर्जने।
तान्येव चात्र तत्त्वानि
देहेष्वपि भवन्ति हि।।

ब्रह्माण्ड की रचना में जो-जो तत्त्व लगे हैं वे सभी तत्त्व समस्त शरीरों की रचना में भी लगे हैं।

60. सूर्यस्य उपकारात् च
विशन्ति प्रेरणाः शुभाः।
तस्मादेवोच्यते लोके
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

सूर्य भगवान की प्रेरणा से जीवों के अन्दर शुभ प्रेरणाएं प्रवेश करती हैं, अतः व्यवहार में कहा जाता है-'धियो यो नः प्रचोदयात्'।

61. सूर्यः प्रभूः शिवः साक्षात्
नित्यं कल्याणकारकः।
पिबन् कंठे जगद्दोषान्
स्वकर्त्तव्यात् न मुच्यते।।

भगवान् सूर्य साक्षात् कल्याणकारी (नीलकंठ) शिव हैं, जो संसारी लोगों के अपराधोंको अपने कंठ में धारण करते हुए कभी अपने कर्त्तव्य से मुक्त नहीं होते।

62. शिववच्च नरः कुर्यात्
कंठे हि दोषधारणम्।
सहमानः परेषां दोषान्
जगदुपकरोतु सः।।

मनुष्य भी भगवान् शिव की तरह दूसरों के दोषों को सहता हुआ संसार के कल्याण का भागीदार बने।

सबके साथ संतुलित व्यवहार करने से व्यक्तित्व का विकास होता है।

63. प्राप्तं परोपकाराय
वस्तु विधाय साधनम्।
सूर्यवत् उदयं गच्छेत्
अस्तं चैव स्वभावतः।।

पारिवारिक वातावरणानुसार प्राप्त वस्तुओं को विश्वोपकार का साधन बनाकर सूर्य की तरह उदित और अस्त होता रहे।

64. उदये नास्तु उच्चत्वं
हीनत्वं नैव पश्चिमे।
प्रेरयेत् सूर्यशक्तिर्यत्
मनसा तत्समाचरेत्।।

उन्नतिलाभ में अभिमान न हो और न ही अवनति में हीन भावना। सूर्यशक्ति जो भी प्रेरणा दे, उसका हृदय से अनुपालन करे।

65. शिरीषं च शरीरं च
परार्थौ विहिताविह।
आहर्तुं हि सहकारेण
तापं हि जगतो महत्।।

शिरीष का वृक्ष और मनुष्य शरीर दोनों इस संसार में परोपकार्थ रचे गए हैं ताकि वे मिलकर संसार के दूषित पर्यावरण रूप ताप को दूर कर सकें।

(शिरीष या सिरिस का वृक्ष बहुत लाभदायक माना जाता है। यह 4000 फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है। यह 50 – 60 फुट तक ऊंचा होता है तथा इसके पत्ते इमली के पत्तों जैसे होते हैं। सर्दियों में इसके पत्ते झड़ जाते हैं। हवा चलने पर इसके पत्ते आपस में बजकर आवाज करते हैं। गर्मियों में इस पर फूल तथा सर्दियों में फल लगते हैं। यह एक मांगलिक वृक्ष है तथा इसके पत्ते बहुत कोमल होते हैं। इसका फूल लू की लपटों में भी खिलता हुआ नजर आता है। यह एक विषघ्न द्रव्य है। यह त्रिदोषशामक, कुष्ठ और कासनाशक

तथा वृद्धावस्था के रोगों पर प्रभावी माना जाता है। इसके बीजों पर शिवलिंग जैसा निशान पाया जाता है। इससे बनने वाली औषधियां शिरीषाद्यरिष्ट, पंचिशिरीष अगद तथा दंशागलेप प्रसिद्ध हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में इस वृक्ष का विस्तृत वर्णन है।)

66. ऋष्यनुभूतमार्गेण
लोभं विमुच्य सर्वत:।
सूर्यवृक्षादिवत् तथा
परार्थाय हि जीवनम्।।

ऋषि-मुनियों के अनुभूत मार्गानुसार लोभ को त्यागते हुए सूर्य-वृक्षादि प्राकृतिक पदार्थों की तरह हमारा जीवन परोपकार के लिए रचा गया है।

67. निर्दोष: सहते तापं
लोभिना प्रतिपादितम्।
लोभी करोति दुर्वृत्तं
नूनं फलति साधुषु।।

लोभी द्वारा किए गए अपराधों को निर्दोष सहते हैं। लोभी द्वारा किए गए दुराचारों के फल सज्जन भोग रहे हैं।

68. यज्ञसूत्रमिदं पुण्यं
पवित्रं मार्गदर्शकम्।
लक्ष्यं ददाति न: दिव्यं
सूर्यशरणमागतान्।।

भगवान सूर्य के शरणागतों हेतु यज्ञोपवीत पवित्र मार्गदर्शक है। यह हमें अलौकिक (भगवदर्थ कर्मरूप) उद्देश्य प्रदान करता है।

69. आदिमन्त्र: अयं प्रोक्त:
आदिगुरुश्च दीक्षक:।
संध्यातव्यौ उभौ नित्यं
संध्यकाले विशेषत:।।

गायत्री मंत्र आदि मंत्र और इसका दीक्षक आदिगुरु कहलाता है। इनका नित्य ध्यान करना चाहिए, विशेषकर प्रातः संध्याकाल में।

70. शक्तिरूपा हि सूर्योर्जा
बिन्दुरूपेण दृश्यते।
धारणात् जीवनं तस्य
अधारणादजीवनम्।।

शक्तिरूप सूर्योर्जा बिंदुरूप में नजर आती है। उसे धारण करने से जीवन तथा न धारण करने से मृत्यु प्राप्त होती है।

71. गायत्री प्रेरिका लोके
सैव च रचनात्मिका।
तस्मात् नित्यं शुभां भक्त्या
गायत्रीं विधिना जपेत्।।

गायत्री संसार में प्रेरणादायिका और रचनात्मिका है। अतः पवित्र गायत्री को भक्तिपूर्वक जपते रहना चाहिए।

72. श्रद्धामूला फलप्राप्तिः
श्रद्धामूलं हि जीवनम्।
यो यदिच्छेत् जनः लोके
स तस्यानु गामिनी।।

मन्त्र जप फल प्राप्ति श्रद्धामूलक है। जो जिस प्रकार का फल चाहता है वह वैसा फल देती है।

73. चेतना बहुरूपेयं
गायत्री चेह कीर्त्यते।
यस्मादिच्छति यत्कार्यं
तां तथा विदधाति सा।।

हमारी चेतना शक्ति बहुरूपिणी है जो गायत्री कहलाती है। जिस वस्तु से जो कार्य लेना चाहती है उसको वैसा ही बना देती है।

74. ऋषीणामनुभूतिं यः
आप्तुमिच्छति सारतः।
गायत्रीमाश्रयेत् पुण्यां
सर्वजनोपकारिणीम्।।

ऋषि-मुनियों के दुर्लभ अनुभवों को जो सारांश रूप में संचित करना चाहता है उसे व्यक्तिमात्र का उपकार करने वाली पवित्र गायत्री का सहारा लेना चाहिए।

75. अस्यां वेदपुराणानि
ज्योतिषं योग एव च।
सूक्ष्मा विज्ञान दृष्टिश्च
कामधेनुश्च कीर्त्यते।।

गायत्री मंत्र के अन्दर वेद, पुराण, ज्योतिष, योग और सूक्ष्म वैज्ञानिक दृष्टि निहित है। यह साक्षात् कामधेनु है।

76. भूरिति सर्वदेहानां
मनसां विदितं भुवः।
स्वरिति चेतसां प्रोक्तं
जपात् ब्रह्माण्डधारणम्।।

'भूः' से समस्त शरीरों का, 'भुवः' से समस्त मनों का और 'स्वः' से समस्त आत्माओं का धारण होता है। गायत्रीमंत्र के जप से संपूर्ण ब्रह्माण्ड का धारण होता है।

77. भर्गस्तस्य प्रभोर्मूर्तिः
ध्यायते शुभकांक्षिभिः।
क्रियते च सदा यत्नः
प्रीत्यर्थं जगतः तथा।

'भर्ग' देवता उस परमात्मा की साक्षात् मूर्ति है, शुभाकांक्षी जिसका ध्यान करते हैं। इसके साथ ही वे संसार की भलाई के लिए प्रयत्न भी करते रहते हैं।

78. मूर्तरूप प्रभाबिन्दुः
सर्वजगत्प्रकाशकम्।
मन्त्रध्येयमिदं प्रोक्तम्
जपस्तदर्थभावनम्।।

परमात्मरूप यह प्रकाशाबिंदु सारे संसार को प्रकाशित करता है। मन्त्रार्थ रूप इसी बिन्दु को जप का ध्येय बनाया जाता है।

79. सुखगंगा वहत्यस्मात्
सर्वानंद प्रदायिनी।
विस्मृत्यापि न हि त्याज्या
प्रातःकाले विशेषतः।।

इस प्रकाशबिंदु से सुख की गंगा बहती है जो सर्वानन्द प्रदायिनी है। इसका जप कभी भूलकर भी नहीं त्यागना चाहिए, विशेषकर प्रातःकाल के समय।

80. सूत्रोत्सवं यदा गेहे
पितृभ्यः कठिनं भवेत्।
ब्राह्मणसभयाऽऽयोज्यं
इ्यारशमन्दिरादिषु।।

माता-पिताओं के लिए यदि घरों में उपनयन संस्कार करवाना कठिन पड़े तो इसका आयोजन ब्राह्मणसभा के माध्यम से इ्यारशदेवतादि के मन्दिरों में किया जाना चाहिए।

81. विप्रसभा विचारज्ञैः
स्थापिता सोलने शुभा।
कल्याणार्थं हि विप्राणां
अशक्तानां विशेषतः।।

विचारकों ने ब्राह्मणों, विशेषकर अशक्तों की सहायता के लिए सोलन में ब्राह्मण सभा की स्थापना की है।

82. प्रसिद्धमस्ति संजातम्
इ्यारशं ब्रह्मकर्मणे।
क्रियन्ते यज्ञसंस्कारा:
मन्यते तीर्थसदृशम्।।

यज्ञीय कर्मकांड के लिए ड्यारशघाट प्रसिद्ध हो गया है। यहां तीर्थ के समान इस स्थान पर यज्ञ और संस्कार किए जाते हैं।

83. उपकारोऽपि यज्ञो हि
गीताप्रोक्त: सुनिश्चित:।
गायत्री प्रेरणाजन्य:
विज्ञैरत्र विधीयते।।

गीता में परोपकार को भी यज्ञ कहा गया है। गायत्रीमन्त्रार्थ से प्रेरणा पाकर विद्वान लोग परोपकार करते हैं।

84. गायत्र्या जपिन: कर्म
ब्रह्ममयं तु जायते।
सर्वजीवेषु आत्मानं
वस्तुषु चैव पश्यति।।

गायत्रीजापक के कर्म ब्रह्ममय हो जाते हैं। वह समस्त जीवों और वस्तुओं में अपनी चेतना के दर्शन करने लगता है।

85. साधनं हि जगन्मत्वा
साध्यं च परमेश्वरम्।
साधने सज्जते नैव
साध्ये सदा सज्जते।।

गायत्री माँ अथवा परमात्मा से प्राप्त प्रेरणा हमारी सारी इच्छाएं पूरी करती हैं।

विद्वान संसार को साधन मानकर उसमें आसक्त नहीं होता अपितु अपने साध्य परमेश्वर में आसक्त होता है।

86. गार्हस्थ्यं च विना शक्तिं
पत्नी संततिरेव च।
निरर्थकाः हि दृश्यन्ते
यथा वृक्षाः विपत्रकाः।।

शक्ति (चेतना के अनुभव) के बिना गृहस्थी, पत्नी और संतानें उसी तरह व्यर्थ दिखाई देते हैं, जैसे बिना पत्तों के पेड़।

87. अपनीतो यदि व्यस्तः
अन्यो वा तादृशो भवेत्।
श्रद्धया मन्दिरं गत्वा
यज्ञार्थं किंचित् त्यजेत्।।

यज्ञोपवीतधारी या अन्य कोई भी श्रद्धालु व्यक्ति अधिक व्यस्ततावश सविधि गायत्री का जप न कर सके तो उसे मन्दिर में जाकर यज्ञार्थ कुछ द्रव्य दानपात्र में डाल देना चाहिए।

88. देव्याः वरं इच्छेत्
सत्प्रेरणां हि केवलम्।
प्रेरणया धृतं सर्वं
सर्वलोकाभिवांछितम्।।

मां गायत्री से केवल सत्प्रेरणादानरूप वरदान मांगना चाहिए। उसकी प्रेरणा के अन्दर वे सभी वरदान निहित हैं जो कुछ भी सारा संसार चाहता है।

89. देवशक्तिं गृहीत्वैव
व्यक्तित्वं जायते महत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः
इत्युक्तिं चरितार्थयन्।।

व्यस्त लोगों के लिए यज्ञ का साधन मन्दिर है।

मन्त्र के देवता की शक्ति का संचय करने से व्यक्तित्व महान् बनता है क्योंकि वह उस अवस्था में दूसरों को कुछ देने के बाद ही स्वयं भोजनादि ग्रहण करता है।

90. मन्दिरेषु हि पूजात:
यज्जायते च संचय:।
यज्ञार्थं तेन दत्तेन
प्राप्यन्ते आशिष: शुभा:।।

मन्दिरों में जमा धन से किए जाने वाले यज्ञ से देवताओं के शुभाशीष प्राप्त होते हैं।

91. व्यस्ते चैव युगेऽस्मिन्
गेहे यज्ञ: सुदुष्कर:।
तस्मात् पूजोत्सवादिषु
मन्दिरं शरणं व्रजेत्।।

इस व्यस्त युग में घर में यज्ञादि उत्सव करना कठिन हो गया है, अत: पूजोत्सवादि के लिए मन्दिरों का सहारा लेना चाहिए।

92. ब्रह्मार्थं जीवनं मत्वा
ब्रह्मतेजश्च धारयन्।
स्वकर्म आचरन्नित्यं
आनंदं वितरन्ति ते।।

लोग जीवन को ब्रह्मार्थ जानकर, ब्रह्मतेज को धारण करते हुए तथा नित्य स्वकर्म (अपनी क्षमता का काम) करके अन्य लोगों में आनंद को बांटते हैं।

93. हानिरहित कार्येषु
परोपकारपरेषु च।
योगदानं यथाशक्ति:
विज्ञैरत्र विधीयते।।

हानिरहित परोपकारपूर्ण कार्यों में सज्जन लोग यथाशक्ति अपना योगदाने देते हैं।

94. आत्मानं हि जगन्मत्वा
तत्समस्याश्च चिंतयन्।
ददातीह सदा योगं
जगतां जीवप्रीतये।।

संसार के अन्दर अपनी आत्मचेतना का अनुभव करके तथा उसकी समस्याओं पर विचार करते हुए समस्त जीवों की प्रसन्नता के लिए व्यक्ति अपना योगदान देता है।

95. ब्रह्मरूपं हि संपाद्य
कर्म स्वर्गायते जगत्।
अतद्रूपं च तत्कर्म
तदेव नरकायते।।

स्वकर्म को भगवान् का रूप मानकर संसार स्वर्गीय सुख प्रदान करता है। कर्म को भगवत रूप न मानने से यही संसार नारकीय दुःख प्रदान करता है।

96. वृक्षाणां रोपणं कृत्वा
जीवानां चैव रक्षणं।
एतज्जगतद्धितार्थाय
विपरीतं विनाशकम्।।

वृक्षारोपण करके जीवों की रक्षा करने से जगत् का हित होता है और इसके विपरीत आचरण से जगत् का विनाश होता है।

97. पूजायां सत्यमूर्तेस्तु
परमात्मैव लक्ष्यते।
कर्मणा पूज्यते सत्यं
कृत्वा चापि नृणां हितम्।।

भगवान् सत्यनारायण की पूजा में परमात्मा को लक्ष्य बनाया जाता है। मनुष्यमात्र का हितसाधन करके भी सत्य भगवान की पूजा की जाती है।

98. स्थानीय देवपूजासु
मूर्तिमात्रं न लक्ष्यते।
परमात्मानमाहूय
तत्पूजनं विधीयते।।

स्थानीय कालिका आदि देवताओं की पूजा मात्र मूर्ति मानकर नहीं की जाती, अपितु उसमें साक्षात् परम चेतना का आवाहन करके की जाती है

99. ग्रामेषु कालिका मुख्या
मन्यते ग्रामरक्षिका।
पूज्यते सा नवान्नेषु
प्राप्तेषु च विपत्तिषु।।

ग्रामों में कालिका माता मुख्य देवता है जो ग्राम की रक्षक मानी जाती है। इनको नई फसल आने पर तथा विपत्तियों में पूजा जाता है।

100. देवता परिहाड़ः च
जनानां पशुरक्षकः।
मंत्रीपदमलंकृत्य
सर्वहृत्सु विराजते।।

देवता परिहाड़ लोगों के पशुओं के रक्षक हैं तथा देवता के मंत्री के रूप में लोगों के हृदयों में विराजते हैं।

101. यज्ञस्तु परिहाड़ार्थं
ग्राम्यैः भाटीति कथ्यते।
प्रायः सर्वेषु यज्ञेषु
स्वोत्पादितं समर्प्यते।।

परिहाड़ की प्रसन्नता हेतु किए जाने वाले यज्ञ को भाटी कहते हैं। आम तौर पर यज्ञों में अपने हाथ की उपजाई चीजें भेंट की जाती हैं।

102. वर्षाभावे हि ग्रामेषु
यद् यज्ञस्तु विधीयते।
उच्यते भुजड़ू नाम्ना
नृत्यन्ति चैव जोगड़े।।

वर्षा के अभाव के निवारणार्थ किए जाने वाले यज्ञ को भुजड़ू कहा जाता है तथा विकल्प के रूप में जोगड़े भी नाचते हैं।

103. वृष्टयामत्र च खंडायाम्
धारग्रामे विशेषतः।
समर्च्यते शिलादेवः
विप्रोक्तः नभगामिना।।

खंडवृष्टि होने पर विशेषतया धार ग्राम में जाकर आकाश की ओर जाने हुए ब्राह्मण के द्वारा बताए गए शिलादेव की पूजा की जाती है।

104. प्रतिदिनं जलाभावः
यथा यत्रानुभूयते।
वापीतडाग शोभायां
संलगन्ति तथा तथा।।

प्रतिदिन जैसे और जहां जल का अभाव अनुभव किया जा रहा है, वैसे-वैसे लोग बावड़ियों और तालाबों की शोभा बढ़ाने लग गए हैं।

105. पश्यन्ति भौतिकं वस्तु
न केवलं तद् बाह्यतः।
आलंब्य चेतनां दृष्टिं
भुंजन्ते संयमेन तत्।।

वनौषधि उत्पादन चिकित्सा एवं पर्यावरण दोनों दृष्टियों से लाभदायक है।

विज्ञ योग प्रत्यक्ष वस्तु को केवल बाहर से ही नहीं देखते, वे आत्मदृष्टि के सहारे संयमपूर्वक वस्तुओं का उपभोग करते हैं।

106. सर्वहानिकरीं ज्ञात्वा
कृषिमद्य अजैविकीम्।
समाकृष्टाः हि जायन्ते
कृषकाः जैविकीं प्रति।।

आजकल रासायनिक खेती को सबके लिए हानिकर जानते हुए कृषक लोग रसायनरहित (प्राकृतिक) खेती के प्रति आकृष्ट हो रहे हैं।

107. अद्य प्रकृतिकोपेन
पूर्वकृषिर्हि नश्यति।
वनौषधिकृषिः चैव
सुरक्षितं प्रतीयते।।

आजकल दूषित पर्यावरण के प्रकोपवश पुरानी खेती नष्ट हो रही है तथा वनौषधियों का उत्पादन सुरक्षित प्रतीत हो रहा है।

108. तुलसीपीपलौ पुण्यौ
कुमारी अमृतादि च।
वनात् क्षेत्रमानीय
उत्पाद्यन्ते तु शाकवत्।।

तुलसी, पीपल, कुमारी और गिलोय आदि पवित्र वृक्षों को वनों रो खेतों में लाकर सब्जियों की तरह उगाए जा रहे हैं।

कुमारी : कुमारी या ग्वारपाठा एक पंचवर्षीय पौधा है। इसके अंदर के पीले रस को जैल या एलुआ कहते हैं। यह सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा होता है। इसका जड़ वाला अंकुर ही इसका बीज होता है। एक पौधे से अनेक बीज निकल आते हैं। इसकी खेती आसान और लाभदायक है। इसके गूदे को सहने लायक गर्म करके जोड़ों के दर्दों या जख्मों पर रखने से आराम मिलता है। फोड़ों पर इसका गूदा मलना चाहिए। ताजा जैल ही प्रभावकारी होता है।

एक नशेड़ी किसी भी विचार गोष्ठी को भंग कर सकता है।

पपीता : पपीता घर–आंगन की शान है। यह एक बहुवर्षीय पौध है। यह ज्यादा ठंड और जमा पानी पसंद नहीं करता। इसकी जड़ें केवल 4–5 फुट गहराई मांगती हैं। आधा इंच मिट्टी में बीज रोपकर 15 दिन में अंकुर फूट जाते हैं। पोलीथिन के लिफाफे में अंकुरित करके गड्ढे में लगाना उत्तम है। यह थोड़े पानी में भी गुजारा कर लेता है। इसके दुधिया पदार्थ से पेट के रोगों की नाशक दवाइयां बनती हैं।

दाड़ू : दाड़ू बघाट क्षेत्र का प्राकृतिक और मूल्यवान वृक्ष है। इसके आरोपण की जरूरत प्रायः नहीं पड़ती फिर भी रक्षणीय है। इससे दाडिमाद्यष्टक चूर्ण और दाडिमावलेह बनते हैं। इसका अनारदाना अतिसार, खांसी और अरूचि में लाभदायक होता है। इसके पत्तों को पीसकर पानी में मिलाकर पीने से अतिसार नष्ट होता है। पिसा लेप कीटदंश, आग से जले पर और दाद पर लगाने से आराम मिलता है। नकसीर में कली पीसकर नाक में लगाने से रक्तप्रवाह रूक जाता है। मुंह व गले के रोगों में इसके क्वाथ का कुल्ला लाभदायक होता है। यह पित्त (गर्मी) के प्रकोप को शान्त करता है। यह मूत्रल है। रक्तपित्त का शामक है। इसकी जड़ का छिलका तीव्र कृमिनाशक है। पिसी कली पानी में पीने से अतिसारनाशक है। वात और कफ दोषों का शामक है। यह लवणभास्कर चूर्ण का एक घटक है। मीठा दाड़ू या अनार त्रिदोषनाशक माना जाता है।

जैट्रोफा या रतनजोत : इसके पत्तों के दूध से असाध्य जख्म भर जाते हैं। इसमें कैंसर रोधक तत्त्व होते हैं। रबड़ की तरह यह एक सजावटी पौधा है। इसे पैदा करना आसान है तथा हर जगह हो जाता है। बीजों से नर्सरी जून में तथा टहनियां गाड़कर नर्सरी जुलाई में पैदा की जाती है। यह सदा हरा रहता है तथा पशु इसे नहीं खाते, अतः बाड़ का काम भी करता है।

रबर प्लांट : बढ़ी हुई पर्यावरण प्रदूषणजन्य पार्थिव गर्मी में इस वृक्ष का मूल्य वही जान सकता है जिसने इसे अनुभव किया हो। आजकल सौंदर्यवर्धक पादपों में इसकी गणना होती है परन्तु साथ में यह बहुमूल्य 109.

छायादायक भी है। यह प्लांट बाजार में भी उपलब्ध है तथा जुलाई के महीने में टहनी से भी पैदा किया जा सकता है। घर के समीप घनी छाया देता है। पत्ते हरे-नीले मोटे और बड़े होते हैं, जिन्हें पशु भी बड़े स्वाद से खाते हैं। लोग इसकी लंबी फैलने वाली जड़ों से डरते हैं परन्तु मेरा अनुभव इसके विपरीत है। तपती गर्मी में केवल यही एकमात्र रक्षक है, ऐसा मेरा विश्वास है। यह सदाबहार है तथा समस्त पत्ते एक ही बार में नहीं झड़ते।

अन्य स्थानीय वनौषधिगुण तालिका

स्थानीय नाम	आयुर्वेदिक नाम	दोषनाशक
ब्राह्मी	ब्राह्मी	त्रिदोष
पुनर्नवा	पुनर्नवा	त्रिदोष
पिपली	लाल मिर्च	कफ-वात
कचूर	कचूर	वात
कोलथ	कुलथ	वात-कफ
भांगरा	भृंगराज	कफ-वात
चीचा	चित्रक	वात
संभालु	निर्गुण्डी	कफ-वात
शेरो	सर्षप	कफ-वाज
मेथे	मेथी	वात
खैर	खदिर	कफ-पित्त
बैंशटी	वासा	कफ-पित्त
करयाल	कचनार	कफ
बहेड़ा	विभीतक	त्रिदोष
पपीता	एरंडकर्कटी	कफ-वात
आंवला	आमलकी	त्रिदोष
पलाह	पलाश	कफ
इरण	एरण्ड	कफ
हरड़	हरीतकी	त्रिदोष
धाय	धातकी	कफ-पित्त
बैर	बदरी	वात-पित्त

दानभारमविज्ञाय
मत्वा च विश्वमातरम्।
स्त्रष्टुः कोपविनाशाय
कन्याभ्रूणाभिरक्षणम्।।

कन्या को दान का का भार न जानकर तथा इसे विश्वजननी जानकर सृष्टि रचयिता ब्रह्मा के कोप के विनाश हेतु कन्या भ्रूण की सबको रक्षा करनी चाहिए।

110. वृद्धाः अनुभवसिद्धाः
प्राप्नुवन्ति हृदाऽऽदरम्।
युगानुरूपं हि वर्तेते
पितापुत्रौ परस्परम्।।

वृद्ध अनुभवों के खजाना होते हैं। वे लोगों से बहुत आदर पाते हैं। आजकल पिता-पुत्र युगानुरूप परिस्थितियों को समझकर परस्पर प्यार से रहते हैं।

111. भ्रातृभिः सहकारेण
क्रियन्ते नित्यमुत्सवाः।
कामं दूरे पृथक् चुल्ली
हृदयेषु समीपता।।

भाई-भाई मिलकर नित्य उत्सव मनाते रहते हैं। भले ही उनके चुल्हे दूर हों, हृदय से समीप रहते हैं।

112. समानं दीयते शिक्षा
सम्मानमपि तादृशम्।
विचारा इह नारीणां
आद्रियन्ते हि सर्वदा।।

स्त्रियों को समान रूप से शिक्षा दी जाती है, आदर भी समान है। यहां स्त्री के विचारों का भी आदर होता है।

113. यान्त्रिके जीवनेऽद्यत्वे
मेलनमत्र सुदुर्लभम्।
अतः सेवासमूहेन
नन्दन्ति सहसेवया।।

वर्तमान मशीनी जीवन में आपस में मिलना कठिन हो गया है, अतः लोग सेवासमितियों के माध्यम से सेवा का आनंद लेते हैं।

114. मानमग्रे ही रक्षन्ति
धनं कुर्वन्ति पृष्ठतः।
मानहीनः मृतः प्रोक्तः
मानयुतो हि मानवः।।

लोग मान को आगे रखते हैं तथा धन पीछे की ओर। क्योंकि मानरहित मृत कहा जाता है और मानयुक्त जीवित मानव।

115. मानं परमतं दत्वा
स्थापयन्ति ततः निजम्।
एवं सर्वप्रसादाय
यत्नं कुर्वन्ति सर्वदा।।

लोग दूसरे के मत को महत्त्व देकर फिर अपने मत को प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार सर्वजनप्रसन्नतार्थ सदा प्रयत्न करते हैं।

116. विमुच्य व्यसनं दूरात्
स्वकर्मणे वसन्ति ते।
मदकारी अबोधाय
इति मत्वा न सज्जते।।

दुर्व्यसन या नशे की कोई सीमा नहीं होती।

लोग नशों से दूर रहते हैं तथा केवल अपने कर्त्तव्य हेतु जीते हैं। नशे को बुद्धिनाशक जानकर उसमें आसक्त नहीं होते हैं।

117. आदरमतिथीनां च
नित्यं कुर्वन्ति सज्जनाः।
प्रतिनिधिं हि तं मत्वा
पूजयन्ति प्रभुमात्मनः।।

सज्जन लोग मेहमान को अपने परमात्मदेवता का प्रतिनिधि मानकर उसका आदर करते हैं।

118. योगेन प्राप्यते स्वास्थ्यं
योगेनानंद आप्यते।
योगेन जगदैक्यं च
योगेन किं न लभ्यते।।

योग से स्वास्थ्य प्राप्त होता है। योग से आनंद प्राप्त होता है। योग से संसारी जीवों के साथ एकता का भाव पैदा होता है। योग से वांछित वस्तु मिलती है।

119. अरक्षितान् पशून्नेते
वन्यान् वा गृहपालितान्।
पीडितान् हि रक्षन्ति
भगवान्निव जीविनः।।

लोग असुरक्षित अथवा पीड़ित पालतू एवं जंगली पशुओं को भगवान् द्वारा प्राणियों को सुरक्षा दिए जाने की तरह सुरक्षा प्रदान करते हैं।

120. न वानरेषु हनूमान्
दृश्यतेऽत्र केवलम्।
राजते सर्वजीवेषु
ज्ञानेनैव दृश्यते।।

हर जीव के अंदर बसने वाली परमचेतना आदरणीय होती है।

यहां के लोग हनूमान जी को केवल वानरों में ही नहीं देखते बल्कि अपने ज्ञाननेत्र से सब जीवों के अंदर देखते हैं।

121. वस्तु जीवः नरः चैव
निर्मिताः सप्रयोजनम्।
तत्तद गुणमवेक्ष्यैव
अनुशंसन्ति सर्वदा।।

विधाता ने संसार में सभी वस्तुएं जीव और मनुष्य सप्रयोजन बनाए हैं। लोग उनमें से प्रत्येक के गुणों को प्रोत्साहन देते हैं।

122. प्रत्याशिनः गुणे दृष्ट्वा
आर्जवं चैव कौशलम्।
प्रेषयन्ति विकासाय
निर्वाचनादनंतरम्।।

प्रत्याशी के ईमानदारी और विकास कार्य सम्बन्धी कौशल दो गुणों को देखकर उसे संसद के लिए चुना जाता है।

123. हानिकरमत्र दृष्ट्वा
आरक्षणमरिप्रियम्।
सर्वैरपेक्ष्यतेऽद्यत्वे
अर्थाश्रितं हि रक्षणम्।।

शत्रुप्रिय हानिकारक आरक्षण नीति को देखकर अब सभी लोग देश में अर्थाधारित रक्षण चाहते हैं।

124. निष्फलायां चिकित्सायां
योगिन्यन्तर्महादिषु
दशेशो यो भवेन्नीचः
देयं तस्मै हि निश्चितम्।।

...लोगों में वैमनस्य पैदा करता है।

यदि औषधियां काम न कर रही हों तो महा-अंतर-योगिनी दशाओं का जो स्वामी नीच का हो उसके निमित्त तत्संबन्धी द्रव्य का दान करने से लाभ होता है।

125. कार्यं विचार्य पंचांगम्
विधेयं सर्वदा शुभम्।
सामंजस्यं हि एतेन
ब्रह्मणा सह जायते।।

शुभ काम सदा पंचांगशुद्धि देखकर करना चाहिए। इससे कार्य का ब्रह्म (परमात्मा) के साथ सामंजस्य बैठता है।

126. प्रायः सामान्य पीडासु
यवानी गृह्यते सदा।
उष्णरोगेष्वशीतेन
शीतेषु कवोष्णेन।।

आम तौर पर उदरादि की सामान्य पीड़ाओं में अजवायन गर्म तासीर वालों को सादे पानी से और ठंडी तासीर वालों को कोसे पानी से दी जाती है।

अजवायन : यह कीटाणुनाशक और पीड़ा को हरने वाली है। यह ठंड को हरती है। मंदाग्नि और अरूचि को दूर करती है। पित्तवर्धक है। पाचन संस्थान को सुधारती है। गर्भाशयशोधक हैं। कीटदंश या चर्मरारोग पर इसके लेप से लाभ होता है। वात-कफ दोषहारी है तथा आर्तव (मासिक) को प्रवृत्त करती है। गैसनाशक है। इसका धुआं सूंघने से जुकाम दूर होता है। अजवायन की राख गोघृत में मिलाकर जख्म पर लगाने से जख्म भरता है।

तीन प्रधान प्रकृतियां

वातप्रकृतिप्रधान व्यक्ति : चंचल स्वभाव, रचनात्मक और गतिशील होता है। रोगी की नाड़ी तेज और अनियमित होती है। मैदा, बेसन और ठंडी चीजों के सेवन से वायु प्रकपित होकर अफारा और जोड़-दर्द आदि लक्षण पैदा करता है। वातशान्त्यर्थ रेशेदार पत्ते, सोयाबीन, सौंफ और इलायची आदि का सेवन लाभदायक होता है।

पित्तप्रकृतिप्रधान व्यक्ति : तीक्ष्ण स्वभाव, महत्त्वाकांक्षी और साहसी होता है। रोगी की नाड़ी भारी और उत्तेजित होती है। चीनी, नमक, मिर्च, मसाले, नशा और खट्टी चीजों से पित्त प्रकुपित होकर पित्ती, छाले, चर्मरोग, हृदयरोग, एलर्जी, रक्ताल्पता, कैंसर और मधुमेहादि के लक्षण पैदा करता है। अनार और सौंफ आदि के सेवन से ये लक्षण कम होते हैं।

कफप्रकृतिप्रधान व्यक्ति : गंभीर, कोमल और अंतर्मुख होता है। रोग में नाड़ी की चाल मंद और कोमल होती है। पानी, घी, तेल, दूध, दही और मीठे के अधिक प्रयोग से सर्दी, कफ, मोटापा और श्वासरोग के लक्षण पैदा हो सकते हैं। आंवला, तुलसी और सोयाबीन आदि इन लक्षणों को घटाते हैं।

कुछ स्वास्थ्यप्रद जानकारियां

1. रस से पदार्थ के गुणों का पता चलता है।
2. मधुरस वात और पित्त को शांत करता है।
3. हल्के भोजनों में गोदुग्ध, खिचड़ी और दलिया हैं।
4. शहद गर्म और कफनाशक होता है।

अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण है संतुलित वात-पित्त और कफ।

5. बेल का चूर्ण अतिसार को शांत करता है।
6. फ्लु से रक्षा हेतु छना पानी और काली मिर्च प्रयोग करें।
7. ठंडी और गर्म चीजें एक साथ खाना हानिकारक हैं।
8. दूध वात और पित्त का शामक है।
9. रक्तचाप कैसा भी हो, अर्जुनारिष्ट से दूर होता है।
10. गोघृत लगाने से घाव की जलन मिटती है।
11. अप्राकृतिक चीजें पाचनशक्ति को खराब करती है।
12. गेहूं ठंडा और पित्तशामक होता है।
13. मक्की शुष्क और वातवर्धक होती है।
14. इलायची रक्तस्राव को बंद करती है।
15. चावल गित्तशामक होते हैं।
16. रूक्ष चीजें कफ को शांत करती हैं।
17. मुलेठी जलन को शांत करती है।
18. स्वास्थ्य लाभ से ही धन और धर्म संभव है।
19. ऑक्सीजन की कमी से कैंसर की कोशिकाएं बढ़ती हैं।
20. बेमौसमी फल-सब्जियों में गुण कम होते हैं।
21. उपवास और सादे भोजन से नई ऊर्जा मिलती है।
22. उत्तम स्वास्थ्य संतुलित पित्त (पाचन शक्ति) पर निर्भर है।
23. बाथू त्रिदोषहर होता है।
24. धनिया त्रिदोषहर, मूत्रल और ज्वरनाशक है।
25. शहद से कफ शान्त होता है।
26. गर्म घी वातशामक है।
27. ठंडा पानी पित्तशामक है।

28. अप्राकृतिक और रासायनिक पदार्थ कैंसरजनक होते हैं।

29. छना पानी, प्राणायाम और मधुर संगीत कैंसर के प्रभाव को कम करते हैं।

30. किसी प्रकार के भी दर्द में गर्म प्रकृति वाले आदमी को आधा चम्मच पिसी मेथी ठंडे पानी से तथा ठंडी तासीर वाले को कोसे पानी से लेनी चाहिए।

31. दर्दों वाले स्थान पर इसका भिगोकर लेप भी किया जा सकता है।

127. कस्यामपि समस्यायां
कष्टे मनसि वर्धिते।
कुलवृद्धं हि संप्राप्य
समाधानं हि आप्नुयात्।।

किसी भी समस्या में मानसिक कष्ट बढ़ने पर अपने कुलवृद्ध से आदरपूर्वक समस्या के समाधान का तरीका जानना चाहिए।

श्री भगवदर्थ कर्मशील मानवमात्र के लिए

'गायत्री संध्या'

डा. राधाकृष्णन ने ठीक ही कहा था कि जब व्यक्ति अपनी पवित्र परंपराओं पर से विश्वास खो बैठता है तो उसे दर्शन (समुचित ज्ञान) की आवश्यकता पड़ती है। प्राचीनतम गायत्री (वैदिक) संध्या इसी लक्ष्य को पूरा करती है। कर्मकांड वैदिक सनातन तत्त्व की साधना का एक महत्त्वपूर्ण विज्ञान है। हमें अपने श्रद्धेय महर्षियों के प्रति नतमस्तक होना चाहिए कि उन्होंने सर्वोपयोगी व्यावहारिक कर्मकांड के अंतर्गत दर्शन आयुर्वेद, ज्योतिष, योग और तंत्र (प्रणाली) जैसे उपविज्ञानों का बड़ी कुशलता के साथ समावेश किया है। क्यों न जन्मदिनोत्सव पर केक काटने जैसी नकारात्मकता के स्थान पर दीर्घायुप्राप्त प्राचीन देवताओं (महापुरुषों) का वेदोक्त रीत्या पूर्वांगादिपूजन करके वांछित सुखपूर्ण दीर्घायु प्राप्त की जाए। इसी तरह 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' को अपनाकर क्यों न शिशु का नाम सकारात्मक अर्थबोधक रखा जाए।

आयु का विज्ञान हमें आयु (जीवन) दायक परहेज की सीमाओं में रखता है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए सीमाएं हैं। सीमाओं में रहकर ही असीम की प्राप्ति संभव है। व्यक्तिगत सीमाओं में रहकर ही स्वास्थ्य एवं जीवन की सुरक्षा संभव है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रकृति के अनुसार भोजन, व्यवहार और जड़ी-बूटियों के सेवन से स्वस्थ रह सकता है। व्यक्तिगत प्रकृति की सीमाओं को लांघना स्वेच्छा से अपने आप को रोगों के हाथों में सौंपना है।

रंगीन किरणों का विज्ञान ज्योतिष जीवमात्र को सात भागों में बांटता है-पिता (सू.), माता (चं.), भाई (मंगल), मित्र (बु.), गुरु (बृ.), पत्नी

(शु.) और पुत्र (श.)। जिसकी जन्मकुंडली में जो रंग (गृह) कमजोर होता है वह उससे संबंधित रिश्ते द्वारा अभिशप्त होता है। उस रंग की वस्तु के दान से वह रिश्ता सहायक बन जाता है, ऐसा देखा गया है।

योग विज्ञान श्वास (जीवन) को अनुशासित करने पर बल देता है। इसमें प्राकृतिक आंगिक चेष्टाओं के द्वारा श्वास, शरीर और जीवन को भगवत्प्राप्ति के योग्य कोमल बनाया जाता है। बिना प्रणवादि जप के प्राप्त लचीलापन भगवत्प्राप्ति में सहायक नहीं होता है। सर्वजीवहितार्थ अपना काम करना सर्वोत्तम योग है, बिना किसी भगवादि वस्त्र धारण किए।

तंत्र उपासना की प्रणाली का नाम है। यह सत्वगुण की प्रधानता में सुखकारक, रजोगुण की प्रधानता से उन्नतिदायक और तमोगुण (हिंसा) की प्रधानता से हानिकारक (मारक) हो जाती है। तंत्र को वास्तव में तमोगुण की प्रधानता ने कलंकित किया है, जबकि एक आवश्यक सीमा के अंदर तमोगुण (प्राकृतिक) जीवन की स्थिरता के लिए सहायक है। यहां तमोगुण का अभिप्राय केवल नशा नहीं, अपितु भौतिकता के प्रति आसक्ति भी है।

गायत्री बुद्धि या ज्ञान की मां हैं। ये हमें जीवमात्र की भलाई करने की प्रेरणा देती हैं। हमारे वैज्ञानिक महर्षियों ने गायत्री को सर्वोत्तम वेदमंत्र बताया है। समस्त जीवों और अजीवों में निवास करने वाली गायत्री माता साक्षात् परमात्मशक्ति हैं। शक्ति और शक्तिमान् अर्थात् पार्वती और परमेश्वर दोनों अभिन्न हैं, केवल नामभेद है। जनेऊ गायत्री की मूर्ति है। जनेऊ धारण करने से व्यक्ति श्रेष्ठ (ब्राह्मण) कहलाता है। जनेऊधारी व्यक्ति को मंत्रजप के द्वारा शुभकार्यार्थ प्रेरणा प्राप्त होती है। शुभ कार्यों से प्रसन्न परमात्मा सर्वविध संपत्तियों से संपन्न कर देते हैं।

1. ॐ भूः भुवः स्वः = हम ब्रह्माण्ड स्वरूप।
2. तत्सवितुःवरेण्यम् = भगवान् सूर्य की उस भजने योग्य
3. भर्गो देवस्य धीमहि = भर्ग देवता (ईश्वरी ऊर्जा) को धारण करते हैं
4. धियो यो नः प्रचोदयात् = जो हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में लगाते हैं।

आयुर्वेदानुसार बुद्धि का लोप करने वाले द्रव्य को नशा कहते हैं।

विशेष : *जो लोग नशा करते हैं वे भगवान् की प्रेरणा को अपनी बुद्धियों में आने से रोकते हैं।*

1. स्नान करते हुए भगवत्स्मरण :

ॐ समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनं डिते।
विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।
ॐ कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्।।
ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्वदे सिन्धु कावेरि जलऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
ॐ ब्रह्मामुरारिः त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतौ बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।। आदि

(दाएं हाथ के अनामिका-मध्यमा व अंगुष्ठ के द्वारा प्रत्येक कर्म के साथ मन्त्र बोलें)

2. शक्तिरूपा शिखा को गांठ देते हुए :

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेज समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजोवृद्धिं कुरूष्व मे।।

3. मध्य अंगुली से अपने मस्तक पर विपत्तिनिवारक पवित्र चंदन का तिलक -

ॐ चंदनं महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी तिष्ठति सर्वदा।।

4. गणेशादि पंचायतन देवताओं सहित समस्त अभीष्ट देवी-देवताओं को प्रणाम (ठाकुर पूजा) :

श्री गणेशाय नमः। श्री पंचायतनदेवताभ्यो नमः। क्रमशः.................।।

उपचार पूजन परोपकारी देवताओं की सेवा है।

5. समस्त देवताओं का उपचार पूजन :
श्रीगणपत्यादिदेवताभ्यो नमः।
आसनपाद्यादिकसर्वोपचारान् समर्पयामि।।

6. अपने लिए पृथक जल से दायां हाथ धोकर तीन बार आचमन :
ॐ केशवाय नमः। माधवाय नमः। नारायणाय नमः।।
हाथ धोएं - ॐ हृषीकेशाय नमः।

7. देवता के शुद्ध जल पात्र में से एक आचमन जल बाएं हाथ पर रखकर दाएं हाथ से अपने ऊपर छिड़कें :
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः।।

8. आचमन से तष्टे में विनियोग छोड़ें :
ॐ पृथीवीति मंत्रस्य मेरूपृष्ठऋषिः
सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।।

9. धारणार्थ पृथिवी माता से प्रार्थना :
ॐ पृथिवी त्वया धृता लोकाः त्वं च विषणुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासमन्।।

10. तष्टे में सूर्य भगवान को अर्घ्य (जल) दान :
ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

11. समस्त भयनाशक देवता भैरव जी को प्रणाम :
तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि।।

12. अर्घे में तिल जौ और कुशमोटक रखकर संकल्प छोड़ें :

परोपकारी देवता की पूजा का मतलब है परोपकार भाव की पूजा।

ॐ श्री विष्णु: विष्णु: विष्णु: श्री ब्रह्मण: द्वितीय परार्धे श्वेत वाराहकल्पे जंबूद्वीपे भरतखंडे श्री आर्यावर्तान्तर्गते हिमवत एकदेशे पुण्यक्षेत्रे अमुक ग्रामे/नगरे अमुक संवत्सरमासतिथिवारेषु अमुक गोत्रोतपन्न: अमुकराशि: अमुकनामा अहं सपरिवार: सविश्वकुटुंब: निर्मल पवित्रात्मोपरि आच्छादित दोषावरण क्षयार्थं तथा च श्रीगायत्रीपरमात्मशक्ति प्रीत्यर्थं त्रिकालसंध्यापूर्वकं देवर्षियमपितृतर्पणं करिष्ये।।

13. दाएं अंगूठे से दायां नथुना दबाएं तथा अनामिका से बाएं नथुने का स्पर्श करके श्वास खींचे तथा इसके विपरीत अंगुलियों से श्वास छोड़ें (सब धीरे-धीरे) तथा उस प्राणायाम के बाद हाथ धोएं :

ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहित धियो यो न: प्रचोदयात् ॐ भूर्भुव: स्वर् ॐ।।

14. जल के अंदर के रस रूप अमृत का ध्यान करते हुए आचमन :

ॐ अन्त: चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुख:। त्वं यज्ञ: त्वं वषट्कार: आपो ज्योती रस: अमृतम्।।

15. उदीयमान सूर्य के अन्दर की दृष्टि शक्ति के ध्यान के साथ स्वस्थ जीवनार्थ प्रार्थना :

ॐ तत् चक्षु: देवहितं पुरस्तात् शुक्रं उच्चरत् पश्येम शरद: शतम् जीवेम शरद: शतम् श्रृणुयाम शरद: शतम् प्रब्रवाम शरद: शतम् अदीना: स्याम शरद: शतम् भूय: च शरद: शतात्।।

16. सूर्यमंडल से पधार रही किरणों में सुंदर बालिकारूप गायत्री माँ का ध्यान:

ॐ बालां विद्यान्तु गायत्रीं लोहितां चतुराननां रक्तांबरद्वयोपेतां अक्षसूत्रकरां तथा कमंडलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम् ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोक निवासिनीम् मन्त्रेणावाहयेद् देवीं आयान्तीं सूर्यमंडलात्।।

17. यज्ञ की साधनभूत अपराजेय गायत्रीशक्ति का आवाहन :

ॐ तेजोऽसि शुक्रमसि अमृतमसि धामनामासि प्रियं देवनामनाधृष्टं देवयजनमसि।।

18. अनंतरूप धारिणी विना पद, एक पद और अनेक पदों वाली परमात्मशक्ति गायत्री माँ से आत्मछादक मलों के निवारणार्थ प्रार्थना :

ॐ गायत्री असि एकपदी द्विपदी त्रिपादी चतुष्पदी अपदसि न हि पद्यसे।

नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परो रजसे असावदो मा प्रापत्।।

19. विनियोग करें :

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः देवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता गायत्री जपे विनियोगः।

20. मजबूत माला के प्रत्येक मनके पर मंत्रार्थ सहित दिव्य प्रकाशबिन्दु के ध्यान के साथ मंत्र का मौन उच्चारण :

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

21. पृथिवी पर एक आचमन जल डालकर मध्यमा से उस जल को तिलकस्थान पर लगाएं :

ॐ शं शक्राय नमः।।

22. अंगों की रक्षार्थ प्रार्थना :

तत्पदं पातु मे पादौ
जंघे में सवितुः पदम्
वरेण्यं कटिदेशं तु
नाभिं भर्गस्तथैव च।

देवस्य मे तु हृदयं
धीमहीति गलं तथा
धियो में पातु जिह्वायां
यः पदं पातु लोचने
ललाटे नः पदं पातु
मूर्धानं मे प्रचोदयात्।।

23. पूर्ववत् आचमन करके अर्घ्य में नया (देवपात्र से पृथक) जल लेकर तथा जनेऊ दाएं हाथ में डालकर पूर्व की ओर खाली तष्टे में थोड़ा सा जल गिराएं :

ॐ ब्रह्मगायत्री आदि देवाः सविश्वकुटुंबाः तृप्यंताम्।।

जनेऊ दाएं हाथ से हटाकर थोड़ा सा जल उत्तर को गिराएं :

ॐ सनकमरीच्यादि ऋषयः सविश्वकुटुंबाः तृप्यंताम्। इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।।

जनेऊ बाएं हाथ में डालकर थोड़ा सा दक्षिण की ओर गिराते जाएं :

ॐ यमादि चतुर्दश यमाः सविश्वकुटुंबाः तृप्यन्ताम्। इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।।

ॐ अमुक गोत्राः अमुकनामानः अस्मत्पितापितामहप्रपितामहादयः सपत्नीकाः आदित्यगायत्रीस्वरूपाः तृप्यंताम्। इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।।

ॐ अमुक गोत्राः अमुकनामानः अस्मत् मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहादयः सपत्नीकाः आदित्यगायत्रीस्वरूपाः तृप्यंताम्। इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।।

ॐ आब्रह्मस्तंबपर्यन्तं जगत् तृप्यताम्। इदं जलं सर्वेभ्यः स्वधा नमः।।

24. प्रार्थना :

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभागभवेत्।।

हम सब विश्वरूप कुटुंब के कल्याण की कामना करते हैं।

यानि कानि च पापानि जन्मजन्मांतर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यं वन्दे तमच्युतम्।।
ॐ उत्तमे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतमूर्ध्नि।
ब्राह्मणेभ्योऽनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्।।

25. परमात्मा को प्रणाम :
ॐ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते दीनत्वेन मयाकृतः।।

26. आद्यन्तजलपूर्वक अग्नि में नैवेद्य की आहुतियां :
ॐ अग्नये नमः स्वाहा।
ॐ प्रजापतये नमः स्वाहा।
ॐ वैश्वनराय नमः स्वाहा।

27. पत्ते पर आद्यन्त जल घुमाकर गोग्रास :
ॐ गोभ्यो नमः।

28. नैवेद्य भक्षण :
देवेभ्यो अमृतं लब्ध्वा गृह्णामि गायत्रीप्रीतये।।
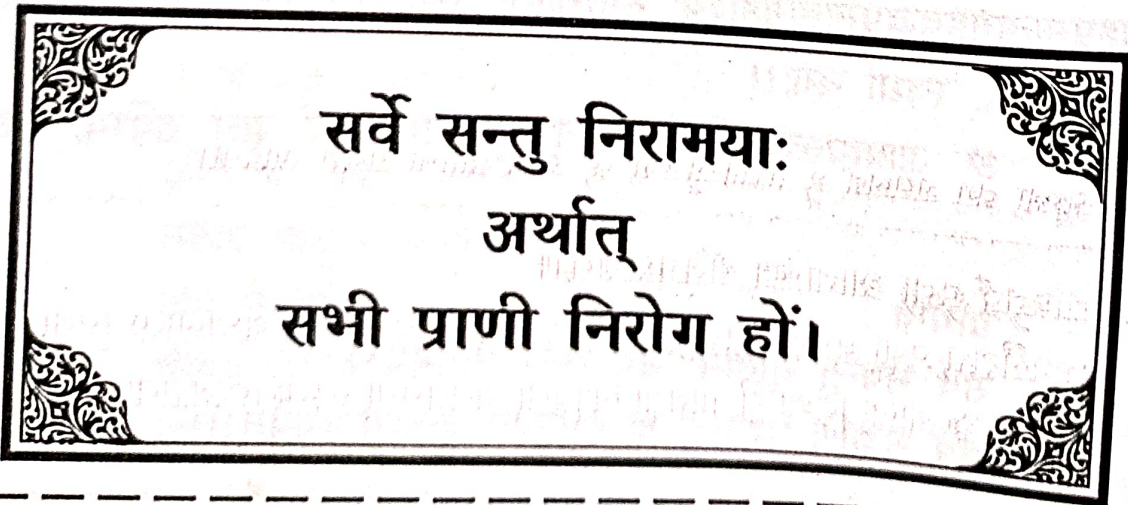
श्री गणेशादिपूर्वांगपूजनपूर्वकं जन्मदिनोत्सवपूजनम्

(परंपरागतम्)

1. सामग्री : गंगाजलमिश्रित, जल का बड़ा लोटा, दो छोटे लोटे, तष्टा, अर्घा, आचमनी, आसन, पंचामृत, पांच पत्ते, पूजा की थाली में गुलाली-चावल-फूल- दूब, कुशा-धूप-जोत-तिल-जौ-कुशपवित्र एवं मोटक-गणेशमूर्ति-मौली-चावल- नैवेद्यादि।

पूजन से पहले गणेश, षोडशमातृ, कलश और दध्यक्षतपुंज आदि को यथास्थान स्थापित कर लें।

धौतवस्त्रयुक्त यजमान का मुख पूर्व की ओर रहे। पूर्वांग पूजन संपूर्णकर्मकांड का आधार है।

उपचार मंत्र पूरा होने पर उपचार चढ़वाएं।

पंचामृत : दूध, घी, दही, गंगाजल और शक्कर।

पूजा में केवल अनामिका, मध्यमा और अंगुष्ठ का प्रयोग करवाएं।

पुरोहित-यजमान व्रतपूर्वक कार्य करें तथा उस दिन सब कुछ सात्विक हो।

2. अलग आचमन पात्र में से हाथ धुलवाकर तीन आचमन करवाएं :

ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।

हाथ धुलवाएं : ॐ ऋषीकेशाय नमः।

3. पूजापात्र में से बाएं हाथ में जल देकर दाएं हाथ से अपने ऊपर छिड़कवाएं :

ॐ अपवित्रः पवित्रो वां सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुंडरीकाक्षं स बाह्यभ्यंतरः शुचिः।।

कार्यारंभ के अधिष्ठातृ देवता भगवान श्री गणेश हैं।

4. पत्ते पर विनियोग :

ॐ हिरण्यवर्णेति मेरूपृष्ठ ऋषिः।
सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने
उपवेशनार्थं पृथिवीपूजने विनियोगः।

जल से पृथिवी का आवाहन :

ॐ पृथिव्यै नमः, पृथिवीं आवाहयामि।

चावल से प्रतिष्ठा :

ॐ एतं तेदेव सवितुर्यज्ञं प्राहुः बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञं अव तेन यज्ञपतिं तेन मां अव। मनोजूतिः जुषतां आज्यस्य बृहस्पतिः यज्ञं इमं तनोतु अरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु विश्वे देवाऽस इह मादयन्तां ओम् प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः, पृथिवी इह आगच्छ, इह तिष्ठ, सुप्रतिष्ठिता भव, वरदा भव।।

अनामिका से तिलक : ॐ पृथिव्यै नमः, गन्धं समर्पयामि।
चावल : ॐ पृथिव्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।
फूल : ॐ पृथिव्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।
धूप : ॐ पृथिव्यै नमः, धूपं आघ्रापयामि।
दीप : ॐ पृथिव्यै नमः, दीपं दर्शयामि।
नैवेद्य : ॐ पृथिव्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

सर्वजीवधारिणी पृथिवी से सपुष्प प्रार्थना :

ॐ पृथिवी त्वया धृता लोकाः, त्वं च विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि, पवित्रं कुरु चासनम्।।

5. यजमान के सामने थाली में आटा-गुलाली से बने अष्टकोण पर रखे गणेश के दाएं किनारे पत्ते पर चावल, उस पर रखी ज्योति का जल से आवाहन :

ॐ दीप भैरवाय नमः, दीप भैरवं आवाहयामि। प्रतिष्ठा पृथिवीवत्-

.........................ॐ भूर्भुवः स्वः, दीप भैरव इहागच्छ, सुप्रतिष्ठितः वरदो भव।

गंधादि पंचोपचार पृथिव्यादि पंचतत्वों के प्रतिनिधि हैं।

गंधः – ॐ दीप भैरवाय नमः, गंध समर्पयामि।

(यहां परमेश्वर के तत्त्व परमेश्वर को अर्पित हैं।)

अक्षताः – ॐ दीप भैरवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि – ॐ दीप भैरवाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

धूपः – ॐ दीप भैरवाय नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपः – ॐ दीप भैरवाय नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं (दाख आदि) – ॐ दीप भैरवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

सपुष्प प्रार्थना – तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय ०.... दीपस्थ - कालीस्थ - त्रिशूल स्थायें अविमुक्त...

ॐ करकलितकपालः कुंडली दंडपाणिः

तरूणतिमिर नीलव्याल यज्ञोपवीती।

क्रतुसमय सपर्य्या विघ्नविच्छेद हेतुः

जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

6. अनामिका में कुविचारनाशक कुशपवित्रधारण –

ॐ कुशपवित्राय नमः।

ॐ विरंचिना सहोत्पन्नः, परमेष्ठि निसर्गजः।

नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव।।

रक्षापोट० पीले वस्त्र में सफेद सरसों और दूर्वा रखकर रक्षामंत्रों से अभिमंत्रित करके प्रतिष्ठा करें –

ॐ एतन्ते..............................।। ॐ भूर्भुवः स्वः, रक्षापोटलिके इहागच्छ इहतिष्ठ वरदा भव।।

यजमान को बांधें –

ॐ यदा बध्नं दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्यमानाः।

तन्म आबध्नामि शतशारदाया युष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।

7. सपुष्प स्वस्तिवाचन (सर्वारिष्ट शान्तिपूर्वक समग्रकल्याणार्थ प्रार्थना)

ॐ स्वस्ति नः पूषा विश्वेदाः, स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः

प्रदिशः सन्तु मह्यम।। विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थे विष्णोः स्यूरसि विष्णेर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रूद्रा देवता आदित्या देवता मरूतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहपतिर्देवतेन्द्रो देवता वरूणो देवता ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सामा शान्तिरेधि।। सुशान्तिर्भवतु।। ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव।। इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद् वीराय प्रभराम हेमतीः। यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्। एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव। मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु।। विश्वे देवा स इह मादयंतामों प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।। ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधि पति ँ हवामहे वसो मम।। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम।। नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रात पतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः।। ॐ शान्तिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।।

8. अलग पत्ते पर गन्ध – अक्षत रखकर उससे यजमान को अंगूठे से सुखदायक तिलकाक्षत –

ॐ चंदनं महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी तिष्ठति सर्वदा।।
ॐ अक्षताश्च अरिष्टमस्तु।

9. पुरुष के दाएं और स्त्री के बाएं हाथ में घड़ी की सुई की दिशा में रक्षार्थ मौली बांधें–

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रः महाबलः।
तेन त्वां बध्नामि रक्षे रक्ष मा चल मा चल।।

10. यजमान द्वारा पुरोहित को अंगूठे से तिलक व चावल -

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च।

जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

11. पुरोहित के हाथ में मौली -

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

12. अर्घ में तिल, जौ, कुश, कुशमोटक, द्रव्य और मौली के साथ दोनों हाथों से संकल्प लेकर गणेश के पास छुड़वाएं। अपने को मौली बंधवाकर द्रव्य रख लें। पश्चात् यजमान पुरोहित को अपने प्रतिनिधित्व हेतु सप्रार्थना प्रणाम करें -

ॐ तत् सत् अद्य श्री ब्रह्मणो दिवसे द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्तमन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथम चरणे जंबूद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्ते हिमवत्प्रान्ते पुण्यक्षेत्रे .... ग्रामे .... संवत्सरे .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... वासरे . ... गोत्रोत्पन्नः .... राशि .... अहं सपत्नीकः सपरिवारः सविश्वकुटुंबः सशक्तिकपरमात्मप्रीत्यर्थं .... कर्मनिमित्तकं श्रीगणेशादिपूर्वांगपूजनं करिष्ये तथा च एतत् कर्म कर्तुं .... नाम ब्राह्मणं त्वां अहं आवृणे।

पुरोहित बोले - ॐ आवृतोऽस्मि।

ॐ स्वस्ति अस्तु।

13. सपुष्प सर्वविघ्नहारी गणेश जी का ध्यान..

समुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् श्रृणुयादपि।।

विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।

संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

संकल्प में यथाकार्य तथा यथादेशकाल परिवर्तन आवश्यक होता है।

14. सपुष्प संसार पालक विष्णुजी का ध्यान –

ॐ शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।
ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

15. बाएं हाथ पर चावल रखवाकर दाएं से क्रमशः चढ़वाते जाएं :

ॐ श्रीमन्हागणाधिपते नमः।
ॐ अस्मत् मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।
ॐ अस्मद् गुरुभ्यो नमः।
ॐ श्री उमामहेश्वराभ्यां नमः।
ॐ यजमानस्य कुलदेवीदेवताभ्यो नमः।
ॐ यजमानस्य निवासस्थानाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः।
ॐ यजमानस्य वास्तुदेवताभ्यो नमः।
ॐ यजमानस्य पंचायतनदेवताभ्यो नमः।
ॐ त्रयस्त्रिंशतकोटिदेवताभ्यो सशक्तिकेभ्योनमः।

16. भूमि पर गुलाली से ऊपरोपर त्रिकोण–वर्ग–व्यास बनाकर उस पर अर्घाधारयंत्रपूजन –

आसन (मौली) – ॐ अर्घाधारयंत्राय नमः, आसनं समर्पयामि।
अक्षताः – ॐ अर्घाधारयंत्राय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पाणि – ॐ अर्घाधारयंत्राय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।
धूपः – ॐ अर्घाधारयंत्राय नमः, धूपं आघ्रापयामि
दीपः – ॐ अर्घाधारयंत्राय नमः, दीपं दर्शयामि।

मंत्रों में देवता वाचक शब्दों के लिंग और वचनों का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

17. अर्घ में जल भरण –

ॐ शन्नो देवीरभीष्टयऽआपो भवन्तु

पीतये शंय्यो रभिस्त्रवन्तु नः।।

18. मौनपूर्वक अर्घ में गंधाक्षतपुष्प डालकर जल को अंगुष्ठ–मध्यमा और अनामिका से परिक्रमा क्रम से घुमाएं –

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू।।

19. तष्टे, थाली या पत्ते पर गुलाली से जगन्नियन्ता भगवान सूर्य का चिह्न बनाकर सपुष्प ध्यान –

ॐ एकचक्र रथापस्थो दिव्यः कनकभूषितः।

स मे भवतु सुप्रीतः कनकहस्तो दिवाकरः।।

20. दोनों हाथों से सूर्य को अर्घ्यदान –

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।

अनुकंपय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

21. वैदिक यज्ञ (सर्वजीवहित) परंपरा के विरोधी भूतों (वायरस) को भगाने के लिए बाएं हाथ पर सफेद सरसों और चावल रखवाकर दाएं हाथ से पूर्व–पश्चिम–उत्तर–दक्षिण–आकाश और धरती पर फिकवाएं–

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः।

सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

तीन चुटकियां बजाएं।

22. पुनः यन्त्रस्थ अर्घ में जल भरकर तथा मौनपूर्वक गंधाक्षत डलवाएं। उस जल से दूब के साथ अपना और पूजा सामग्री का संप्रोक्षण एवं प्राणायाम करवाएं।

पंचामृतस्नानं (उबटन) – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धस्नानं – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, शुद्धस्नानं समर्पयामि।

भगवान् की दी हुई वस्तुएं भगवान को चढ़ाने के बाद शेष का हम उपभोग कर सकते हैं।

23. बाएं हाथ पर चावल रखकर गणेश के पास क्रमशः पीठ (शक्ति) पूजन -

ॐ तीव्रायै नमः।

ॐ ज्वालिन्यै नमः।

ॐ नन्दायै नमः।

ॐ भोगदायै नमः।

ॐ कामरूपिण्यै नमः।

ॐ सत्यायै नमः।

ॐ उग्रायै नमः।

ॐ तेजोवत्यै नमः।

ॐ मध्ये विघ्नविनाशिन्यै नमः।

ॐ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः।

24. सपुष्प सर्व मंगलविधायक भगवान् गणेश जी का ध्यान -

ॐ गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजंबूफल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकम् नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

सपुष्प हाथ जोड़कर आवाहन -

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः, गणपतिं आवाहयामि।

अक्षतों से प्रतिष्ठा -

ॐ एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव। मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु।। विश्वदेवा स इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ। ॐ भू र्भुवः स्वः गणपतिः इहागच्छ, इहतिष्ठ, वरदो भव।।

आसनं (मौली) - ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यं (पांवों हेतु जल) - ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं - ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं - ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

विश्व में जो कुछ भी है वह सब परमात्म शक्ति के ही रूप हैं।

यज्ञोपवीतं – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गंधः – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, गंधं समर्पयामि।

अक्षताः – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

सौभाग्यद्रव्यं (सिंदूरादि) – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, सौभाग्यद्रव्यं समर्पयामि।

धूपः – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपः – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं (पत्ते पर दाख आदि) – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

आचमनीयं (कुल्ला) – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलं (सुपारी) – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

दक्षिणाद्रव्यं – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि।

ऋतुफलं (दाख आदि) – ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।

25. अलग पत्ते पर गन्ध, अक्षत, पुष्प, दशमोदक (लड्डू) या फल और द्रव्य अर्पित करें –

अद्यामुकोऽहं दशमोदकान् दक्षिणासहितान् श्रीगणेशरूपाय ब्राह्मणाय दास्ये।

विघ्नेश विप्ररूपेश गृहाण दशमोदकान्।
दक्षिणा घृत तांबूल गुड़युक्तान्ममेष्ट द।।

26. सपुष्प प्रार्थना :

विनायक नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

27. दूर्वा के टुकड़े बाएं हाथ पर रखकर क्रमशः अर्पण –

ॐ गणाधिप नमस्तु ते।
ॐ उमापुत्र नमस्तेऽस्तु।
ॐ अघनाशन नमस्तेऽस्तु।
ॐ विनायक नमस्तेऽस्तु।

ॐ ईशपुत्र नमस्तेऽस्तु।

ॐ सर्वसिद्धिप्रदायक नमस्तेऽस्तु।

ॐ एकदन्त नमस्तेऽस्तु।

ॐ इभवक्त्र नमस्तेऽस्तु।

ॐ मूशकवाहन नमस्तेऽस्तु।

ॐ कुमारगुरवे तुभ्यं नमोऽसतु।

ॐ चतुर्थीश नमोऽस्तु ते।

28. शेष दूर्वार्पण –

ॐ कांडात् कांडात् प्ररोहन्ती पुरुषः परूषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

29. सफलं अर्घ्यम् –

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानां अभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
गृहाणार्घ्यं इमं देव सर्वदेवनमस्कृतम्।
अनेन फलदानेन फलदोऽस्तु सदा मम।।

गणेश भगवान को दूर्वा चढ़ाने का मतलब है दूर्वा की तरह वृद्धि को प्राप्त करना।

लड्डू और दूर्वा गणेश जी को प्रिय हैं।

अथ श्री षोडशमातृकापूजनम्

1. काठ की फट्टी पर गोमय से बनी सोलह माताओं की चावलों से प्रतिष्ठा:
   ॐ एतं ते .... मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।
   ॐ भूर्भुवः स्वः षोडशमातरः इहागच्छन्तु, इह तिष्ठन्तु वरदाः भवन्तु।

2. सपुष्प ध्यान –
   वरदाभय पाणिश्च दिव्याभरण भूषितः।
   शुक्लसुशीलवासश्च पद्मस्योपरि संस्थितः।।

3. बाएं हाथ पर रखे चावलों से क्रमशः पूजन –
   ॐ श्री गणेशांबिकाभ्यो नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ गं गणपतये नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ गौर्य्यै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ पद्मायै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ शच्यै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ मेधायै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ सावित्र्यै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ विजयायै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ जयायै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ देवसेनायै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ स्वधायै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ स्वाहायै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ मातृभ्यो नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ लोकमातृभ्यो नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ धृत्यै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
   ॐ पुष्ट्यै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।

ॐ तुष्ट्यै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।
ॐ कुलदेवतायै नमः, आसनादिकं समर्पयामि।

4. सपुष्पध्यान -
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराही चैव माहेन्द्री चामुंडा स्थलमातरः।।
गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येताः वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।

5. दूर्वा से मातृकाओं को पंचामृत लगाएं -
ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमणि सहस्त्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।
यजमान दूर्वा का शेष घी गाथे पर लगाए।

6. सपुष्पं सप्त घृतमातृका ध्यानं -
श्रीः लक्ष्मी च धृतिः मेधा पृष्टिः श्रद्धा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

7. चावलों से आवाहन व प्रतिष्ठा -
ॐ एतंते .... मादयन्तामों प्रतिष्ठ,
ॐ भूर्भुवः स्वः, सप्तघृतमातरः इहागच्छन्तु, तिष्ठन्तु वरदाः भवन्तु।।
चावल चढ़ाएं - ॐ सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः, आसनादिसर्वोपचरान् समर्पयामि।।

8. सपुष्प प्रार्थना -
ॐ कुर्वन्तु मातरस्सर्वा गौय्यार्दि मम गंगलम्।
लक्ष्मीं तन्वन्तु मद्गेहे शुभकार्याणि सर्वदा।।

अथ कलशपूजनम्

1. दोनों हाथों से कलश भूमि को स्पर्श -

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षतां नो भरीमभिः।
ॐ भूरसि भूमिरसि अदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं ह ँ ह पृथिवीं मा हि ँ सीः।।

2. भूमि पर रखे धान्य का स्पर्श -

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णातु अछिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।

3. जलपूरित कलश का स्वर्श -

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या तवा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः।

सहस्त्रं धुक्ष्वोरू धारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।

4. कलश में जल का आचमन डालें -

ॐ वरूणस्योत्तंभनमसि वरूणस्य स्कंभसर्जनी स्थो वरूणस्य ऋतसदन्यसि वरूणस्य ऋतसदनमसि वरूणस्य ऋतसदनमसि।।

5. कलश में गंध प्रक्षेप और लेपन -

ॐ गंधद्वारां दुराघर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

6. दूर्वाप्रक्षेपण -

ॐ कांडात् कांडात् प्ररोहन्ती परूषः परूषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

7. पंचपल्लवप्रक्षेप -

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वस्तिष्कृतः।

गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरूषम्।

8. द्रव्यप्रक्षेप -

ॐ हिरण्यगर्भ समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविपा विधेम।।

9. कलश के कंठ में मौली बांधे (वस्त्र) -

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

10. केवल सत्यनारायणादि के बड़े पूजनों में कलश के ऊपर चावल से भरा पात्र रखें (पूर्णपात्र) -

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो।

11. पूर्ववत केवल बड़े पूजनों में लाल वस्त्र से आवेष्टित नारियल पूर्णपात्र के ऊपर रखें (श्रीफल) -

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णान्निषाणामुं म इषाण सर्वलोक म इषाण।।

12. चावलों से वरूण का आह्वान व प्रतिष्ठा -

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा त्वन्दमानः तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरूणेह बोदध्युरूष ँ समा नः आयुः प्प्रमोशीः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वरूणदेव इहा........................।।

13. गन्धादिक उपचार -

ॐ अपां पतये नमः। ॐ क्रमशः गन्धादिकोपचारान् समर्पयामि।

14. क्रमशः कलशांगों का स्पर्श -

ॐ कलशस्य मुखे विष्णु :
कंठे रूद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा

मध्ये मातृगणः स्मृतः
कुक्षौ तु सागरा : सप्त
सप्रद्वीपा वसुंधरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः
सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च संहिताः सर्वे
कलशं तु समाश्रिताः।
सर्वे समुद्राः सरितः
तीर्थानि जलदाः नदाः।
आयान्तु यजमानस्य
दुरितक्षयकारकाः।।

15. सपुष्प प्रार्थना –

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय
सुश्वेतहाराय समुंगलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय
जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।
ॐ घंटास्थ गरूड़ाय नमः।
ॐ शंखस्थदेवाय नमः।

16. ग्रहों का आह्वान व प्रतिष्ठा –

ॐ एतं ते ....। ॐ भूर्भुवः स्वः, सूर्यादिनवग्रहाः, गणपत्यादिपंचलोकपालाः, इंद्रादिदशदिक्पालाः, ब्रह्माविष्णुमहेशाः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः इहा....................।।

17. उपचार –

वरूणादि आवाहित सर्वदेवेभ्यः क्रमशः आसनादि सर्वोपचारान् सम.।

18. सपुष्प प्रार्थना –

ॐ ब्रह्मामुरारिः त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकराः भवन्तु।।

ॐ कर्पूरगौरं करूणावतारम् संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।
ॐ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।

19. श्वेत वस्त्र या कांसे आदि की थाली में दाएं से बाएं तीन लंबी पंक्तियों में 7 गुणा 3 (कुल इक्कीस) दध्यक्षत पुंजों पर क्रमशः गणपत्यादि देवताओं की चावलों से प्रतिष्ठा –

ॐ एतं ते..........................मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः गणपत्यादि एकविंशति देवताः इहागच्छंतु तिष्ठन्तु वरदाः भवन्तु।।

20. गंधाक्षत से क्रमशः पूजन –

ॐ गं गणपतये नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ कुलदेव्यै नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ प्रजापतये नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ विष्णवे नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ महेश्वराय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ इष्ट देवाय अमुकाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ सूर्याय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ जन्मनक्षत्राय अमुकाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ षष्ठी देव्यैः नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ मार्कण्डेयाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ अश्वथाम्ने नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ बलये नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ व्यासाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ विभीषणाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ कृपाचार्याय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ परशुरामाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ बलभद्राय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।
ॐ हनुमते नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।

देवता के समक्ष दोने में या पत्ते पर उपचार चढ़ाए जाते हैं।

ॐ स्थानदेवाय अमुकाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।

ॐ वास्तु देवाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।

ॐ क्षेत्रपालाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।

21. षष्ठी देवी को पत्ते पर दही-भात का निवेदन -

ॐ षष्ठी देव्यै नमः, दधिभक्तं निवेदयामि।

22. सपुष्प प्रार्थना -

ॐ जय देवि जगन्मातः जगदानंदकारिणी।
प्रसीद मम कल्याणि महाषष्ठि नमोऽस्तुते।।

23. सपुष्प दीर्घायु हेतु चिरजीवी मुनि मार्कण्डेय से प्रार्थना -

मार्कण्डेयाय मुनये नमस्ते महदायुषे।
चिरंजीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने।।
रूपवान् वित्तवानायुः श्रिया युक्तं च मां कुरू।।
चिरंजीवी यथा त्वं भो मुनीनां प्रवरो द्विज।।
कुरूष्व मुनि शार्दूल तथा मां चिरजीविनम्।।

24. सपुष्प प्रार्थना -

त्रैलोक्ये यानिभूतानि स्थावराणि चराणिच।
ब्रह्म विष्णु शिवैः सार्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे।।
अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।
सप्तैतांश्च स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः।।
प्रीयन्तां देवताः सर्वाः पूजां गृह्णन्तु त्वं मम।

प्रयच्छ न्त्वायुरारोग्यं यशः सौख्यं च सर्वदा।।

मन्त्रन्यूनं क्रियान्यूनं द्रव्यन्यूनं महामुने।

यदर्चितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।

25. वर्षफल में दर्शाए गए पूज्य ग्रहों के लिए देवद्रव्यों की प्रतिष्ठा व पूजन के साथ ससंकल्प दान –

यथा – अमुक ग्रहस्य देयद्रव्याधिष्ठातृदेवाय नमः, गंधाद्युपचारान् समर्पयामि।

..................अमुकोऽहं अद्य मम वर्षकुंडल्यां अमुक दुःस्थान स्थित ग्रहस्य शान्त्यर्थं इदं देय द्रव्यं अमुकनाम्ने ब्राह्मणाय त्वां दातुमहं उत्सृजे।।

26. तिल और गुड़ मिश्रित दूध को गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करके मार्कण्डेय मुनि को चढ़ाकर शेष प्रसाद रूप में आयुवृद्धयर्थ स्वयं पिएं –

ॐ सगुडं तिलसम्मिश्रमंजल्यर्धमितं पयः।

मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्वृद्धये।।

27. दीर्घायु देवताओं, ब्राह्मणों, माता–पिता और अन्य अग्रजों को प्रणाम करके आशीर्वाद ग्रहण किया जाए।

28. पुरोहित को पूजनादि की दक्षिणा के बाद भोजन।

श्री सत्यनारायण पूजन

पूर्वांग पूजन पूर्ववत् करते हुए संकल्प में 'श्रीसत्यनारायणपूजनपूर्वकं कथा पाठं करिष्ये' बोलें

1. सं. 10 के अनुसार नारियल में (सत्यनारायण) की प्रतिष्ठा-
ॐ एतंते ....। ॐ भूर्भुवः स्वः, भगवान् सत्यनारायण (सर्वजीवहितरूप) इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव।।

2. सपुष्प ध्यानम् -
ध्यायेत सत्यगुणातीतं गुणत्रयसमन्वितम्।
लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम्।।
नीलवर्णं पीतवस्त्रं श्रीवत्सपदभूषितम्।
गोविन्दं गोकुलानन्दं ब्रह्माद्यैरपि पूजितम्।।
श्री सत्यनारायणाय नमः।।

3. आसनादिक उपचार श्री गणोशपूजनवत् करें।

4. सपुष्प प्रार्थना -
मन्त्रन्यूनं क्रियान्यूनं भक्तिन्यूनं जर्नादन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।

5. मूल कथापाठ करके उसका आध्यात्मिक अर्थ करना चाहिए। जैसे राजा तुंगध्वज का मतलब है अपना ही झंडा ऊंचा रखने वाला या घमंडी।

6. आरती बोलें, नीराजन करवाकर सूर्य को दीपक दिखाएं, आरती लें, दक्षिणा पुस्तक पर रखवाएं और सप्रणाम आशीर्वाद दें।

सत्य भगवान् की वास्तविक पूजा सर्वजीवहितकारी सत्य का पालन करना है।

विशेष -

पूजन सर्वत्र एक ही होता है परन्तु छोटे-बड़े कार्यों के अनुसार उसका संक्षेप या विस्तार करना पड़ता है। अनुष्ठान और विवाहादि कार्यों में विस्तृत विधान की आवश्यकता पड़ जाती है। केवल हवनमात्रादि कार्यों में अति संक्षिप्त पूजन की आवश्यकता रहती है। कुशा के पवित्र मोटकादि पत्तों के दोने आदि बनाने में तथा शुद्ध मंत्रोच्चारण में निरन्तर कौशलाभ्यास की आवश्यकता निरन्तर रहती है।

नामकरण में विशेष -

1. तिल, घी और शक्कर का चरू।
2. हवन वेदी हेतु अंगीठी, समिधा और कुशाएं।
3. पूर्णपात्र हेतु थाली भर चावल।
4. पिता द्वारा दाएं कान में पंचधा नामोच्चारण हेतु श्वेत वस्त्र (नामयुक्त) में लिपटा शंख।
5. पंचगव्य छिड़कने हेतु कुशमोटक।
6. किसी पात्र में रखे अनाज पर गोमयनिर्मित षष्ठी देवी।
7. श्रीगणेश, गायत्री और इष्टादि देवताओं को आहुतियां।

कर्मकांड का प्रत्येक विधान सकारण है। इसका ज्ञान दीर्घकालीन अभ्यास अथवा अनुभवी कर्मकाण्डी के कार्य को देखने और पूछने से आता है। इस पुस्तक में केवल संकेतमात्र दिया गया है, आशा है जिज्ञासु यत्किंचित् लाभ उठा सकेंगे। समस्त कार्यों की तरह इसमें भी व्यक्तिगत विशेषता पैदा करनी ही पड़ती है।

कर्मकांड भारतीय दर्शन का प्रायौगिक रूप है।

पूजन की आधी सफलता सामग्री को यथास्थान सजाने में है।

कुछ क्षेत्रीय परंपराएं

विवाह सम्बन्धी परंपरा :

सबसे पहले कोई भी सामाजिक हितचिन्तक व्यक्ति विवाह योग्य जोड़े की कल्पना करके बात को आगे बढ़ाता है। वर-वधू दोनों पक्ष एक-दूसरे के व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक श्रेष्ठ गुणों की सही और पूरी जानकारी लेकर वर परिवार विश्वासपात्र मध्यस्थ से कुंडली की प्रतिलिपि प्राप्त करके मिलान दिखाता या देखता है। मिलान ठीक होने पर वर-वधू की योग्यता को दोनों पक्ष फिर से हर दृष्टि से एक-दूसरे को जांचते हैं। संतुष्टि हो जाने पर दोनों पक्ष वर-वधू को पारस्परिक मैत्री योग्यता को जांचने का अवसर दिया जाता है। दोनों के निर्णय अनुकूल होने पर दोनों परिवार एक-दूसरे के घर परिचियार्थ जाते हैं। सब कुछ ठीक लगने पर दोनों पक्ष मिलकर ज्योतिषी से मुहूर्त का निर्णय करवाते हैं। किसी भी पक्ष के द्वारा किसी भी स्तर पर असत्य का सहारा लेने पर सम्बन्ध टूटने का खतरा बना रहता है। समिधा से लेकर वधू प्रवेश तक समस्त कार्य यथामुहूर्त किए जाते हैं। सभी स्तरों पर सत्य, प्रेम और समानता का सहारा लिया जाता है। दो परिवारों के नए मेल में अतिथि सत्कार, बड़ों का आदर और छोटों से प्रेम एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। इसके बाद दो पवित्र आत्माएं सनातन विधि-विधानपूर्वक लोक-लोकान्तर यात्रा में एक-दूसरे का निरन्तर साथ देने की प्रतिज्ञा करते हैं।

मृत्यु संबन्धी परंपरा :

अवश्यंभावि मृत्यु की सबके प्रति समान दृष्टि को देखते हुए लोग गरीब, कमजोर, रोगी और बूढ़े आदमी के प्रति विशेष करुणा का भाव रखते हैं।

विवाह संस्कार का सर्वोपरि लक्ष्य सार्वभौमिक प्रेम की प्राप्ति है।

बुढ़ापे का मतलब है आत्मा का शरीर के प्रति मोह भंग के साथ जीवमात्र के लिए सेवा का भाव पैदा होना। निर्मल आत्मा को यथासंभव सुख देकर स्वयं आत्मा को निर्मल करने के उपाय जाने जा सकते हैं। प्राणत्यागकालीन उपदेशों से धर्मग्रन्थ भरे पड़े हैं। मरणासन्न की संतुष्टि के लिए यथासंभव दान-पुण्य तथा यथेष्ट रसाहारादि साधन उपलब्ध करवाए जाते हैं। प्राणत्यागने पर गंगाजलपान एवं शंखध्वनि आदि आध्यात्मिक उपायों से आत्मा को उपरिलोकयात्रा के योग्य बनाया जाता है। पड़ोसी, समाज और संबन्धियों को मृत्यु सूचना देकर दाहान्त यथाशक्ति अन्नत्याग किया जाता है केवल आवश्यक कार्यकर्ता शव केसाथ रहकर शेष लोग दाहार्थ प्रबंध करते हैं। कर्मकर्ता द्वारा अपने पूर्वज या मृतक की शुभलोकप्राप्ति हेतु दस दिन तक पिंडदान, ग्यारहवें- बारहवें श्राद्धक्रिया उपरान्त यथाशक्ति गायत्री जप और ब्राह्मण भोज संपन्न किए जाते हैं। श्राद्ध क्रिया में सपिंडन एक गहन परामनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। मृत्यु की तिथि पर वार्षिक, चतुवार्षिक और महालय पक्षीय श्राद्ध किए जाते हैं। विशेष श्रद्धालु यथासामर्थ्य तीर्थश्राद्ध और श्राद्ध तिथि पर श्रीमद्भागवत का आयोजन भी करवाते हैं। मृत्युपरान्त दस दिनों तक परिवार के समस्त लोग मिलकर एक जगह व्रत लेकर हल्दी-मसाला रहित भोजन करते हैं तथा बलावा (शोक प्रकटन) सुनते हैं।

गार्हस्थ्य संबन्धी परंपरा :

गार्हस्थ्य समाज के प्रति एक सांझी जिम्मेदारी का नाम है। दंपत्ति परस्पर परामर्शपूर्वक एक-दूसरे की सहायता करते हैं। बच्चों का लालन-पालन, दान-पुण्य और ब्वारा आदि सामाजिक सहयोग वे मिलकर निभाते हैं। बच्चों के भविष्य निर्माण में उनकी रूचि के अनुसार सहयोग दिया जाता है। बच्चों की रूचि का ध्यान न रखने से वे धीरे-धीरे जीवन की मुख्य पारंपरिक धारा से फिसलकर

गार्हस्थ जीवन सर्वजीवोपकार का आधार है।

एक दिन या तो स्वच्छन्द प्रेम के बहाने या दाबपूर्ण शिक्षा में असफलता के बहाने अपने जीवन को ही नष्ट कर डालते हैं। नए गृहस्थ स्वयं अपने लिए अपने पूर्वजों से शुभ मार्गदर्शन पाकर अपनी नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनते हैं। गृहस्थी लोग भूखे, नंगे और याचक लोगों के आश्रय माने जाते हैं क्योंकि इससे सृष्टि में सनातन यज्ञ चक्र (आध्यात्मिक समीकरण) चलता रहता है। कर्मकांड, ज्योतिष और पुराणादि आध्यात्मिक उपाय विश्व में भौतिक वस्तुओं के प्रति बढ़ते मोह को संतुलन बिंदु तक लाने में सहायता करते हैं। ये सभी उपाय गृहस्थी में ही संभव हैं। भौतिक साधनों की सहायता लेना बुरा नहीं, परन्तु एक शुभ सकारात्मक सोच के साथ। यहां अपने से कनिष्ठों में अपनी सोच नहीं डाली जाती अपितु उनकी अपनी निहित सही सोच को उभारने में सहायता प्रदान की जाती है, जिससे वे सर्वथा स्वावलंबी बन सकें।

यद्यपि भौतिक साधनों के प्रति मोह सर्वोपकारी आत्मा को कष्ट में डालता है परन्तु उनके प्रति अमोह उसे कष्टों से छुड़ाता भी है। अतः केवल अमोह या अनासक्ति ही एकमात्र ऐसा भाव है जो आत्मा को यथावश्यक खुराक भी देता चला जाता है और उसे बंधन के कष्ट से भी बचाए रखता है। यही भाव यहां के गार्हस्थ्य जीवन की सफलता का प्राण है। यहां तक कि इनके नित्यकर्म में और दैनिक आचरण में सर्वत्र 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का उच्चारण और व्यवहार स्पष्ट दिखाई देते हैं।

किसी व्यक्ति का सुधार करने
का मतलब है उसे अपने आप सुधरने
का अवसर प्रदान करना।

चौथा भाग : परिशिष्ट

शूलिनी विकास :- प्राचीन बघाट राज्य सोलन पर सदैव परमारवंशीय राजाओं की कुलदेवी शूलिनी की कृपा रही है। इसके मुख्य कल्याणे (आश्रित सेवक) धरोट गांव के निवासी बटोलड़ माने जाते हैं। मंदिर की प्रबंधन सेवा में इनकी भागीदारी प्रमुख मानी जाती है । शूल को धारण करने वाली दुर्गा शूलिनी नाम से कही जाती है। ये भौतिकवादी असुरों के लिए शूलिनी (शस्त्रध ारिणी) हैं परन्तु अध्यात्मवादियों के लिए सुखदायक रूप धारण करती हैं। इनके कृपापात्र यदा कदा इनकी सेवा में भंडारे देते रहते हैं।

बघाट के अंतिम शासक राजा दुर्गासिंह यथानाम तथा गुणकर्म थे। वे मां दुर्गा के सच्चे वाहन (सेवक सिंह) थे । नित्य पूजन और मन्दिर दर्शन के बाद कार्यालय जाते थे। स्वयं विद्वान होकर विद्वानों को शरण देते थे। किसी से मनमुटाव न रखकर सबसे प्रेम करते थे।

संस्कृत और संस्कृति के लिए इनका योगदान अभूतपूर्व है। ये कर्मकांड को मोक्ष का साधन मानते थे। मंत्र पुरोहित से बुलवाकर पूरी हस्त क्रिया स्वयं करते थे। वर्तमान विख्यात 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' इन्हीं की शरण की उपज है। संस्कृत के विख्यात विद्वान श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित उनके गुरू थे। इस क्षेत्र पर आचार्य श्री सीताराम, श्री निवास, शालिग्राम, केशव शर्मा, चंद्र दत्त जोशी, चंद्र दत्त भारद्वाज का योगदान किसी से अज्ञात नहीं हैं।

राजा दुर्गासिंह राष्ट्र और अध्यात्म के लिए समर्पित थे। इनके शासन काल में लिखा गया दीक्षित जी का नाटक ' भारत विजय नाटकम्' मां शूलिनी की ख्याति के लिए काफी है। ये विख्यात आनंदमयी मां के प्रधान सचिव थे। सोलन संतों और विचारकों का केन्द्र रहा है। दुर्गासिंह जी योग को न केवल स्वास्थ्य का साधन अपितु विराट् जीवन में अपने विलय का भी साधन मानते थे। 'यथा राजा तथा प्रजा' के अनुसार आज भी सोलन क्षेत्र में आध्यात्मिक निर्मल गंगा की धारा बह रही है तथा युगों तक बहती रहेगी, ऐसा विश्वास है।

उपासना:- उप् + आसना का मतलब है - भगवान के समीप या दृष्टि में रहना। हम भगवान का अनुभव करें तथा भगवान हमारा अनुभव करें। इसी में

नशेड़ी से सभी कन्नी काटते हैं

हमारे जीवन की सार्थकता है। हम भगवान के निर्देशन में काम करें। निर्देशन के बिना हम पथभ्रष्ट हो सकते हैं। पथभ्रष्टता का मतलब है दुःख । हमारे काम की सरलता, सहजता और लोकोपयोगिता को केवल भगवान ही जान सकते हैं। अतः भगवान का निर्देशन पाने के लिए उपासना अनिवार्य है। व्यक्ति के लिए गायत्री या संध्या की उपासना सहज, सरल और विधिवत् गुरू बनाकर या मन्दिर में की जा सकती है। इससे समस्त अकांक्षाएं पूरी होती है।

जननी ओर जन्मभूमि :- जन्म भूमि मां की तरह पूज्या है। गांव से जुड़े लोगों का अपने गांव से अटूट प्रेम रहता है। वे अपने गांवों के पुराने टूटे फूटे घरों, विद्यालयों, अस्पतालों , बावड़ियों, मंदिरों और सामुहिक कामों के लिए अपने पसीने की कमाई लगा सकते हैं। इससे हमारा अपने समाज के प्रति अमूल्य मानवीय ऋण चुकता है। वास्तव में हमारे विकास में हमारे गांव के पहाडों, पेड़पौधों और नदी नालों का भी योगदान होता है। अतः हमें जैसे कैसे भी अपनी जन्मभूमि के लिए यथासंभव कुछ करते रहना चाहिए।

आध्यात्मिक जीवन शैली :- आध्यात्मिक जीवन शैली का मतलब है भगवान की विशाल योजना में अपना हिस्सा डालना । भगवान सदैव 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' के नियम पर काम कर रहे हैं। परमपिता परमात्मा के हम पुत्रों को भी उसी के नियमों को अपनाना चाहिए। कारण गुण कार्य में स्वभावतः आते हैं। यही समस्त सुखदायक जीवनशैली है।

अपनी दुनिया :- हम अपनी दुनिया अपने आप बनाते हैं। संसार वृक्ष में फूल और कांटे दोनों हैं। दोनों अस्तित्व के लिए आवश्यक है। कांटों का भी उसमें फूलों के बराबर का योगदान हैं। अस्तित्व की रक्षार्थ भगवान के प्रयासों की समालोचना वास्तव में अपनी ही समालोचना है। हमारा अधिकार केवल अपने हिस्से के काम पर है, बस उसे ईमानदारी से निभाते चलें। उसके प्रति हम में से एक आदमी की लापरवाही सृष्टि के संतुलन को हिला सकती है।

अनार :- अपने घर के पिछवाड़े में लगे अनार के वृक्ष में हम अपने पूर्वजों की चेतना के दर्शन करते हैं। इसका सिंचन (श्राद्ध) करने से हमें बहुत आत्मशांति मिलती है। परमानंद या अमरता प्राप्ति के लिए फलदार वृक्ष लगाने से बढ़िया कोई साधन हो, मुझे नहीं लगता।

जहां मातृवर्ग जागरूक है वहां कोई अपराध नहीं हो सकता ।

पवित्रता की रक्षा : – भोजन करते या बांटते घर के प्रवेश में और मंदिरादि के प्रवेश के समय हमारे जूतों के साथ वहां विषाणु भी साथ जाते हैं जो स्वास्थ्य के शत्रु हैं। ऐसे समयों पर नशा भी भारी हानि करता है। नशे के लिए इस दुनिया में कोई जगह नहीं है, यहां तक कि श्मशान भी – क्योंकि वह भी एक प्रकार की यज्ञस्थली है। बच्चों और महिलाओं पर इसका बड़ा घातक प्रभाव पड़ता है। नशेड़ी को यदि कोई उसके जीवन का लक्ष्य बोध करा सके तथा उसमें चुनौतियों का सामना करने की हिम्मत भर सके तो वह भी नशा छोड़ सकता है।

बघाट (सोलन) क्षेत्र – इसके क्षेत्र की सीमा कंडाघाट–जाबली तथा स्पाटू–गौड़ा के बीच है। इसे बारह घाटों का समूह कहा जाता है। करोल, धारों धार और कोठी धार आदि यहां के दर्शनीय स्थल हैं। इस क्षेत्र पर शिव (बीजेश्वर) और शक्ति (शूलिनी) का गहरा प्रभाव है। इस धरती पर इनके अपमान से यहां के निवासियों को इसका खोट (दोष) लगता है। मंदिर परिसर में पवित्रता का पवित्र फल और अपवित्रता का अशुभ फल मिलता है। मुख्य पारंपरिक जैविक उत्पाद – इस क्षेत्र की मिट्टी से निम्नांकित पारंपरिक उत्पाद लिए जा सकते हैं –

मक्की :– मक्की यहां की विशेष उपज है जो जेठ या आषाढ़ में बोई जाती है। अदरक के साथ रोपी गई मक्की ज्यादा अच्छी होती है। यह एक रूखा अनाज है।

अदरक :– यह जेठ में लगता है। ऊपर से सूखे पत्ते व गोबर बिखेरे जाते हैं इसे चौकोर खानों में 1–1 फुट की दूरी पर रोपा जाता है। यह जंगली जानवरों से सुरक्षित होता है।

'' नशा करने वाला आदमी आदमी नहीं हो सकता''।
'' सोलन स्वभावतः आध्यात्मिक क्षेत्र है।''
'' बच्चों से नशीली वस्तु मंगवाना पाप है।''

अरबी :– यह अदरक की तरह रोपी जाती है। इसके पत्ते रक्तवर्धक होते हैं।
सोयाबीन :– इसके दो दो बीज अदरक की तरह ही रोपे जाते हैं। यह पौष्टिक दाल है।
बूटिया बीनः– सावन की नमी में कहीं भी खाली जगह में दो दो दाने बोकर आसानी से सब्जी उपलब्ध होती है।

परोपकार तीनों कालों पर शासन करता है।

धनिया :- रक्तवर्धक हरा धनिया अदरक की तरह उगाया जाता है।

कद्दू :- इसको भी अदरक की तरह उगाया जाता है परंतु इसकी बेलों को झाड़ियों या पेड़ों की ओर मोड़ना पड़ता है। यह केवल पित्त प्रकृति वाले को अच्छा पचता है।

दूध :- घरेलू दूध के लिए पहाड़ी गाए ज्यादा लाभदायक है। यह कम स्थान घेरती है तथा पहाड़ों पर आसानी से चुगती है। इसके दूध में वनौषधियों के गुण अपने आप आ जाते हैं। धार्मिक कार्यों हेतु यह अधिक बेहत्तर है।

प्रसिद्ध वृक्ष :- चील, तुनी, खड़क, व्योंस, खैर, चुई और कक्कड़ यहां प्रसिद्ध वृक्ष हैं। आज के विकट समय में एक वृक्ष काटना भी सृष्टि के मालिक से सजा पाने के लिए काफी है।

प्रमुख सब्जियां :- टमाटर और शिमला मिर्च यहां की पारंपरिक मूल्यवान सब्जियां हैं।

किसानों के तीन शत्रु :-

मनोविज्ञान के अनुसार शत्रु के स्वभाव को जानकर उसके प्रहारों से बचने के उपाय करना सरल हो जाता है।

बंदर:- मक्की का सबसे बड़ा शत्रु है। यह अकेले या सामुहिक आक्रमण करता है। इनसे छेड़छाड़ करना खतरे से खाली नहीं है।

सूअर :- यह रात को फसल या जमीन को पाट देता है। अर्बी का सबसे बड़ा शत्रु है। लोक विश्वासानुसार इसकी टक्कर से बचना चाहिए।

सांप :- यह कीड़े -मकोड़ों की टोह में ईटों, पत्थरों या घास के ढेर में छिपा रहता है। अंधेरे स्थानों और भंडार घरों में भी रहता है। बरसात में जालीदार घरों में निवास करके वहां अगरबत्ती की सुगंध फैलाते रहना चाहिए।

अन्य सुरक्षा :- घरेलु गैस की गंध आते ही सावधान हो जाना चाहिए। जब तक प्रणाली से गैस की गंध दूर न हो तब तक ऐसे सिलेंडर को रसोई से दूर बाहर कर देना चाहिए।

बीजेश्वर महादेव विशुद्ध शाकाहारी देवता हैं।

क्षेत्रीय जीवन प्रबंधन

1. प्रलोभन और डर से बचें।
2. भगवदर्थ काम के लिए कभी विलंब नहीं होता।
3. भगवदर्थ काम करने वाले को समय की कमी आड़े नहीं आती।
4. भगवदर्थ का मतलब है सर्वजीवहिताय।
5. बीजेश्वर क्षेत्र जिला सोलन के पास एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है।
6. जिस मिट्टी में जो वस्तु पैदा होती है, उसमें वही पैदा करनी चाहिए।
7. सोलन के विद्वान कर्मकांडी राजा दुर्गा सिंह की स्मृति में सोलन में एक कर्मकांड विश्वविद्यालय खोला जाना चाहिए।
8. हमें तत्कालीन अंग्रेज इंजीनियरों को भी हतप्रभ करने वाले भल्कु जमादार की सर्वेक्षण पद्धति की खोज करके लोगों में विशुद्ध भारतीय वैज्ञानिक स्वाभिमान को जगाना चाहिए।
9. घर में जल-बिजली आदि किसी भी वस्तु का दुरुपयोग राष्ट्रीय संपत्ति का दुरुपयोग है।
10. बिना शौचालय का मकान पूजनीय पृथिवी माता का अपमान है।
11. मुंह देखकर आदमी की तथा बावड़ी देखकर गांव की पहचान होती है।
12. कन्या भ्रूण या स्त्री का आदर सुख-समृद्धि को न्योता है।
13. प्राकृतिक सौंदर्य परमात्मा का रूप है।
14. जब अंधेरा अधिक गहराता है तो सबेरा नजदीक होता है।

जो सत्य किसी को हानि पहुंचाए वह सत्य नहीं है।

वेदाध्यापक पं0 श्री रविदत्त

समगोत्र विवाह असांस्कृतिक

दैनिक भास्कर

हिंदू मैरिज एक्ट में संशोधन की मांग

भास्कर न्यूज़ | जींद

कानून जनता के सभी वर्गों की भलाई के लिए होते हैं। अगर कानून ही समाज को बिगाड़ने वालों की सुरक्षा करेगा तो देश में लोकतंत्र नहीं बचेगा और देश की सभ्यता-संस्कृति भी खो जाएगी। यह कहना है पतंजलि योग समिति जिला ग्रामीण अध्यक्ष जसमेर सिंह का। उन्होंने रविवार को एक बयान में कहा कि हरियाणा ही नहीं पूरे देश में सदियों से समगोत्र में युवक-युवतियों के बीच भाई-बहन के रिश्ते चले आ रहे हैं। एक गांव और समगोत्र में शादी सामाजिक ढांचे को तोड़ने की घटनाएं है और कानून उन्हें सुरक्षा मुहैया करवाकर सामाजिक तानेबाने को तोड़ रहा है। जो लोग सामाजिक परंपराओं को बचाने में लगे हैं और संघर्ष कर रहे हैं, राजनेता उस पर चुप्पी साधकर कानून बदलने की आवाज नहीं उठा रहे हैं। कानून युवाओं को सुरक्षा देकर उन्हें पथभ्रष्ट कर रहा है। इसके चलते हिंदू विवाह अधिनियम में बदलाव होना आज समय की मांग है। जसमेर ने कहा कि अरस्तु ने भी कहा है कि अगर किसी देश को खत्म करना है तो उसकी संस्कृति को खत्म कर दो।

नीचे :- शिरीष भोज से सम्बंधित एक पुराना दस्तावेज
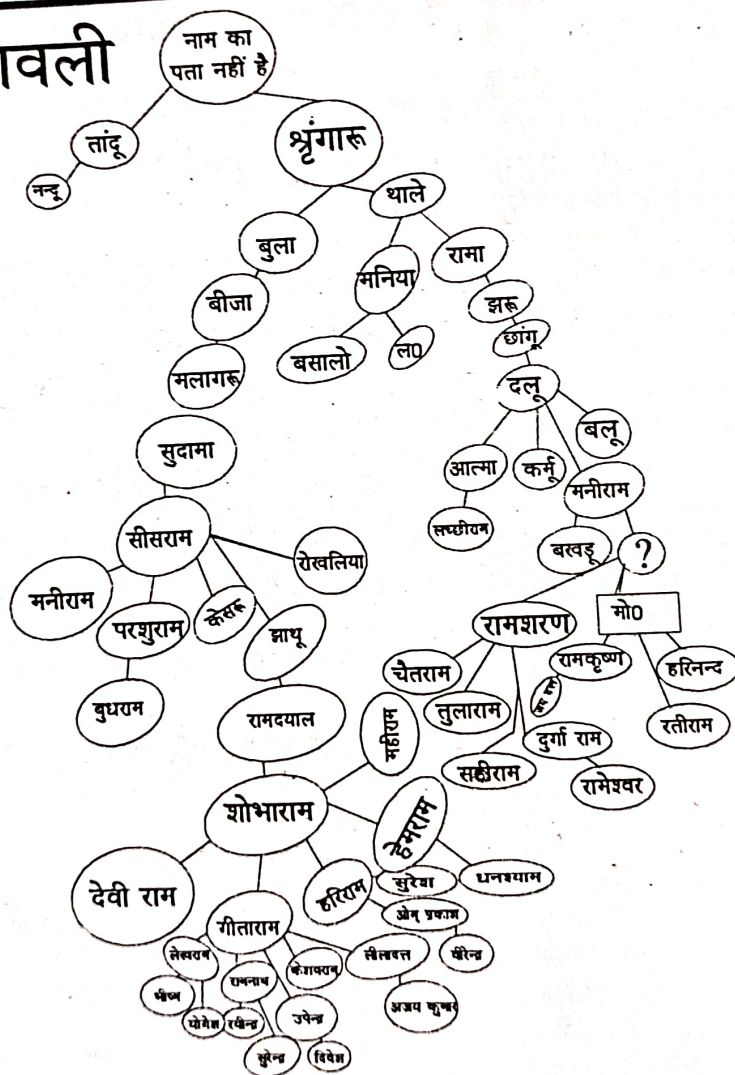
ऊपर : शिरीषियों की एक आंशिक वंशावली

******

लेखक परिचय

नाम	:	लेखराम शर्मा
जन्मतिथि	:	19 – 2 – 1950
शिक्षा	:	दर्शनाचार्य, एम.ए. (सं. व हिं.) पीएच.डी. (पातंजल योग दर्शन)
पूर्व व्यवसाय	:	प्राचार्य, रा. सं. म. वि. सोलन
वर्तमान कार्य	:	जैविक कृषि, वनौषधि – उत्पाादन प्रा. चिकित्सा, लेखन
जीवनादर्श	:	स्वभावनियतं कर्म अर्थात् अपना स्वभाव जन्य काम करना।
सदस्यता	:	उपाध्यक्ष सोलन ब्राह्मण सभा, सदस्य अखिल भारतीय आयुर्वेद सेवा संघ तथा अन्य संस्थाएं।
वर्तमान पता	:	गांव धाला, डा. देवठी (सपरून), तह. जिला सोलन (हि.प्र.) पिन – 173211
फोन	:	88943 – 48752 अथवा 243950

जहां – जहां बीजेश्वर विराजमान हैं वहां – वहां धर्म (सत्य या न्याय) की विजय होती है।

गायत्री माता मन्दिर (धाला)

Charlie Cards Gallery, Opp. Girls School, The Mall, Solan(H.P.) Cell : 98160-83667